RISALATUL MUZAKARA (ACHHE BURE AMAL) - HINDI

हुसूले तक़वा और त़लबे आख़िरत का जज़्बा बढ़ाने वाली एक तह़रीर

رِسَالَةُ الْمُذَاكَرَة

مَعَ الاِخْوَانِ الْمُحِبِّيْنَ مِنْ اَهْلِ الْخَيْرِ وَالدِّيْن

तर्जमा ब नाम

अच्छे बुरे अ़मल

-: मुअल्लिफ़ :-

शैख़ुल इस्लाम इमाम अ़ब्दुल्लाह बिन अ़लवी ह़द्दाद ह़ज़्रमी शाफ़ेई عليه رحمة الله الكافي

(अल मुतवफ़्फ़ा 1132 हि.)

مکتبۃ المدینہ (دعوتِ اسلامی)
SC 1286

المدینۃ العلمیۃ (دعوتِ اسلامی)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ़

अ़र्ज़ : *शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी* دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या **इस्लामी सबक़** पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई **दुआ़** पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे **याद रहेगा।** दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : *ऐ* **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ *! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।*

(الْمُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکربیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** सब से ज़ियादा **ह़सरत** क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में **इ़ल्म ह़ासिल** करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने **इ़ल्म ह़ासिल किया** और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस **इ़ल्म** पर अ़मल न किया)

(تاریخ دمشق لابن عساکر، ج ۵۱ ص ۱۳۸ دار الفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

*किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़्ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।*

www.dawateislami.net

मजलिसे तराजिम (हिन्दी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी की मजलिस "अल मदीनतुल इल्मिय्या" ने येह किताब "अच्छे बुरे अ़मल" उर्दू ज़बान में पेश की है और मजलिसे तराजिम ने इस किताब का हिन्दी रस्मुल ख़त़ करने की सआ़दत ह़ासिल की है [भासांतर (Translation) नहीं बल्कि सिर्फ़ लीपियांतर (Transliteration) या'नी बोली तो उर्दू ही है जब कि लीपि (लिखाई) हिन्दी की गई है] और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस किताब में अगर किसी जगह ग़लत़ी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए Sms, Email या WhatsApp ब शुमूल सफ़्ह़ा व सत़्र नम्बर) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाबे आख़िरत कमाइये।

मदनी इल्तिजा : इस्लामी बहनें डायरेक्ट राबित़ा न फ़रमाएं।...

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, नागर वाड़ा, बरोडा, गुजरात (अल हिन्द) ☎ 9327776311
Email : translation.baroda@dawateislami.net

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ा = ئ	ु = ؤ	आ = آ	य = ی	ह = ہ	व = و	न = ن

www.dawateislami.net

हुसूले तक़्वा और त़लबे आख़िरत का जज़्बा बढ़ाने वाली एक तह़रीर

رِسَالَةُ الْمُذَاكَرَة

مع الاخوان المحبين من اهل الخير والدين

तर्जमा बनाम

अच्छे बुरे अ़मल

: मुअल्लिफ़ :

शैखुल इस्लाम इमाम अ़ब्दुल्लाह बिन अ़लवी ह़द्दाद ह़ज़्रमी शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی

(अल मुतवफ़्फ़ा 1132 हि.)

: पेशकश :

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

: मुतर्जिमीन :

मदनी उ़लमा (शो'बए तराजिमे कुतुब)

: नाशिर :

मक्तबतुल मदीना, अह़मदआबाद

www.dawateislami.net

الصلوۃ والسلام علیک یارسول اللہ   وعلی الک واصحابک یا حبیب اللہ

नाम किताब : रिसालतुल मुज़ाकरा

तर्जमा बनाम : अच्छे बुरे अ़मल

मुअल्लिफ़ : शैख़ुल इस्लाम इमाम अ़ब्दुल्लाह बिन अ़लवी ह़द्दाद शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى

मुतर्जिमीन : मदनी उ़लमा (शो'बए तराजिमे कुतुब)

सिने त़बाअ़त : रबीउ़ल आख़िर, सि.1434 हि.

क़ीमत :

तस्दीक़ नामा

तारीख़ : 6 ज़ुल ह़िज्जतुल ह़राम 1430 हि.   ह़वाला नम्बर : 165

الحمد للّٰہ رب العٰلمین و الصلوٰۃ و السلام علٰی سید المرسلین وعلی الہ واصحا بہ اجمعین

तस्दीक़ की जाती है कि किताब **"रिसालतुल मुज़ाकरा"** के तर्जमा **"अच्छे बुरे अ़मल"** (मत़बूआ़ मक्तबतुल मदीना) पर मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़्रे सानी की कोशिश की गई है। मजलिस ने इसे मत़ालिबो मफ़ाहिम के ए'तिबार से मक़्दूर भर मुलाह़ज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़लत़ियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं।

मजलिस तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल (दा'वते इस्लामी)

24112009

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं है।

www.dawateislami.net

याद दाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी ।

उ़नवान	सफ़ह़ा	उ़नवान	सफ़ह़ा

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस्त

मज़ामीन	नम्बर शुमार	मज़ामीन	नम्बर शुमार
इस किताब को पढ़ने की निय्यतें	6	**बाब नम्बर 1 : तक़वा के मआ़नी**	25
अल मदीनतुल इल्मिय्या का तआ़रुफ़	7	**बाब नम्बर 2 : जज़ा व सज़ा का बयान**	26
पहले इसे पढ़ लीजिये	9	जज़ा व सज़ा के बारे में क़ुरआनी इरशादात	26
तआ़रुफ़े मुसन्निफ़	12	जज़ा व सज़ा से मुतअ़ल्लिक़ नबवी फ़रामीन और अक़्वाले सालिहीन	28
आग़ाज़े सुख़न	16	नेकी पुरानी नहीं होती	29
तक़वा के बारे में क़ुरआनी आयात	18	जो भलाई पाए वोह मेरी ह़म्द बजा लाए	29
हुक्मे इलाही व ताकीदे इलाही	18	मुर्दों को बुरा मत कहो	29
तक़वा के 8 फ़ज़ाइल व फ़वाइद	19	ग़ुलाम आक़ा से बढ़ गया	30
﴿1﴾.....तंगदस्ती से नजात	19	फ़रमाने मुश्किल कुशा	31
﴿2﴾.....हिदायत	19	अच्छी निय्यतों का बदला	31
﴿3﴾.....इल्म	20	**बाब नम्बर 3 : रिज़ा व नाराज़ी, वा'दा व वईद का बयान**	32
﴿4﴾.....मग़फ़िरत	20	जन्नत और मग़फ़िरत की त़रफ़ जल्दी करो	32
﴿5﴾.....विलायत	20	**बाब नम्बर 4 : इबादत गुज़ारों और इत़ाअ़त शिआ़रों पर इन्आ़मो इकराम का बयान**	33
﴿6﴾.....क़ुर्बे इलाही	21		
﴿7﴾.....जहन्नम से नजात	21	फ़रामीने बारी तआ़ला	33
﴿8﴾.....जन्नत का वा'दा	21	अह़ादीसे मुबारका व अक़्वाले सालिहीन	35
तक़वा के मुतअ़ल्लिक़ अह़ादीस व आसार	22	वलियुल्लाह की शान	35
जहां रहो, रब عَزَّوَجَلَّ से डरो	22	ह़दीस की वज़ाह़त	35
नसीह़ते मुस्त़फ़ा	22	रह़मते इलाही के जल्वे	36
दुआ़ए मुस्त़फ़ा	23	ह़दीस की वज़ाह़त	36
फ़ज़ीलत का दारो मदार	23	जन्नती ने'मतें	37
तक़वा का अ़मल पर असर	24	दुन्या को हुक्मे रब्बानी	37
मर कर भी ज़िन्दा	25	त़लबगाराने आख़िरत के ख़ादिम	38

www.dawateislami.net

बाब नम्बर 5 : गुनाहों की हलाकत ख़ेज़ियां	40	**बाब नम्बर 10 : तीसरी रुकावट और इस का ह़ल**	51
कुरआने पाक में बयान की गई सज़ाएं	40	लम्बी उम्मीदों की मज़म्मत	51
अह़ादीस में बयान कर्दा सज़ाएं	40	हलाकत की वज्ह	51
ईमान की कमज़ोरी	40	शक़ावत व बद बख़्ती	51
दिल की सियाही	41	लम्बी उम्मीदों से पनाह	51
दिल की सख़्ती	41	फ़िक्रे आख़िरत न होने का एक सबब	52
रिज़्क़ में तंगी	41	बुरे आ'माल का सबब	52
सब से पहला ना फ़रमान	42	तूले अमल की वज्ह से जनम लेने वाली ख़राबियां	52
इ़ज़्ज़त और ज़िल्लत	42	दुन्या की मह़ब्बत	53
दिल मुर्दा हो जाता है	42	आ'माले ख़ैर में टाल मटोल करना	53
इबादत की लज़्ज़त से महरूम	43	तूले अमल का इलाज	54
कुफ़्र के क़ासिद	43	इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى का फ़रमाने आ़ली	55
ख़ुलासए कलाम	43	**बाब नम्बर 11 : चौथी रुकावट और इस का ह़ल**	56
बाब नम्बर 6 : इबादतो इताअ़त का बयान	44	ह़लाल की बरकत और ह़राम की नुहूसत	56
कामिल मोमिन की एक निशानी	44	पेट का कुफ़्ले मदीना लगाइये	57
दर्से ह़दीस	44	**बाब नम्बर 12 : इख़्लास का बयान**	58
अ़मले मक़्बूल कम नहीं होता	45	इख़्लास की ता'रीफ़	59
बाब नम्बर 7 : इबादत की रुकावटें और इन का ह़ल	46	**बाब नम्बर 13 : रियाकारी**	59
बाब नम्बर 8 : पहली रुकावट और इस का ह़ल	47	शिर्के असग़र	59
दुन्या मलऊ़न है	47	रियाकार क़ारी, शहीद और सख़ी का अन्जाम	60
जहालत की तख़्लीक़ का वाक़िआ़	47	रिया की ता'रीफ़	60
जहालत भी दुश्मन है	48	रिया का इलाज	60
इस रुकावट का ह़ल	48	**बाब नम्बर 14 : ख़ुद पसन्दी**	61
कितने इ़ल्म की ज़रूरत है ?	49	ख़ुद पसन्दी की आफ़त	61
बाब नम्बर 9 : दूसरी रुकावट और इस का ह़ल	49	हलाक करने वाली चीज़ें	61
ईमान को तक़विय्यत बख़्शने वाले उमूर	50	ख़ुद पसन्दी की ता'रीफ़	61

www.dawateislami.net

बाब नम्बर 15 : दुन्या की मह़ब्बत	62	दुन्या में मालदार आख़िरत में कंगाल	76
बुराइयों की जड़	62	तिहामा पहाड़ के बराबर नेकियां	76
इस उम्मत का बछड़ा	63	मेरी और दुन्या की मिसाल	77
ह़दीस की तशरीह़	64	गोया पूरी दुन्या मिल गई	78
ख़ातिमे की तमहीद	64	अच्छी निय्यत का फल	78
दुन्या के तीन ह़िस्से	64	दुन्या में ऐसे रहो	79
वज़ाह़त	64	हर दिल अ़ज़ीज़ बनने का नुस्ख़ा	79
दुन्यादार, दुन्या के साथ जहन्नम में	65	दुन्या की आफ़ात	79
त़लबगाराने दुन्या की अक़्साम	65	दुन्या की मह़ब्बत का वबाल	79
ख़ातिमा	69	दुन्या व आख़िरत के त़लबगार	80
इरशादाते ख़ुदावन्दी	69	ख़ुश बख़्त और बद बख़्त	80
फ़रामीने मुस्त़फ़ा	72	दुन्या के त़ालिब का अन्जाम	81
दुन्या की ह़ैसिय्यत	72	दिलो जिस्म की राह़त	81
दुन्या मुर्दार है	72	नूर जब दिल में दाख़िल होता है	81
दुन्या ग़लाज़त की त़रह़ है	73	**ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को वह़्य**	81
दुन्या व आख़िरत की मिसाल	73	**ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَيْهِ السَّلَام को वह़्य**	82
क़ियामत की ह़सरत	73	**ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام को वह़्य**	82
दुश्वार गुज़ार घाटी	73	मुनाजात की लज़्ज़त से मह़रूमी	82
दुन्या और औ़रतों से बचो	74	ऐ दुन्या कड़वी हो जा	83
दुन्या की ज़ेबो ज़ीनत का ख़ौफ़	74	**सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ के अक़्वाल**	83
दुन्या जादूगर है	75	दो सोकनें	83
काफ़िर की जन्नत	75	दुन्या में छे चीज़ें हैं	83
मोमिन को दुन्या से दूर रखा जाता है	75	ज़ाहिदीन के लिये ख़ुश ख़बरी	84
ह़ुब्बे दुन्या का गुनाह	75	दुन्या ख़सीस है	85
बाक़ी को फ़ानी पर तरजीह़ दो	76	**सय्यिदुना ह़सन बसरी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ के अक़्वाल**	86
दुन्या की कड़वाहट, आख़िरत की मिठास	76	मौत ने दुन्या को रुस्वा कर दिया	86

www.dawateislami.net

दुन्यावी मश्ग़ूलिय्यत से बचो	86	मैं फिर भी दुन्या से बचूंगा	96
आदमी मिस्कीन है	86	**सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं**	96
दुन्या इमाम बाक़िर رضی اللہ عنہ की नज़र में	87	जो दुन्या मांगता है	97
जन्नत में पहले दाख़िल होने वाले	88	दुन्या को तीन त़लाक़ें	98
ज़मीन बोलने लगी	88	ह़लाल का ह़िसाब और ह़राम पर अ़ज़ाब है	98
सय्यिदुना अबू ह़ाज़िम رضی اللہ عنہ के अक़्वाल	88	दोस्त नुमा दुश्मन	99
दुन्या की ना पाएदारी	88	**सय्यिदुना यह़या बिन मुआ़ज़ رضی اللہ عنہ के अक़्वाल**	99
दुन्या ग़म का घर है	88	दुन्या को इ़ब्रत की निगाह से देखो	99
फ़ाजिर दुन्या की हर चीज़ में सबक़त ले गए	89	शैत़ान की दुकान	100
दुन्या से दूरी बड़ी ने'मत है	89	दुन्या की क़ीमत	101
ख़्वाब और आरज़ूएं	90	दो दरवाज़ों वाला मकान	101
सय्यिदुना लुक़्मान رضی اللہ عنہ के इरशादात	90	वीरान और आबाद दिल	101
बेटे को नसीह़त	91	दुन्या और आख़िरत किस के लिये है ?	102
सय्यिदुना मालिक बिन दीनार رضی اللہ عنہ के अक़्वाल	91	दुन्यादारों का ह़ाल	102
जिस्म और दिल	91	दुन्या दुश्मन है	103
दुन्या मेरे घर में दाख़िल न फ़रमा	91	दुन्या की दुश्मनी का मत़लब	103
दुन्या का उम्मीदवार	92	ह़ासिले कलाम	104
कलिमए त़य्यिबा, ह़िफ़ाज़त करता है	93	**फ़रामीने सय्यिदुना ईसा**	105
दुन्या को मुझ से रोक दे	93	दुन्या एक पुल है	105
दीन बचता है न दुन्या	94	सब से बड़ी नेकी	105
सय्यिदुना दावूद त़ाई رضی اللہ عنہ के अक़्वाल	94	आग और पानी	106
आख़िरत के ह़ुसूल की कोशिश कर	94	एक सच्चा वा'दा	106
अभी अभी क़ैद से आज़ाद हुवा हूं	95	दुन्या को आक़ा न बनाओ	106
सय्यिदुना फ़ुज़ैल رضی اللہ عنہ के अक़्वाल	95	मुझ से बढ़ कर कोई मालदार नहीं	106
भलाई व बुराई की चाबी	95	त़अ़ज्जुब है उस शख़्स पर	107
दुन्या ठीकरी और आख़िरत सोना है	95	ख़शिय्यते इलाही और जन्नत की मह़ब्बत	107

www.dawateislami.net

दुन्या को मुंह के बल गिरा दिया	107	दुन्या के शोहर	110
पानी पर चलने की वज्ह	108	दुन्या से किनारा कशी अफ़्ज़ल इ़बादत है	111
इब्लीस को पथ्थर मारा	108	औलियाए किराम رحمۃ اللہ علیہم का मुख़्तसर तआ़रुफ़	111
हज़ार हूरों से निकाह़	108	**इख़्तितामी कलिमात**	112
सारी दुन्या भी किफ़ायत न करे	109	माख़ज़ो मराजेअ़	114
तंगी और धोके का घर	110	**अल मदीनतुल इल्मिय्या** की कुतुब का तआ़रुफ़	116
अ़मल ही काम आएगा	110	★★★★★	★

❁❁❁❁❁❁❁

.....नेकियों का ज़ख़ीरा.....

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

अल्लाह व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की ख़ुशनूदी के हुसूल और बा किरदार मुसलमान बनने के लिये **"दा'वते इस्लामी"** के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** से **"मदनी इन्आ़मात"** नामी रिसाला ह़ासिल कर के इस के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने की कोशिश कीजिये। और अपने अपने शहरों में होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पाबन्दिये वक़्त के साथ शिर्कत फ़रमा कर ख़ूब ख़ूब सुन्नतों की बहारें लूटिये। दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये बे शुमार **मदनी क़ाफ़िले** शहर ब शहर, गाऊं ब गाऊं सफ़र करते रहते हैं, आप भी सुन्नतों भरा सफ़र इख़्तियार फ़रमा कर अपनी आख़िरत के लिये **"नेकियों का ज़ख़ीरा"** इकठ्ठा करें। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ आप अपनी ज़िन्दगी में ह़ैरत अंगेज़ त़ौर पर **"मदनी इन्क़िलाब"** बरपा होता देखेंगे।

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

"बुरे अ़मल से बचो" के 11 हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की "11 निय्यतें"

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم :

"نِیَّۃُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِہٖ या'नी मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।"

(المعجم الکبیر للطبرانی، الحدیث:٥٩٤٢، ج٦، ص١٨٥)

दो मदनी फूल :

﴾1﴿ बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

﴾2﴿ जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

﴾1﴿ हर बार ह़म्द व ﴾2﴿ सलात और ﴾3﴿ तअ़व्वुज़ व ﴾4﴿ तस्मिया से आग़ाज़ करूंगा (इसी सफ़्ह़े पर ऊपर दी हुई दो अ़रबी इ़बारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा) ﴾5﴿ रिज़ाए इलाही के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ालआ़ करूंगा। ﴾6﴿ ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और क़िब्ला रू मुत़ालआ़ करूंगा। ﴾7﴿ जहां जहां "**अल्लाह**" का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और ﴾8﴿ जहां जहां "**सरकार**" का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा। ﴾9﴿ दूसरों को **येह किताब** पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा। ﴾10﴿ इस ह़दीसे पाक "تَهَادَوْا تَحَابُّوْا" एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी। (مؤطا امام مالك، ج٢، ص٤٠٧، الحديث:١٧٣١) पर अ़मल की निय्यत से (एक या ह़स्बे तौफ़ीक़) येह किताब ख़रीद कर दूसरों को तोह़फ़तन दूंगा। ﴾11﴿ किताबत वग़ैरा में शरई ग़लत़ी मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्त़लअ़ करूंगा। (मुसन्निफ़ या नाशिरीन वग़ैरा को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

अज़ : *शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल* ***मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी*** *रज़वी ज़ियाई* دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى اِحْسَانِهٖ وَبِفَضْلِ رَسُوْلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **"दा'वते इस्लामी"** नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और **इशाअ़ते इल्मे शरीअ़त** को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब ह़ुस्ने ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये **मुतअ़द्दिद मजालिस** का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस **"अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या"** भी है जो **दा'वते इस्लामी** के **उ़लमा व मुफ़्तियाने किराम** كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है । इस के मुन्दरिजए ज़ैल **छे शो'बे** हैं :

﴾1﴿ शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत
﴾2﴿ शो'बए दर्सी कुतुब
﴾3﴿ शो'बए इस्लाही कुतुब
﴾4﴿ शो'बए तराजिमे कुतुब
﴾5﴿ शो'बए तफ़्तीशे कुतुब
﴾6﴿ शो'बए तख़रीज

"अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या" की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शमए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी अश्शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को

www.dawateislami.net

अ़सरे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सह्ल उस्लूब में पेश करना है। तमाम **इस्लामी भाई** और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती **मदनी काम** में हर मुमकिन तआ़वुन फ़रमाएं और **मजलिस** की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ालआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **"दा'वते इस्लामी"** की तमाम मजालिस ब शुमूल **"अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या"** को **दिन ग्यारहवीं** और **रात बारहवीं** तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर **दोनों जहां की भलाई** का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और **जन्नतुल फ़िरदौस** में **जगह** नसीब फ़रमाए ।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

रमज़ानुल मुबारक 1425 हि.

www.dawateislami.net

पहले इसे पढ़ लीजिये !

इस ह़क़ीक़त से कोई इन्कार नहीं कर सकता कि इन्सान एक मुसाफ़िर है जो अपनी उख़रवी मन्ज़िल की त़रफ़ अय्यामे ज़ीस्त की सुवारी पर सुवार है । त़बए़ इन्सानी के मुख़्तलिफ़ होने की बिना पर मुसाफ़िरों का येह क़ाफ़िला मुख़्तलिफ़ अहदाफ़ो अ़ज़ाइम ले कर सूए मन्ज़िल रवां दवां है । कोई रास्ते की रंगीनियों में खो गया और कोई राह के पेचो ख़म से बे ख़बर अपनी मन्ज़िल पर नज़र गाड़े वारफ़्तगी के **आ़लम** में सूए मन्ज़िल गामज़न है । मुसाफ़िरों ने त़रह़ त़रह़ का ज़ादे राह इकट्ठा कर रखा है, किसी का ज़ादे राह मालो दौलत, सोना-चांदी, हीरे-जवाहिरात है तो किसी ने अपनी औलाद को ही ज़ादे राह समझ रखा है । येह मुसाफ़िर अपने भरे हुवे दामन के बा वुजूद तही दामां (या'नी ख़ाली दामन) हैं क्यूंकि जो ज़ादे राह इन्हों ने इकट्ठा किया है येह मन्ज़िल से कोसों दूर ख़त्म हो जाएगा और येह नादान मुसाफ़िर ख़ाइबो ख़ासिर हो कर अपने आक़ा व मौला جَلَّ جَلَالُہٗ के हुज़ूर ह़ाज़िर होगा जब कि इस के बर अ़क्स वोह मुसाफ़िर कि जिस ने न तो मालो दौलत की त़रफ़ नज़र की और न ही अपनी औलाद पर तक्या किया बल्कि अपने मालिके ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ की रह़मत पर भरोसा करते हुवे तक़्वा को अपना मताए़ कारवां बना कर रख़्ते सफ़र बांधा तो इस से ज़ियादा उस की मन्ज़िल उस की मुश्ताक़ रहती और उस के इस्तिक़्बाल के लिये तेज़ी से आगे बढ़ती है ।

ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "لَازَادَالَّاالتَّقْوٰی" या'नी सफ़रे आख़िरत के लिये तक़्वा के इ़लावा कोई ज़ादे राह (या'नी सामाने सफ़र) नहीं ।"[1]

तक़्वा का हुसूल इस के मबादी (या'नी इब्तिदाई बातों) पर मौक़ूफ़ है क्यूंकि अगर मबादी को इख़्तियार न किया जाए तो कामिल

1 ....الرسالة القشرية،باب التقوى،ص ١٤٢ .

www.dawateislami.net

तौ़र पर इस का हुसूल ना मुमकिन है। दुन्या से बे रग़बती, ह़सद, ग़ीबत, चुग़ली, कीना वग़ैरा तमाम बात़िनी अमराज़ से ख़ुद को बचाना और दिल को आसूदगी, दूसरों की ख़ैर ख़्वाही, ख़न्दा पेशानी और सख़ावत वग़ैरा से मुरस्सअ़ो मुसज्जअ़ करना तक़्वा की मन्ज़िल तक रसाई के इब्तिदाई ज़ीने हैं। जो इन ज़ीनों पर इस्तिक़ामत से क़दम जमाता रहता है वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नुसरतो मदद से बिल आख़िर तक़्वा का जौहर ह़ासिल करने में कामयाब हो जाता है।

ज़ेरे नज़र रिसाला "**अच्छे बुरे अ़मल**" शैख़ुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ब्दुल्लाह बिन अ़लवी ह़द्दाद ह़ज़्मी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِي (मुतवफ़्फ़ा 1132 हि.) के मुबारक रिसाले "رِسَالَةُ الْمُذَاكَرَةِ مَعَ الاِخْوَانِ الْمُحِبِّيْن مِنْ اَهْلِ الْخَيْرِ وَالدِّيْن" (مطبوعہ:دارُ الحاوی،۱٤۱۸ھ/۱۹۹۸ء الطبعۃ الثانیۃ) का उर्दू तर्जमा है जिस में तक़्वा को अपनाने और बुरी ख़स्लतों से इजतिनाब करने की तरग़ीब दिलाई गई है और दुन्या की बे सबाती और आख़िरत के दवाम को वाज़ेह़ किया गया है। हुसूले तक़्वा, दुन्या से बे रग़बती, त़लबे आख़िरत, **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़तो फ़रमां बरदारी पर इस्तिक़ामत पाने और "**अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश**" का मुक़द्दस जज़्बा उजागर करने के लिये ख़ुद भी इस रिसाले का मुत़ालआ़ कीजिये और ह़स्बे इस्तित़ाअ़त मक्तबतुल मदीना से हदिय्यतन ह़ासिल कर के दूसरों को बत़ौरे तोह़फ़ा पेश कीजिये। इस तर्जमे में जो भी ख़ूबियां हैं वोह यक़ीनन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़त़ाओं, औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की इनायतों और शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

www.dawateislami.net

की पुर ख़ुलूस दुआ़ओं का नतीजा है और जो ख़ामियां हैं उन में हमारी कोताह फ़ह्मी का दख़्ल है।

तर्जमा करते हुवे दर्जे ज़ैल उमूर का ख़ुसूसी त़ौर पर ख़याल रखा गया है :

❁..... सलीस और बा मुह़ावरा तर्जमा किया गया है ताकि कम पढ़े लिखे इस्लामी भाई भी समझ सकें।

❁..... आयाते मुबारका का तर्जमा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अह्ले सुन्नत, शाह इमाम **अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के तर्जमए कुरआन **"कन्ज़ुल ईमान"** से लिया गया है।

❁.....आयाते मुबारका के ह़वाले नीज़ ह़त्तल मक़्दूर अह़ादीसो अक़्वाल वग़ैरा की तख़ारीज का भी एहतिमाम किया गया है।

❁.....बा'ज़ मक़ामात पर मुफ़ीद व ज़रूरी ह़वाशी का इलतिज़ाम किया गया है।

❁.....मुश्किल अल्फ़ाज़ पर ए'राब लगाने की सअ़ी भी की गई है।

❁.....मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआ़नी हिलालैन (.....) में लिखने का एहतिमाम किया गया है।

❁.....अ़लामाते तरक़ीम (रुमूज़े औक़ाफ़) का भी ख़याल रखा गया है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ है कि हमें **"अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश"** करने के लिये **मदनी इन्आ़मात** पर अ़मल और **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और दा'वते इस्लामी की तमाम मजालिस ब शुमूल **मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या** को दिन पच्चीसवीं रात छब्बीसवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए। (آمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم)

शो'बए तराजिमे कुतुब (मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या)

❁❁❁❁❁❁❁

www.dawateislami.net

तआ़रुफ़े मुसन्निफ़

नाम व नसब :

आप का नामे नामी इस्मे गिरामी ह़बीब अ़ब्दुल्लाह बिन अ़लवी बिन मुह़म्मद ह़द्दाद رَحْمَةُ اللّٰهِ الْجَوَاد عَلَيْه है।

विलादते बा सआ़दत :

आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه शुमाली "**ह़ज़्रमौत**" के क़दीम शहर "**तरीम**" के मुज़ाफ़ात में वाक़ेअ़ "**सबीर**" नामी बस्ती में शबे जुमा'रात **5 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1044 हिजरी** को पैदा हुवे।

इल्मी ज़िन्दगी का आग़ाज़ :

आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इब्तिदाई ता'लीम "**तरीम**" में ह़ासिल की। बचपन ही में **नूरे बसारत** (या'नी देखने की क़ुव्वत) से महरूम हो गए थे जिस के बदले में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने "**नूरे बसीरत**" से नवाज़ा। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने सारी ज़िन्दगी अपने ज़माने के नामवर उ़लमाए दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن की ख़िदमत करने और अपनी ज़ात को ज़ेवरे इ़ल्म से आरास्ता करने में गुज़ारी।

असातिज़ए किराम :

आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने जिन उ़लमा से इक्तिसाबे फ़ैज़ किया उन में ह़ज़रते सय्यिदुना ह़बीब उ़मर बिन अ़ब्दुर्रह़मान अ़त्तास, ह़ज़रते सय्यिदुना ह़बीब अ़क़ील बिन अ़ब्दुर्रह़मान सक़ाफ़, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा ह़बीब अ़ब्दुर्रह़मान बिन शैख़ ईदैद, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा

www.dawateislami.net

ह़बीब सह्ल बिन अह़मद और आ़लिमे मक्का ह़ज़रते अ़ल्लामा सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अ़लवी सक़ाफ़ رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی اَجْمَعِیْن वग़ैरा के अस्माए गिरामी मा'रूफ़ हैं।

वा'ज़ो नसीह़त :

अपनी इ़ल्मी व अ़मली तरबिय्यत के बा'द आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने लोगों को वा'ज़ो नसीह़त करने का सिलसिला शुरूअ़ किया। वा'ज़ो नसीह़त को सुन कर लोग जौक़ दर जौक़ आप के पास आने लगे और कुर्बो जवार में भी आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के वा'ज़ो नसीह़त का फ़ैज़ पहुंचना शुरूअ़ हो गया। अमीर व ग़रीब सब ही बराबर मुस्तफ़ीज़ होने लगे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के पुर असर बयानात के ज़रीए़ बे शुमार लोगों को नफ़्अ़ बख़्शा।

तलामिज़ा :

जब आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने तदरीस का आग़ाज़ फ़रमाया तो एक बहुत बड़ी ता'दाद ने आप के वसीअ़ इ़ल्म से वाफ़िर ह़िस्सा पाया। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के अकाबिर तलामिज़ा में से कुछ के नाम येह हैं : आप के शहज़ादे ह़ज़रते सय्यिदुना ह़बीब ह़सन बिन अ़ब्दुल्लाह ह़द्दाद, ह़ज़रते सय्यिदुना ह़बीब अह़मद बिन ज़ैन जैशी, ह़ज़रते सय्यिदुना ह़बीब अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ब्दुल्लाह, ह़ज़रते सय्यिदुना ह़बीब मुह़म्मद बिन ज़ैन बिन समीत़, ह़ज़रते सय्यिदुना ह़बीब उ़मर बिन ज़ैन बिन समीत़, ह़ज़रते सय्यिदुना ह़बीब उ़मर बिन अ़ब्दुर्रह़मान, ह़ज़रते सय्यिदुना ह़बीब अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुर्रह़मान सक़ाफ़, ह़ज़रते सय्यिदुना ह़बीब मुह़म्मद बिन उ़मर बिन त़ाहा सयाफ़ी सक़ाफ़ (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی اَجْمَعِیْن) इन के इ़लावा भी बहुत से लोगों ने आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه से इक्तिसाबे इ़ल्म किया।

www.dawateislami.net

तस्नीफ़े तालीफ़

आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने जब दीने इस्लाम की इशाअ़त के लिये क़लम उठाया तो उस वक़्त आप का पैग़ाम जगह जगह पहुंच चुका था। पस इ़ल्म के प्यासे आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ के वा'ज़ के साथ साथ अब आप की कुतुब से भी सैराब होने लगे। आप ने बे शुमार कुतुब तस्नीफ़ फ़रमाईं। जब आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की नसीह़तों और मवाइ़ज़ को जम्अ़ किया गया तो इन की कसरत की वज्ह से इन्हें यक्जा करने में बड़ी दुश्वारी का सामना करना पड़ा और चूंकि आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की कुतुब को बे पनाह मक़्बूलिय्यत ह़ासिल थी और लोग बड़े शौक़ से इन किताबों से इस्तिफ़ादा करते थे जिस की वज्ह से बा'ज़ किताबों का दूसरी ज़बानों मसलन अंग्रेज़ी और फ़्रान्सीसी वग़ैरा में भी तर्जमा किया गया।

आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की कुतुब किसी तआ़रुफ़ की मोह़ताज नहीं। ता हम हुसूले बरकत के लिये चन्द के नाम ज़िक्र किये जाते हैं :

(1)رِسَالَۃُ الْمُذَاکَرَۃ(2)اَلنَّصَائِحُ الدِّیۡنِیَّۃ (3)اَلدَّعۡوَۃُ التَّامَّۃ(4)رِسَالَۃُالْمُعَاوَنَۃ

इन के इ़लावा दीगर वसाया व रसाइल वग़ैरा शामिल हैं। आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ का मजमूआ़ए कलाम "تَثۡبِیۡتُ الۡفُؤَاد" और दीवान "اَلدُّرُّ الۡمَنۡظُوۡم اَلۡجَامِعُ الۡحِکَم وَالۡعُلُوۡم" और अकसर कुतुब ज़ेवरे त़ब्अ़ से आरास्ता हैं। जिन्हें अ़वामुन्नास में बड़ी मक़्बूलिय्यत ह़ासिल हुई, उ़लमा व अह्ले मा'रिफ़त ने इन को बेह़द पसन्द किया। न सिर्फ़ येह बल्कि इन को रूह़ की ग़िज़ा क़रार दिया और फ़रमाया कि "इन की कुतुब **ह़ुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡوَالِی की ता'लीमात का निचोड़ हैं। लिहाज़ा कोई मुसलमान इन से ग़फ़्लत न बरते। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुसन्निफ़ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की बरकतों से इन की किताबों को लोगों के लिये मज़ीद नाफ़ेअ़ बनाए।" (آمِیۡن بِجَاہِ النَّبِیِّ الۡاَمِیۡن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم)

www.dawateislami.net

सफ़रे ह़ज्ज व ज़ियारते मदीनए मुनव्वरा :

1079 हिजरी आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की ज़िन्दगी का वोह ह़सीन साल था कि जिस में आप ने ह़रमैने शरीफ़ैन (या'नी मक्कए मुकर्रमा व मदीनए मुनव्वरा) زَادَھُمَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا का सफ़र इख़्तियार फ़रमाया। ह़ज की सआ़दत पाई और फिर सय्यिदुल कौनैन, रह़मते दारैन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रौज़ए मुबारका की ज़ियारत का अ़ज़ीम शरफ़ भी ह़ासिल किया। दौराने सफ़र जब आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने उ़लमाए ह़रमैने शरीफ़ैन से मुलाक़ातें कीं तो वोह आप के इ़ल्मी मक़ामो मर्तबे पर रश्क करने लगे और उन्हों ने आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की क़द्रो मन्ज़िलत को पहचान कर बेह़द ता'ज़ीमो तौक़ीर फ़रमाई।

विसाल :

आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ लोगों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मिलाते, इ़ल्मो ह़िक्मत के प्यासों को सैराब करते और इ़ल्मो अ़मल के मोती लुटाते हुवे बरोज़ मंगल 7 **ज़ुल क़ा'दतिल ह़राम 1132 हिजरी** को दुन्याए फ़ानी से रुख़्सत हो गए। ﴿اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّآ اِلَیۡہِ رَاجِعُوۡن﴾

आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ के जसदे ख़ाकी को आप के पैदाइशी शहर "**तरीम**" के क़ब्रिस्तान में सिपुर्दे ख़ाक किया गया।

﴿**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। आमीन﴾

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

आग़ाज़े सुख़न

तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जो तमाम जहानों का पालने वाला है, जिस ने इन्सान को मिट्टी से पैदा किया और उस की नस्ल एक बे क़द्र पानी के ख़ुलासा (या'नी नुत्फ़े) से रखी और ख़सारा पाने वालों में तमाम इन्सानों को बिल उ़मूम बयान फ़रमा कर बाहम ह़क़ व सब्र की तल्क़ीन करने वाले मुसलमानों को उन के ज़ुमरे से निकाला और अह्ले ईमान को नेकी और भलाई के कामों पर एक दूसरे के साथ तआ़वुन करने का हुक्म इरशाद फ़रमाया और उन्हें इस बात की ख़बर दी कि उस की बारगाहे आ़ली में उन में सब से ज़ियादा इ़ज़्ज़त वाला वोह है जो सब से ज़ियादा मुत्तक़ी व परहेज़गार है, वोह परहेज़गारों का वाली व मदद गार है, उस ने जिन्नो इन्स को सिर्फ़ अपनी इबादत के लिये पैदा फ़रमाया है, दुन्या आबाद करने और माल जम्अ़ करने के लिये नहीं बल्कि वोह उन्हें दुन्या के मुआ़मले में अपने रसूले अमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़बाने ह़क़्क़े तर्जुमान से तम्बीह फ़रमा चुका है।

चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मुझे येह वह्य नहीं की गई कि माल जम्अ़ करूं और ताजिरों में से हो रहूं लेकिन मुझे येह वह्य की गई है कि अपने रब की तस्बीह़ बोलो और सजदा करने वालों में हो रहो और अपने रब की इबादत करते रहो यहां तक कि वफ़ात पाओ।"[1]

पस हर शख़्स की सआ़दत मन्दी और कमाल इस में है कि जिन बातों का उसे हुक्म दिया गया है उन की पाबन्दी करे और जिस मक़्सद

1 ...مشکوۃ المصابیح، کتاب الرقاق، الفصل الثالث، الحدیث: ۵۲۰۶، ج۲، ص۲۴۹.

www.dawateislami.net

के लिये उसे पैदा किया गया है मुख़्लिस हो कर ख़ुद को उस के लिये फ़ारिग़ कर ले। नीज़ जिन बातों से मन्अ़ किया गया है उन से बाज़ रहे, घोके बाज़, बे वुक़ूफ़ लोगों के बातिल व लग़्व कामों और नादानों, बेकारों के फ़सादात में न आए।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमारे आक़ा व मौला हुज़ूर सय्यिदुल मुर्सलीन, ख़ातमुन्नबिय्यीन ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर जिन्हें तमाम जहानों के लिये रह़मत बना कर भेजा और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आल व अस्ह़ाब पर और भलाई के साथ उन की पैरवी करने वालों पर ता क़ियामत रह़मत नाज़िल फ़रमाए।

(آمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم)

اَمَّا بَعْد : ख़ैर की बुन्याद ख़ल्वतो जल्वत में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरने पर है। तक़्वा एक ऐसी ख़स्लत है कि जो इसे इख़्तियार कर लेता है दुन्या व आख़िरत की भलाइयां उस में जम्अ़ हो जाती हैं। इस्लाम में उस की अ़ज़मत और उ़लमाए ह़क़्क़ा की नज़र में उस की क़द्रो मन्ज़िलत की वज्ह से वोह अपने ख़ुत़्बों, बयानात और मवाइ़ज़ का आग़ाज़ तक़्वा की नसीह़त से करते हैं। और चूंकि तक़्वा तमाम भलाइयों का मज्मूआ़ है इस लिये ख़ुत़्बे में ज़रूरी नसीह़त करते वक़्त इसी पर इक्तिफ़ा किया जाता है और अकाबिरीन में से किसी से जब कोई नसीह़त का त़लबगार हुवा तो उन्हों ने मह़ज़ तक़्वा की नसीह़त फ़रमाई।

www.dawateislami.net

तक़्वा के बारे में कु़रआनी आयात

हुक्मे इलाही व ताकीदे इलाही :

खुदाए अह़कमुल ह़ाकिमीन جَلَّ جَلَالُہٗ ने अगले पिछले तमाम लोगों को तक़्वा व परहेज़गारी की ताकीद फ़रमाई है और जा बजा इस का आ़म हुक्म भी इरशाद फ़रमाया है। चुनान्चे,

इरशादे बारी तआ़ला है :

﴿1﴾ وَلَقَدۡ وَصَّيۡنَا الَّذِيۡنَ اُوۡتُوا الۡكِتٰبَ مِنۡ قَبۡلِكُمۡ وَ اِيَّاكُمۡ اَنِ اتَّقُوا اللّٰهَ ؕ (پ٥، النسآء:١٣١)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक ताकीद फ़रमा दी है हम ने उन से जो तुम से पहले किताब दिये गए और तुम को कि अल्लाह से डरते रहो।

﴿2﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوۡا رَبَّكُمُ الَّذِىۡ خَلَقَكُمۡ مِّنۡ نَّفۡسٍ وَّاحِدَةٍ (پ٤، النسآء:١)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ लोगो ! अपने रब से डरो जिस ने तुम्हें एक जान से पैदा किया।

﴿3﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَقُوۡلُوۡا قَوۡلًا سَدِيۡدًا ۙ﴿۷۰﴾ (پ٢٢، الاحزاب:٧٠)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! अल्लाह से डरो और सीधी बात कहो।

﴿4﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ (پ٤، ال عمران:١٠٢)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! अल्लाह से डरो जैसा उस से डरने का ह़क़ है।

﴿5﴾ فَاتَّقُوا اللّٰهَ مَا اسۡتَطَعۡتُمۡ (پ٢٨، التغابن:١٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो अल्लाह से डरो जहां तक हो सके।

www.dawateislami.net

﴿6﴾ لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا مَا اٰتٰىهَا ؕ (پ۲۸،الطلاق:۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह किसी जान पर बोझ नहीं रखता मगर उसी क़ाबिल जितना उसे दिया है।

इन के इ़लावा भी कसीर आयात में तक़्वा इख़्तियार करने का हुक्म दिया गया है।

❁❁❁❁❁❁❁

तक़्वा के 8 फ़ज़ाइलो फ़वाइद

ख़ुदाए ह़न्नानो मन्नान عَزَّوَجَلَّ ने अह्ले तक़्वा के लिये जो दीनी व दुन्यवी फ़वाइद रखे हैं उन में से कुछ बयान किये जाते हैं :

﴿1﴾.....तंगदस्ती से नजात :

जो तक़्वा इख़्तियार करता है उसे तंगदस्ती से नजात दी जाती और वहां से रिज़्क़ अ़ता किया जाता है जहां उस का गुमान न हो। चुनान्चे, इरशाद होता है :

وَ مَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ۙ﴿۲﴾ وَّ يَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ؕ (پ۲۸،الطلاق:۲،۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो अल्लाह से डरे अल्लाह उस के लिये नजात की राह निकाल देगा और उसे वहां से रोज़ी देगा जहां उस का गुमान न हो।

﴿2﴾.....हिदायत :

क़ुरआने ह़कीम से मुत्तक़ीन ही हिदायत पाते हैं। चुनान्चे, फ़रमाने बारी तआ़ला है :

ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ ۛۚ فِيْهِ ۛۚ هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ ۙ﴿۲﴾ (پ۱، البقرة:۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोह बुलन्द रुत्बा किताब (क़ुरआन) कोई शक की जगह नहीं इस में हिदायत है डर वालों को।

www.dawateislami.net

﴾3﴿.....इल्म :

मुत्तक़ीन को इल्म से नवाज़ा जाता है। चुनान्चे, इरशादे रब्बुल आ़लमीन عَزَّوَجَلَّ है :

وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَيُعَلِّمُكُمُ اللّٰهُ (پ۳، البقرة:۲۸۲)

*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** से डरो और **अल्लाह** तुम्हें सिखाता है।*

﴾4﴿.....मग़्फ़िरत :

अह्ले तक़्वा को ह़क़ व बातिल के दरमियान फ़र्क़ करने की कुव्वत अ़त़ा की जाती है, उन की ख़त़ाएं मिटा दी जाती और गुनाह बख़्श दिये जाते हैं। चुनान्चे,

ख़ुदाए ग़फ़्फ़ार عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने मग़्फ़िरत निशान है :

اِنْ تَتَّقُوا اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّكُمْ فُرْقَانًا وَّيُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ (پ۹، الانفال:۲۹)

*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अगर **अल्लाह** से डरोगे तो तुम्हें वोह देगा जिस से ह़क़ को बातिल से जुदा कर लो और तुम्हारी बुराइयां उतार देगा और तुम्हें बख़्श देगा।*

इस आयत के हिस्से "يَجْعَلْ لَّكُمْ فُرْقَانًا" की तफ़्सीर बा'ज़ ने येह बयान की, कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अह्ले तक़्वा के दिलों में हिदायत का ऐसा नूर रोशन फ़रमाता है जिस के ज़रीए़ वोह ह़क़ को बातिल से जुदा कर लेते हैं।

﴾5﴿.....विलायत :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुत्तक़ीन को अपनी विलायत अ़त़ा फ़रमाता है। चुनान्चे, इरशाद फ़रमाता है :

وَاللّٰهُ وَلِيُّ الْمُتَّقِيْنَ ﴿۱۹﴾ (پ۲۵، الجاثية۱۹)

*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और डर वालों का दोस्त **अल्लाह**।*

www.dawateislami.net

﴾6﴿......क़ुर्बे इलाही :

मुत्तक़ीन को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब नसीब होता है। चुनान्चे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِیْنَ ﴿۱۹۴﴾ (پ۲، البقرۃ:۱۹۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जान रखो कि अल्लाह डर वालों के साथ है।

यहां मइय्यत से मुराद येह है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन की मदद और हि़फ़ाज़त फ़रमाता है।

﴾7﴿......जहन्नम से नजात :

मुत्तक़ीन के लिये जहन्नम से नजात है। चुनान्चे, ख़ुदाए अरह़मुर्राहि़मीन عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

ثُمَّ نُنَجِّی الَّذِیْنَ اتَّقَوْا (پ۱۶، مریم:۷۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : फिर हम डर वालों को बचा लेंगे।

﴾8﴿......जन्नत का वा'दा :

अहले तक़्वा के लिये जन्नत का वा'दा है। चुनान्चे, अल्लाह रब्बुल आ़लमीन عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴾1﴿ مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِیْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ؕ (پ۲۶، محمد:۱۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अह़वाल उस जन्नत का जिस का वा'दा परहेज़गारों से है।

﴾2﴿ اِنَّ لِلْمُتَّقِیْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتِ النَّعِیْمِ ﴿۳۴﴾ (پ۲۹، القلم:۳۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक डर वालों के लिये उन के रब के पास चैन के बाग़ हैं।

www.dawateislami.net

﴿3﴾ وَاُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِيْنَ غَيْرَ بَعِيْدٍ ﴿٣١﴾ (پ٢٦،ق:٣١)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और पास लाई जाएगी जन्नत परहेज़गारों के कि उन से दूर न होगी।

इन के इ़लावा भी तक़्वा के बे शुमार फ़वाइदो समरात और फ़ज़ाइलो कमालात हैं ताहम इस की अ़ज़मतो शराफ़त के लिये इतनी बात ही काफ़ी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने कुरआने मजीद फ़ुरक़ाने ह़मीद में 90 से ज़ाइद मक़ामात पर इस का ज़िक्र फ़रमाया है।

❁❁❁❁❁❁❁

तक़्वा के मुतअ़ल्लिक़ अह़ादीसो आसार

जहां रहो, रब عَزَّوَجَلَّ से डरो :

﴿1﴾.....सरकारे मदीना, सुल्त़ाने बा क़रीना, साहिबे मुअ़त्त़र पसीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जहां भी हो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरो और गुनाह हो जाए तो इस के बा'द नेकी कर लिया करो कि वोह गुनाह मिटा देगी और लोगों से अच्छा बरताव करो।"(1)

नसीह़ते मुस्त़फ़ा :

﴿2﴾.....हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मैं तुम्हें तक़्वा इख़्तियार करने, ह़ाकिम की बात सुनने और मानने की नसीह़त करता हूं अगर्चे वोह ह़ब्शी ग़ुलाम ही क्यूं न हो।"(2)

﴿3﴾.....हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जहन्नम की आग से बचो अगर्चे खजूर के एक टुकड़े के ज़रीए ही और अगर येह भी न पाओ तो

---

1 ....جامع الترمذی،ابواب البر و الصلة،الحدیث:١٩٩٤،ج٣،ص٢٩٨.

2 ....سنن ابی داؤد،کتاب السنة،باب فی لزوم السنة،الحدیث:٤٦٠٧،ج٤،ص٢٦٧.

www.dawateislami.net

अच्छी बात के ज़रीए़ बचो।"(1)

दुआ़ए मुस्त़फ़ा :

﴾4﴿......अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم (ता'लीमे उम्मत के लिये) इस त़रह़ दुआ़ मांगा करते थे : "اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡ اَسْئَلُکَ الْھُدٰی وَالتُّقٰی وَالْعَفَافَ وَ الْغِنٰی" या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से हिदायत, तक़्वा, पाक दामनी और तवंगरी का सुवाल करता हूं।"(2)

फ़ज़ीलत का दारो मदार :

﴾5﴿......अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "किसी गोरे को किसी काले पर कोई फ़ज़ीलत नहीं और न किसी अ़रबी को किसी अ़जमी पर कोई फ़ज़ीलत है मगर तक़्वा के साथ, तुम सब आदम عَلَیْهِ السَّلَام की औलाद हो और वोह मिट्टी से बनाए गए हैं।"(3)

﴾6﴿......हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में अ़र्ज़ की गई : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! लोगों में सब से ज़ियादा इ़ज़्ज़त वाला कौन है ?" इरशाद फ़रमाया : "जो इन में सब से ज़ियादा मुत्तक़ी व परहेज़गार है।"(4)

---

1 ....صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ، الحدیث:۱۰۱۶، ص۵۰۷.

2 ....صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء......الخ، الحدیث:۲۷۲۱، ص۱۴۵۷.

3 ....المعجم الکبیر، الحدیث:۱۶، ج۱۸، ص۱۳، مفھوماً.

4 ....جامع بیان العلم وفضلہ، باب قولہ ﷺ الناس معادن، الحدیث:۶۵، ص۳۰.

www.dawateislami.net

﴾7﴿.....हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशाद है कि "तुम सिर्फ़ मुत्तक़ी शख़्स का खाना खाओ और तुम्हारा खाना भी मुत्तक़ी ही खाए।"(1)

﴾8﴿.....उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا इरशाद फ़रमाती हैं : "मेरे सरताज, साह़िबे मे'राज صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को सिवाए साह़िबे तक़वा के दुन्या की कोई चीज़ और न कोई शख़्स ख़ुश करता था।"(2)

तक़्वा का अ़मल पर असर :

﴾9﴿.....अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم इरशाद फ़रमाते हैं : "तक़वा की मौजूदगी में किसी क़ौम (के अ़मल) की खेती ख़ुश्क नहीं होती।"(3)

﴾10﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं : तौरैत में लिखा है कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डर और जहां चाहे सो (या'नी ख़ौफ़े ख़ुदा वाले को किसी और का ख़ौफ़ नहीं होता)।"(4)

﴾11﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना आ'मश رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "जिस का सरमाया तक़वा हो ज़बानें उस का नफ़्अ़ बयान नहीं कर सकती।"(5)

---

1 .....اتحاف السادة المتقين، كتاب اسرار الذكوة، الفصل الثانی، ج٤، ص٢٠٩۔
سنن ابی داؤد، كتاب الادب، باب من يؤمران يجالس، الحديث: ٤٨٣١، ج٤ ص٣٤١ مختصراً.

2 .....المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عائشة، الحديث: ٢٤٤٥٧، ج٩، ص٣٤١.

3 .....احياء علوم الدين، كتاب العلم، الباب السادس فی آفات العلم.....الخ، ج١، ص١٠٨.

4 .....الدر المنثور، ج١، پ٢، سورة بقرة، تحت الاية: ١٩٧، ص٥٣٣.

5 .....الرسالة القشرية، باب التقوى، ص١٤٣، قول ابو الحسن زنجانی.

www.dawateislami.net

मर कर भी ज़िन्दा :

﴿12﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर ह़ाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى अकसर येह शे'र पढ़ा करते थे :

مَوْتُ التَّقِيِّ حَيَاةٌ لَا نَفَادَ لَهَا وَقَدْ مَاتَ قَوْمٌ وَهُمْ فِى النَّاسِ اَحْيَاء

तर्जमा : मुत्तक़ी की वफ़ात न ख़त्म होने वाली ज़िन्दगी है और कुछ लोग मर कर भी ज़िन्दा रहते हैं।[1]

तक़्वा व अह्ले तक़्वा के फ़ज़ाइल शुमार से बाहर हैं ताहम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى ने अपनी किताब **"मिन्हाजुल आ़बिदीन"** में तक़्वा से मुतअ़ल्लिक़ तफ़्सीली कलाम फ़रमाया है। हम ने यहां उस का ख़ुलासा बयान कर दिया है।

बाब नम्बर 1 : तक़्वा के मआ़नी

ह़ुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : "क़ुरआने मजीद में तक़्वा का इत़्लाक़ तीन मआ़नी पर किया गया है :

﴿1﴾.....डर और ख़ौफ़ ﴿2﴾.....त़ाअ़तो इबादत ﴿3﴾.....दिल को गुनाहों से पाक रखना। और येह तक़्वा का ह़क़ीक़ी मा'ना है।"[2]

बहर ह़ाल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अह़कामात की बजा आवरी और ममनूआ़त से रू गर्दानी कर के उस की नाराज़ी व अ़ज़ाब से बचने का नाम तक़्वा है। और ह़क़ीक़ी तक़्वा येह है कि तेरा परवर दगार عَزَّوَجَلَّ तुझे वहां न देखे जहां जाने से उस ने तुझे रोका है और उस मक़ाम से ग़ैर ह़ाज़िर न पाए जहां ह़ाज़िर होने का उस ने तुझे हुक्म दिया है। وَالسَّلَام

---

1 .....حلية الاولياء،معروف كرخى،الحديث:١٢٦٨٤،ج٨،ص٤٠٤.

2 .....منهاج العابدين للغزالى،العائق الرابع النفس،ص٥٩.

www.dawateislami.net

बाब नम्बर 2 : जज़ा व सज़ा का बयान

क़ल्बे सलीम और अ़क़्ले मुस्तक़ीम वालों ने जान लिया कि उन्हें उन के किये का बदला दिया जाएगा, जो बोएंगे वोही काटेंगे, जैसा करेंगे वैसा भरेंगे, जो आगे भेजेंगे उसी का सामना करना होगा और वोह क्यूं कर न जानते और यक़ीन रखते ह़ालांकि वोह इसे या'नी क़ुरआनो ह़दीस को सुनते हैं इस पर ईमान रखते और इस की तस्दीक़ करते हैं। और क़ुरआनो ह़दीस से उस शख़्स को क़त़ई यक़ीन ह़ासिल हो जाता है जिस का दिल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने रौशन फ़रमा दिया हो और सीना खोल दिया हो।

जज़ा व सज़ा के बारे में क़ुरआनी इरशादात

(ऐ बन्दे) तू अपने दिल को ह़ाज़िर रख और कान लगा कर सुन ! शायद इस की वज्ह से तुझे ख़्वाबे ग़फ़्लत से बेदारी ह़ासिल हो। अच्छे आ'माल कर ताकि नजात पाए। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿1﴾ يَوْمَ لَا يَنْفَعُ مَالٌ وَّ لَا بَنُوْنَ ﴿۸۸﴾ اِلَّا مَنْ اَتَى اللّٰهَ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ﴿۸۹﴾

(پ۱۹، الشعراء: ۸۸، ۸۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *जिस दिन न माल काम आएगा न बेटे, मगर वोह जो* **अल्लाह** *के हुज़ूर ह़ाज़िर हुवा सलामत दिल ले कर।*

﴿2﴾ وَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِي الْاَرْضِ ۙ لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اَسَآءُوْا بِمَا عَمِلُوْا وَ يَجْزِيَ الَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا بِالْحُسْنٰى ﴿۳۱﴾

(پ۲۷، النجم: ۳۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और* **अल्लाह** *ही का है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में ताकि बुराई करने वालों को उन के किये का बदला दे और नेकी करने वालों को निहायत अच्छा सिला अ़त़ा फ़रमाए।*

www.dawateislami.net

﴿3﴾ وَاَنْ لَّيْسَ لِلْاِنْسَانِ اِلَّا مَا سَعٰى ﴿۳۹﴾ وَاَنَّ سَعْيَهٗ سَوْفَ يُرٰى ﴿۴۰﴾ ثُمَّ يُجْزٰىهُ الْجَزَآءَ الْاَوْفٰى ﴿۴۱﴾ وَاَنَّ اِلٰى رَبِّكَ الْمُنْتَهٰى ﴿۴۲﴾ (پ۲۷، النجم: ۳۹ تا ۴۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और येह कि आदमी न पाएगा मगर अपनी कोशिश और येह कि उस की कोशिश अ़न क़रीब देखी जाएगी फिर उस का भरपूर बदला दिया जाएगा और येह कि बेशक तुम्हारे रब ही की त़रफ़ इन्तिहा है।*

﴿4﴾ لَيْسَ بِاَمَانِيِّكُمْ وَلَاۤ اَمَانِيِّ اَهْلِ الْكِتٰبِ ؕ مَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا يُّجْزَ بِهٖ ۙ وَلَا يَجِدْ لَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿۱۲۳﴾ وَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ مِنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُوْنَ نَقِيْرًا ﴿۱۲۴﴾ (پ۵، النساء: ۱۲۳، ۱۲۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *काम न कुछ तुम्हारे ख़यालों पर है और न किताब वालों की हवस पर जो बुराई करेगा उस का बदला पाएगा और **अल्लाह** के सिवा न कोई अपना ह़िमायती पाएगा न मददगार और जो कुछ भले काम करेगा मर्द हो या औ़रत और हो मुसलमान तो वोह जन्नत में दाख़िल किये जाएंगे और उन्हें तिल भर नुक़्सान न दिया जाएगा।*

﴿5﴾ فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ ۝ وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ ﴿۸﴾ (پ۳۰، الزلزال: ۷، ۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो जो एक ज़र्रा भर भलाई करे उसे देखेगा और जो एक ज़र्रा भर बुराई करे उसे देखेगा।*

﴿6﴾ لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ؕ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ ؕ (پ۳، البقرة ۲۸۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *अल्लाह किसी जान पर बोझ नहीं डालता मगर उस की त़ाक़त भर उस का फ़ाएदा है जो अच्छा कमाया और उस का नुक़्सान है जो बुराई कमाई।*

www.dawateislami.net

﴿7﴾ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهٖ وَ مَنْ اَسَآءَ فَعَلَیْهَا ؕ وَ مَا رَبُّكَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِیْدِ ﴿۴۶﴾ (پ۲۴،حم سجدۃ:۴۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जो नेकी करे वोह अपने भले को और जो बुराई करे अपने बुरे को और तुम्हारा रब बन्दों पर ज़ुल्म नहीं करता ।

﴿8﴾ یَوْمَ تَجِدُ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ مِنْ خَیْرٍ مُّحْضَرًا ۚۖۛ وَّ مَا عَمِلَتْ مِنْ سُوْٓءٍ ۚۛ تَوَدُّ لَوْ اَنَّ بَیْنَهَا وَ بَیْنَهٗۤ اَمَدًۢا بَعِیْدًا ؕ وَ یُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهٗ ؕ وَ اللّٰهُ رَءُوْفٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿۳۰﴾ؒ (پ۳، ال عمران:۳۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जिस दिन हर जान ने जो भला काम किया ह़ाज़िर पाएगी और जो बुरा काम किया उम्मीद करेगी काश मुझ में और उस में दूर का फ़ासिला होता और **अल्लाह** तुम्हें अपने अ़ज़ाब से डराता है और **अल्लाह** बन्दों पर मेहरबान है ।

﴿9﴾ وَ اتَّقُوْا یَوْمًا تُرْجَعُوْنَ فِیْهِ اِلَى اللّٰهِ ۗ ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَ هُمْ لَا یُظْلَمُوْنَ ﴿۲۸۱﴾ؒ (پ۳،البقرۃ:۲۸۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और डरो उस दिन से जिस में **अल्लाह** की त़रफ़ फिरोगे और हर जान को उस की कमाई पूरी भर दी जाएगी और उन पर ज़ुल्म न होगा ।

कहा जाता है कि "येह आयत सब से आख़िर में नाज़िल हुई ।"

जज़ा व सज़ा से मुतअ़ल्लिक़ नबवी फ़रामीन और अक़्वाले सालिह़ीन

﴿1﴾......हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बेशक जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام ने मेरे दिल में येह बात डाली कि जब

www.dawateislami.net

तक ज़िन्दा रहना चाहते हैं रहें बिल आख़िर आप ने रुख़्सत होना है और जिस से महब्बत करना चाहते हैं करें क्यूंकि आप उस से जुदा होने वाले हैं और जो चाहें अ़मल करें आप को उस का बदला दिया जाएगा।"[1]

नेकी पुरानी नहीं होती :

﴾2﴿......सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "नेकी पुरानी नहीं होती, गुनाह भुलाए नहीं जाते और जज़ा देने वाले को कभी मौत नहीं आएगी जैसा करोगे वैसा भरोगे।"[2]

जो भलाई पाए वोह मेरी ह़म्द बजा लाए :

﴾3﴿......ह़दीसे क़ुदसी[3] में है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "ऐ मेरे बन्दो ! येह तुम्हारे आ'माल हैं जिन्हें मैं शुमार कर रहा हूं फिर तुम्हें उन के मुत़ाबिक़ पूरा पूरा बदला दूंगा तो जो भलाई पाए वोह मेरी ह़म्द बजा लाए और जो भलाई के सिवा (गुनाह) पाए वोह अपने आप को मलामत करे।"[4]

मुर्दों को बुरा मत कहो[5] :

﴾4﴿......उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا से मरवी है, हु़ज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم

---

1 ....المعجم الاوسط،الحديث:٤٢٧٨،ج٣،ص١٨٧ .

2 ....الجامع الصغير للسيوطى،الحديث:٣١٩٩،ص١٩٢ .

3 .....**मुफ़स्सिरे शहीर** ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان फ़रमाते हैं : "जिसे हु़ज़ूर ने रब तआ़ला की निस्बत से अपने अल्फ़ाज़ में बयान फ़रमाया उसी को ह़दीसे क़ुदसी कहते हैं।" (मिरआतुल मनाजीह़ जि. 1, स. 180)

4 ....صحيح مسلم، كتاب البر و الصلة،الحديث:٢٥٧٧،ص١٣٩٣،ملتقطاً.

5 ....."**दा'वते इस्लामी**" के इशाअ़ती इदारे "**मक्तबतुल मदीना**" की मत़बूआ़

..................बक़िय्या अगले सफ़ह़े पर

www.dawateislami.net

ने इरशाद फ़रमाया : "अपने मुर्दों को बुरा न कहो क्यूंकि वोह अपने आगे भेजे हुवे आ'माल को पहुंच चुके हैं।"(1)

ग़ुलाम आक़ा से बढ़ गया :

﴾5﴿.....मन्क़ूल है कि एक ग़ुलाम को जन्नत के दरजात में उस के आक़ा से बुलन्द रखा जाएगा तो आक़ा अ़र्ज़ करेगा : "या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! येह

बक़िय्या ह़ाशिया.....

504 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**ग़ीबत की तबाहकारियां**" के सफ़ह़ा **191** पर सय्यिदी शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه "फ़ौतशुदा मुसलमान की बुराई" की मज़म्मत पर एक ह़दीस शरीफ़ नक़्ल करने के बा'द सफ़ह़ा **192** पर फ़रमाते हैं : "**मा'लूम** हुवा फ़ौतशुदा लोगों की बुराई करना भी **ग़ीबत** है। बा'ज़ औक़ात बड़ा सब्र आज़्मा मुआ़मला होता है। मसलन डाकू, दहशत गर्द, अपने अ़ज़ीज़ के क़ातिल वग़ैरा क़त्ल कर दिये जाएं या उन्हें फांसी लगा दी जाए तो बा'ज़ औक़ात लोग **ग़ीबत** के गुनाह में पड़ ही जाते हैं। इसी त़रह़ **ख़ुदकुशी** करने वाले मुसलमान के बारे में बिला इजाज़ते शरई येह कह देना कि "फ़ुलां ने **ख़ुदकुशी** की" येह **ग़ीबत** है यूं ही नाम व पहचान के साथ किसी मुसलमान की **ख़ुदकुशी** की **अख़्बार** में ख़बर भी न लगाई जाए कि इस से मरने वाले की **ग़ीबत** भी होती और इस के साथ साथ मर्ह़ूम के अह्लो इ़याल की इ़ज़्ज़त पर भी बट्टा लगता है। हां, इस अन्दाज़ में तज़्किरा किया कि पढ़ने या सुनने वाले **ख़ुदकुशी** करने वाले को पहचान ही न पाए कि वोह कौन था तो ह़रज नहीं मगर येह ज़ेह्न में रहे कि नाम न लिया मगर गाऊं, मह़ल्ले, बरादरी, औक़ात, **ख़ुदकुशी** का अन्दाज़ वग़ैरा बयान करने से **ख़ुदकुशी** करने वाले की शनाख़्त मुमकिन है लिहाज़ा पहचान हो जाए इस अन्दाज़ में तज़्किरा भी **ग़ीबत** में शुमार होगा। मस्अला येह है कि मुसलमान **ख़ुदकुशी** करने से इस्लाम से ख़ारिज नहीं हो जाता उस की नमाज़े जनाज़ा भी अदा की जाएगी, उस के लिये दुआए मग़्फ़िरत भी करेंगे, मरने वाले मुसलमान को बुराई से याद करने की शरीअ़त में इजाज़त नहीं।" कुछ आगे नक़्ल करते हैं : ह़ज़रते अ़ल्लामा मुह़म्मद अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى लिखते हैं : "मुर्दे की ग़ीबत ज़िन्दे की ग़ीबत से बदतर है, क्यूंकि ज़िन्दा शख़्स से मुआ़फ़ करवाना मुमकिन है जब कि मुर्दे से मुआ़फ़ करवाना मुमकिन नहीं।"

(فَيْضُ الْقَدِير لِلْمُناوِى، ج١، ص٥٦٢، تَحتَ الْحديث:٨٥٢)

1 ...صحيح البخارى، كتاب الجنائز، الحديث:١٣٩٣، ج١، ص٤٧٠.

www.dawateislami.net

तो दुन्या में मेरा ग़ुलाम था।" इरशाद होगा : "मैं ने उस के अ़मल का बदला दिया है।"(1)

फ़रमाने मुश्किल कुशा :

﴾6﴿.....अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم इरशाद फ़रमाते हैं : "दुन्या अ़मल का घर है जिस में बदला नहीं और आख़िरत बदले की जगह है जिस में अ़मल नहीं। लिहाज़ा अ़मल के घर दुन्या में, जज़ा के घर आख़िरत के लिये नेक आ'माल कर लो।"(2)

अच्छी निय्यतों का बदला :

﴾7﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अह्ले जन्नत से फ़रमाएगा : मेरी रह़मत से जन्नत में दाख़िल हो जाओ, अपनी अच्छी निय्यतों के बदले इस में हमेशा रहो और अपने आ'माल के ए'तिबार से इस में तक़्सीम हो जाओ।"(3)

(मुसन्निफ़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं) मैं ने जज़ा व सज़ा पर येह दलाइल तम्बीह के लिये बयान किये हैं वरना येह तो हर आ़मो ख़ास को मा'लूम है और ऐसी बात आ़म कुन्द ज़ेह्न लोगों से भी मख़्फ़ी नहीं होती।

❁❁❁❁❁❁❁

---

1 ...المعجم الاوسط،الحديث:٧٣٥٦،ج٥،ص٢٨٨.

2 ...ايقاظ الهم شرح متن الحكم، ص١٢٦،مختصراً.

3 ...بريقة محمودية فى شرح طريقة محمدية،الباب الثانى،فصل الامل وهوالعاشر، الجزء٣،ص٧١.

www.dawateislami.net

बाब नम्बर 3 : रिज़ा व नाराज़ी, वा'दा व वईद का बयान

बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपनी मशिय्यत से अपनी रिज़ा व ख़ुशनूदी को अपनी इत़ाअ़तो फ़रमां बरदारी में और नाराज़ी को गुनाहों में पोशीदा रखा है। अपनी रह़मत से फ़रमां बरदारों को जन्नत में दाख़िल करने का वा'दा फ़रमाया है और अपने अ़द्लो हिक्मत से गुनहगारों को जहन्नम में दाख़िल करने की वईद सुनाई है। चुनान्चे,

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِؕ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿۱۳﴾ وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَتَعَدَّ حُدُوْدَهٗ يُدْخِلْهُ نَارًا خَالِدًا فِيْهَا ۪ وَلَهٗ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿۱۴﴾ (پ٤، النساء: ١٣، ١٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *येह* **अल्लाह** *की ह़दें हैं और जो हुक्म माने* **अल्लाह** *और* **अल्लाह** *के रसूल का* **अल्लाह** *उसे बाग़ों में ले जाएगा जिन के नीचे नह्रें रवां, हमेशा उन में रहेंगे और येही है बड़ी कामयाबी और जो* **अल्लाह** *और उस के रसूल की ना फ़रमानी करे और उस की कुल ह़दों से बढ़ जाए* **अल्लाह** *उसे आग में दाख़िल करेगा जिस में हमेशा रहेगा और उस के लिये ख़्वारी का अ़ज़ाब है।*

जन्नत और मग़्फ़िरत की त़रफ़ जल्दी करो :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ईमान वालों को मग़्फ़िरत और जन्नत की त़रफ़ जल्दी करने, अपने आप को और अपने घरवालों को जहन्नम की आग से बचाने, अह़कामात को बजा लाने और ना फ़रमानियों से ख़ुद को बचाने का हुक्म इरशाद फ़रमाया है। चुनान्चे,

www.dawateislami.net

इरशाद होता है :

وَ سَارِعُوْۤا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُۙ اُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِيْنَۙ﴿۱۳۳﴾

(پ٤،ال عمران:١٣٣)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और दौड़ो अपने रब की बख़्शिश और ऐसी जन्नत की त़रफ़ जिस की चौड़ान में सब आस्मानो ज़मीन आ जाएं परहेज़गारों के लिये तय्यार रखी है।*

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّ قُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلٰٓىٕكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَّا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَاۤ اَمَرَهُمْ وَ يَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ﴿۶﴾

(پ٢٨، التحريم:٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ ईमान वालो अपनी जानों और अपने घरवालों को आग से बचाओ जिस के ईंधन आदमी और पथ्थर हैं उस पर सख़्त करें (त़ाक़तवर) फ़िरिश्ते मुक़र्रर हैं जो **अल्लाह** का हुक्म नहीं टालते और जो उन्हें हुक्म हो वोही करते हैं।*

❀❀❀❀❀❀❀

बाब नम्बर 4 : इ़बादत गुज़ारों और इत़ाअ़त शिआ़रों पर इन्आ़मो इक्राम का बयान

फ़रामीने बारी तआ़ला :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴾1﴿ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيٰوةً طَيِّبَةً ۚ (پ١٤،النحل:٩٧)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *जो अच्छा काम करे मर्द हो या औ़रत और हो मुसलमान तो ज़रूर हम उसे अच्छी ज़िन्दगी जिलाएंगे।*

www.dawateislami.net

﴿2﴾ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَیَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِی الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِهِمْۗ وَ لَیُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِیْنَهُمُ الَّذِی ارْتَضٰى لَهُمْ وَ لَیُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًاؕ

(پ۱۸، النور: ۵۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *अल्लाह ने वा'दा दिया उन को जो तुम में से ईमान लाए और अच्छे काम किये कि ज़रूर उन्हें ज़मीन में ख़िलाफ़त देगा जैसी उन से पहलों को दी और ज़रूर उन के लिये जमा देगा उन का वोह दीन जो उन के लिये पसन्द फ़रमाया है और ज़रूर उन के अगले ख़ौफ़ को अम्न से बदल देगा।*

﴿3﴾ اِنَّ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اِنَّا لَا نُضِیْعُ اَجْرَ مَنْ اَحْسَنَ عَمَلًا ﴿۳۰﴾ اُولٰٓىٕكَ لَهُمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ یُحَلَّوْنَ فِیْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّ یَلْبَسُوْنَ ثِیَابًا خُضْرًا مِّنْ سُنْدُسٍ وَّ اِسْتَبْرَقٍ مُّتَّكِـٕیْنَ فِیْهَا عَلَى الْاَرَآىٕكِؕ نِعْمَ الثَّوَابُؕ وَ حَسُنَتْ مُرْتَفَقًا ﴿۳۱﴾

(پ۱۵، الکھف: ۳۰، ۳۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक जो ईमान लाए और नेक काम किये हम उन के नेग (अज्र) ज़ाएअ़ नहीं करते जिन के काम अच्छे हों उन के लिये बसने के बाग़ हैं उन के नीचे नदियां बहें वोह उस में सोने के कंगन पहनाए जाएंगे और सब्ज़ कपड़े करेब और क़नादीज़ के पहनेंगे वहां तख़्तों पर तकया लगाए क्या ही अच्छा सवाब और जन्नत क्या ही अच्छी आराम की जगह।*

﴿4﴾ اِنَّ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَیَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمٰنُ وُدًّا ﴿۹۶﴾

(پ۱۶، مریم: ۹۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक वोह जो ईमान लाए और अच्छे काम किये अ़न क़रीब उन के लिये रह़मान मह़ब्बत कर देगा।*

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا इस की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन्हें अपना महबूब भी बनाएगा और मोमिनीन का भी ।"

अह़ादीसे मुबारका व अक़्वाले सालिह़ीन

वलिय्युल्लाह की शान :

﴿1﴾.....हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "जिस ने मेरे किसी वली से दुश्मनी की मैं उस से ए'लाने जंग करता हूं और बन्दा मेरा क़ुर्ब सब से ज़ियादा फ़राइज़ के ज़रीए़ ह़ासिल करता है और नवाफ़िल के ज़रीए़ मुसल्सल क़ुर्ब ह़ासिल करता रहता है यहां तक कि मैं उस से मह़ब्बत करने लगता हूं। जब मैं बन्दे को महबूब बना लेता हूं तो मैं उस के कान बन जाता हूं जिस से वोह सुनता है। उस की आंख बन जाता हूं जिस से वोह देखता है। उस के हाथ बन जाता हूं जिन से वोह पकड़ता है। उस के पाउं बन जाता हूं जिन से वोह चलता है। अगर वोह मुझ से सुवाल करे तो मैं उसे अ़त़ा करता हूं और अगर पनाह मांगे तो मैं उसे पनाह देता हूं।"[1]

ह़दीस की वज़ाह़त :

जो रिज़ाए इलाही के लिये फ़राइज़ की अदाएगी के साथ साथ ब कसरत नफ़्ली इबादात बजा लाता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे अपनी अ़ज़ीम मह़ब्बत से सरफ़राज़ फ़रमाता है जिस की ब दौलत बन्दे की तमाम ह़रकातो सकनात में क़ुव्वते ख़ुदावन्दी के अन्वार शामिल हो जाते हैं ।

---

1 ....صحیح البخاری، کتاب الرقاق، باب التواضع، الحدیث: ٦٥٠٢، ج٤، ص٢٤٨.

www.dawateislami.net

रह़मते इलाही के जल्वे :

﴾2﴿......ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ सरकारे दो जहां, सरवरे ज़ीशान, मालिके कौनो मकान, मह़बूबे रह़मान صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से रिवायत करते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "जब मेरा बन्दा मुझ से एक बालिश्त क़रीब होता है तो मैं उस से एक हाथ क़रीब हो जाता हूं और अगर मुझ से एक हाथ क़रीब होता है तो मैं दोनों हाथ फैलाने की मिक़्दार उस से क़रीब हो जाता हूं[1] और अगर वोह मेरी त़रफ़ चल कर आता है तो मैं उस की त़रफ़ दौड़ कर जाता हूं।"[2]

ह़दीस की वज़ाह़त :

बन्दे का रब عَزَّوَجَلَّ के क़रीब होना उस का इ़बादतो इत़ाअ़त में लगा रहना है और रब عَزَّوَجَلَّ का बन्दे के क़रीब होने से मुराद उस का रह़मो फ़ज़्ल फ़रमाना है।

1......शारेहे़ बुख़ारी फ़क़ीहे आ'ज़मे हिन्द ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی इस के तह़त फ़रमाते हैं : "किसी के क़रीब होने का मत़लब येह होता है कि उस से दूर रहा हो इस बिना पर येह ह़दीस मुतशाबिहात में से है और तावील येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस बन्दे पर ख़ुसूसी रह़मत फ़रमाता है।" (नुज़्हतुल क़ारी शर्हे़ बुख़ारी, जि. 5, स. 946)

नीज़ **ह़कीमुल उम्मत** मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْحَنَّان इस के तह़त फ़रमाते हैं : "येह कलाम तमसीली त़ौर पर है मत़लब येह है कि अगर तुम इख़्लास के साथ थोड़े अ़मल के ज़रीए़ क़ुर्बे इलाही ह़ासिल करो तो रब तआ़ला अपने करम से बहुत ज़ियादा रह़मत के साथ तुम से क़रीब होगा। लिहाज़ा अ़मल किये जाओ थोड़ा बहुत न देखो। (मज़ीद इरशाद फ़रमाते हैं) येह कलाम बत़ौरे मिसाल समझाने के लिये है मत़लब येह है कि तुम्हारी त़लब से हमारी रह़मत सबक़त ले गई है, अगर ऐसे मा'मूली आ'माल करो जिन से ब देर हम तक पहुंच सको तो हम तुम को अपने करम से बहुत जल्द अपने दामने रह़मत में ले लेंगे अगर रब तआ़ला से क़ुर्ब हमारी कोशिश से होता तो क़ियामत तक हम उस तक न पहुंच सकते, उस तक रसाई उस की रह़मत से है।" (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 3, स. 397)

2...صحیح البخاری، کتاب التوحید، باب قول اللّٰہ "**ویحذرکم اللہ نفسہ**" الحدیث:٧٤٠٥، ص٥٤١.

www.dawateislami.net

जन्नती ने'मतें :

﴾3﴿......हदीसे कुदसी है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "मैं ने अपने नेक बन्दों के लिये ऐसी ने'मतें तय्यार कर रखी हैं जिन्हें न किसी आंख ने देखा, न किसी कान ने सुना और न ही किसी इन्सान के दिल में उन का ख़याल गुज़रा।"(1)

﴾4﴿......**ज़बूर शरीफ़** में है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

"ऐ इब्ने आदम ! तू मेरी इताअ़तो फ़रमां बरदारी कर ! मैं तेरे दिल को तवंगरी और तेरे हाथों को रिज़्क़ से भर दूंगा और तेरे जिस्म को सिह़्ह़तो तन्दुरुस्ती अ़ता फ़रमा दूंगा।"(2)

दुन्या को हुक्मे रब्बानी :

﴾5﴿......**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने दुन्या को येह हुक्म इरशाद फ़रमाया है कि "ऐ दुन्या ! जो मेरी इ़बादत करे तू उस की ख़िदमत कर और जो तेरी ख़िदमत करे तू उस से ख़िदमत लेती रह।"(3)

﴾6﴿......हज़रते सय्यिदुना बिशर बिन हारिस हाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى फ़रमाते हैं : "अहले ख़ैर दुन्या व आख़िरत (की भलाई) ले गए।"(4)

---

1 ......صحیح البخاری، کتاب التفسیر، باب "فلاتعلم نفسما اخفی" الحدیث: ٤٧٨٠، ج٣، ص ٣٣٠ .

2 ......حلیة الاولیاء، معاویة بن قرة، الحدیث: ٢٥٠٠، ج٢، ص ٣٤٤، دون قوله جسمك صحة.

3 ......روح البیان، پ٢٧، ج٩، ص ٣٧٣

4 ......الزهدالکبیر للبیهقی، الجزء الرابع، من کتاب الزهدالکبیر، الحدیث: ٧٦٨، ص ٢٩٣.

तलबगाराने आख़िरत के ख़ादिम :

﴾7﴿.....हज़रते सय्यिदुना यहूया बिन मुआज़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "दुन्या के तलबगारों की ख़िदमत ग़ुलाम करते हैं जब कि तलबगाराने आख़िरत की ख़िदमत आज़ाद लोग करते हैं।[1]

ऐ मेरे भाई ! अगर तू चाहता है कि तुझे ऐसी इज़्ज़त मिले जो कभी कम न हो, ऐसा इक्तिदार मिले जो कभी ख़त्म न हो, ऐसी आबरू मिले जो कभी पामाल न हो और ऐसी बुज़ुर्गी मिले जो कभी पुरानी न हो तो अपने रब عَزَّوَجَلَّ की इताअत के लिये कमर बस्ता हो जा क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन तमाम चीज़ों को अपनी इताअतो फ़रमां बरदारी में रखा है। जो उस की इताअत करता है वोह उसे इज़्ज़तो बुज़ुर्गी अता फ़रमाता है और वोह अपने कई इताअत गुज़ार बन्दों को शहवात की गुलामी से आज़ाद फ़रमा चुका है। उन के दिलों को फ़ानी चीज़ों की महब्बत की आलूदगी से पाकीज़ा फ़रमा दिया, उन के हाथों ख़वारिके़ आदात करामात का ज़ुहूर फ़रमाया, उन्हें ग़ैब पर मुत्तलअ फ़रमाया[2], उन पर रहमत का नुज़ूल फ़रमा कर उन की दुआओं को क़बूलिय्यत का सेहरा पहनाया तो लोग उन के अन्वारो तजल्लियात से फ़ैज़याब हो

1......الرسالة القشيرية،باب الحريه،ص٢٥٥.

2......शैखे़ तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपनी मुन्फ़रिद तस्नीफ़ "**कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब**" में नक्ल फ़रमाते हैं : "औलियाए किराम نَفَعَنَااللهُ تَعَالٰی بِبَرَكَاتِهِمْ فِی الدَّارَيْن (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दोनों जहां में उन की बरकतों से हमें माला माल करे) को भी कुछ उलूमे ग़ैब मिलते हैं मगर ब वसातते रुसुल عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام (या'नी रसूलों के ज़रीए) मो'तज़िला (नामी बातिल फ़िर्क़ा) خَذَلَهُمُ اللهُ تَعَالٰی (**अल्लाह** तआला उन को ग़ारत करे) कि सिर्फ़ रसूलों के लिये इत्तिलाए ग़ैब मानते और औलियाए किराम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم के उलूमे ग़ैब का अस्लन (बिल्कुल) हिस्सा नहीं मानते गुमराह मुब्तदिअ (बिदअती) हैं।"

(कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 246)

www.dawateislami.net

कर उन की पैरवी करने लगे, ह़ल्ले मुश्किलात के लिये बारगाहे इलाही में उन का वसीला पेश करने लगे, उन के सदक़े व तुफ़ैल अपनी आफ़तों और मुसीबतों के टलने का सुवाल करने लगे, उन की क़दम गाहों से सिफ़ारिश त़लब करने लगे और उन के मज़ारात की मिट्टी से बरकत ह़ासिल करने लगे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें अ़ज़मतो शान से नवाज़ा, उन के दिलों को अपने नूर से मुनव्वर फ़रमाया और अपनी ख़ालिस मह़ब्बतो मा'रिफ़त से लबरेज़ किया, उन्हें तन्हाइयों में अपने ज़िक्र से तस्कीन बख़्शी तो वोह लोगों से बे परवाह हो गए, जन्नते नईम में उन के लिये हमेशा रहने वाली ने'मतें तय्यार फ़रमाईं, उन से अपने दीदार का वा'दा फ़रमाया और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का उन से राज़ी होना सब से बड़ा इन्आ़म है। **अल्लाह** جَلَّ شَانُهٗ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿۵۷﴾

(پ ۲۵، الدخان: ۵۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *येही बड़ी कामयाबी है।*

एक मक़ाम पर इरशाद फ़रमाता है :

لِمِثْلِ هٰذَا فَلْيَعْمَلِ الْعٰمِلُوْنَ ﴿۶۱﴾

(پ ۲۳، الصّٰفّٰت: ۶۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐसी ही बात के लिये कामियों को काम करना चाहिये।*

......इ़ल्म सीखने से आता है......

सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم *ने इरशाद फ़रमाया : "इ़ल्म सीखने से ही आता है और फ़िक़्ह ग़ौरो फ़िक्र से ह़ासिल होती है और* ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ *जिस के साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है उसे दीन में समझ बूझ अ़त़ा फ़रमाता है और* ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ *से उस के बन्दों में वोही डरते हैं जो इ़ल्म वाले हैं।"*

(المعجم الکبیر، ج۱۹، ص ۵۱۱، الحدیث: ۷۳۱۲)

www.dawateislami.net

बाब नम्बर 5 : गुनाहों की हलाकत ख़ैज़ियां

इस बाब में गुनाहों की दुन्यवी और उख़रवी सज़ाएं मसलन तबाही व बरबादी, ज़िल्लतो रुस्वाई वग़ैरा बयान की जाएंगी । चुनान्चे,

क़ुरआने पाक में बयान की गई सज़ाएं :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

اِنَّهٗ مَنْ یَّاْتِ رَبَّهٗ مُجْرِمًا فَاِنَّ لَهٗ جَهَنَّمَ ؕ لَا یَمُوْتُ فِیْهَا وَلَا یَحْیٰى ﴿۷۴﴾ (پ۱۶، طٰہٰ:۷۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक जो अपने रब के हुज़ूर मुजरिम हो कर आए तो ज़रूर उस के लिये जहन्नम है जिस में न मरे न जिये ।*

اَمْ حَسِبَ الَّذِیْنَ یَعْمَلُوْنَ السَّیِّاٰتِ اَنْ یَّسْبِقُوْنَا ؕ سَآءَ مَا یَحْكُمُوْنَ ﴿۴﴾ (پ۲۰، العنکبوت:۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *या येह समझे हुवे हैं वोह जो बुरे काम करते हैं कि हम से कहीं निकल जाएंगे क्या ही बुरा हुक्म लगाते हैं ।*

"یَسْبِقُوْنَا" से मुराद आ़जिज़ कर के बच निकलना है ।

وَمَنْ یَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًا مُّبِیْنًا ﴿۳۶﴾ (پ۲۲، الاحزاب:۳۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जो हुक्म न माने **अल्लाह** और उस के रसूल का वोह बेशक सरीह़ गुमराही बहका ।*

अह़ादीस में बयान कर्दा सज़ाएं :

ईमान की कमज़ोरी :

﴿1﴾.....हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने

www.dawateislami.net

इरशाद फ़रमाया : "ज़ानी ज़िना करते वक़्त, चोर चोरी करते वक़्त और शराबी शराब पीते वक़्त मोमिन नहीं होता।"(1) (इस में कमाले ईमान या नूरे ईमान की नफ़ी है)

दिल की सियाही :

﴾2﴿......हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जब कोई इन्सान गुनाह करता है तो उस के दिल पर एक सियाह नुक्ता लग जाता है फिर अगर वोह तौबा कर ले तो दिल साफ़ हो जाता है लेकिन अगर वोह गुनाह करता रहे तो वोह नुक्ता फैलता रहता है यहां तक कि सारा दिल सियाह हो जाता है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान كَلَّا بَلْ ٚ رَانَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿۱۴﴾ (پ ۳۰، المطففين: ۱۴) ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *कोई नहीं बल्कि उन के दिलों पर ज़ंग चढ़ा दिया है उन की कमाइयों ने।* से येही मुराद है।"(2)

दिल की सख़्ती :

﴾3﴿.....सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "गुनाहों की कसरत से दिल सख़्त हो जाता है।"(3)

रिज़्क़ में तंगी :

﴾4﴿......सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइसे नुज़ूले सकीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है :

---

1 ...صحيح مسلم، كتاب الايمان، باب بيان نقصان الايمان...... الخ، الحديث: ٥٧، ص ٤٨.

2 ...شعب الايمان للبيهقى، باب فى معالجة......الخ، فصل فى الطبع على القلب، الحديث: ٧٢٠٧، ج ٥، ص ٤٤١، بتغيرٍ قليلٍ.

3 ...فردوس الاخبار بمأثور الخطاب، الحديث: ٦٣٥٩، ج ٤، ص ١١٥، مفهوماً.

www.dawateislami.net

"गुनाहों की वज्ह से बन्दा मिलने वाले रिज़्क़ से महरूम कर दिया जाता है।"(1)

सब से पहला ना फ़रमान :

﴿5﴾.....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा **कलीमुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की त़रफ़ वह़्य फ़रमाई : "ऐ मूसा ! मेरी मख़्लूक़ में सब से पहले मरने (या'नी तबाहो बरबाद होने) वाला इब्लीस है क्यूंकि सब से पहले उसी ने मेरी ना फ़रमानी की और जो मेरी ना फ़रमानी करता है मैं उसे मुर्दा लिख देता हूं।"(2)

इ़ज़्ज़त और ज़िल्लत :

﴿6﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "बन्दे इत़ाअ़ते इलाही जैसी इ़ज़्ज़त नहीं पा सकते और मा'सिय्यत जैसी ज़िल्लत नहीं उठा सकते और बन्दए मोमिन को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इतनी मदद काफ़ी है कि वोह अपने दुश्मन को गुनाहों में मुब्तला देखे।"(3)

दिल मुर्दा हो जाता है :

﴿7﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन वासेअ़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "गुनाह पे गुनाह किये जाने से दिल मुर्दा हो जाता है।"(4)

﴿8﴾.....एक बुज़ुर्ग رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "अगर तू येह जानते हुवे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी करता है कि वोह तुझे देख रहा

---

1 ....المسندللامام احمدبن حنبل،حدیث ثوبان،الحدیث:۲۲۵۰۱،ج۸،ص۳۳۵.

2 ....الزواجرعن اقتراف الکبائر،مقدمة المؤلف،خاتمه،ج۱،ص۲۷،مفهوماً.

3 ....حلیة الاولیاء،الرقم ۱۷۰ سعیدبن مسیب،الحدیث:۱۸۸۳،ج۲،ص۱۸۷.

4 ....حلیة الاولیاء،الرقم۱۹۹،محمدبن واسع،الحدیث:۲۷۱٤،ج۲،ص۳۹۸.

www.dawateislami.net

है तो तू अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नज़र (या'नी उस के देखने) को हल्का समझने वाला है और अगर येह गुमान कर के गुनाह करता है कि वोह तुझे नहीं देख रहा तो तू काफ़िर है।"(1)

इबादत की लज़्ज़त से महरूम :

《9》......हज़रते सय्यिदुना वुहैब बिन वर्द رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَيْه से पूछा गया : "क्या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ना फ़रमान इबादत की लज़्ज़त पा सकता है?" इरशाद फ़रमाया : "नहीं ! बल्कि जो गुनाह का पुख़्ता इरादा करता है वोह भी इबादत की लज़्ज़त से महरूम रहता है।"(2)

कुफ़्र के क़ासिद :

《10》......सलफ़ सालिहीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن फ़रमाया करते थे कि "गुनाह कुफ़्र के क़ासिद हैं।"(3)

ख़ुलासए कलाम :

हा़सिले कलाम येह है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नज़रे रहमत से महरूम होने और उस के नाराज़ होने की अ़लामत येह है कि बन्दा गुनाहों में मुब्तला हो जाता है। गुनाहों पर इसरार करने वाला अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी मोल लेता है, वोह शैतान का यार होता है और अहले ईमान उस से बेज़ार होते हैं।

ऐ मेरे भाई ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी कर के उस की नाराज़ी और उस के अ़ज़ाब का ह़क़दार न बन जब तेरा नफ़्स

---

1 ....المقصدالاسنیٰ فی شرح معانی اسماء الحسنیٰ للغزالی،ص١٢ مفهوماً.

2 ....صفة الصفوة،وهيب بن الورد،ج١،الجزء الثانی،ص١٤٩ .

3 ....الزواجرعن اقتراف الكبائر،خاتمة فی تحذيرمن جملة......الخ،ج١،ص٢٨ .

www.dawateislami.net

तुझे गुनाहों की त़रफ़ बुलाए तो तू उसे याद दिला कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरे मुआ़मलात से बा ख़बर और तुझे देख रहा है और उस के दर्दनाक अ़ज़ाब और बड़े इ़क़ाब से उसे डरा जिस की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ना फ़रमानों को वईद सुनाई है और अगर अ़ज़ाबो इ़क़ाब न भी हो तो क्या येह कम है कि बन्दा गुनाहों की वज्ह से साबिक़ीन को मिलने वाले बुलन्द मरातिब और नेकों को अ़त़ा किये जाने वाले सवाब से महरूम रहता है और क्यूं न हो कि गुनाहों में रुस्वाई, दोज़ख़ का अ़ज़ाब, जब्बारो क़हहार عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी और उस का ऐसा ग़ज़ब है जिस के आगे तमाम ज़मीनो आस्मान वाले क़ाइम न रह सकें। हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से आ़फ़िय्यत का सुवाल करते हैं।

बाब नम्बर 6 : इबादतो इत़ाअ़त का बयान

कामिल मोमिन की एक निशानी :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो नेकी पर ख़ुश और बुराई पर ग़मगीन होता है, वोह (कामिल) मोमिन है।"(1)

दूसरी ह़दीस :

प्यारे इस्लामी भाई ! जब तुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपनी इबादत की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए तो तू बहुत ख़ुश हो। और उस रब्बे लम यज़ल عَزَّوَجَلَّ का बहुत शुक्र बजा ला जिस ने अपनी इबादत की वज्ह से तुझे इ़ज़्ज़त बख़्शी और इस के लिये तुझे चुन लिया। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ किया कर कि जिन नेक आ'माल को बजा लाने की उस ने तुझे तौफ़ीक़ दी है उन्हें अपने फ़ज़्ल से क़बूल भी फ़रमा ले।

---

1 ....المستدرك، كتاب الايمان، باب ليس المومن.....الخ، الحديث: ٣٦، ج١، ص١٦٣.

www.dawateislami.net

अ़मले मक़्बूल कम नहीं होता :

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم इरशाद फ़रमाते हैं : "अ़मल करने से ज़ियादा उस के क़बूल हो जाने की सअ़्य करो क्यूंकि अ़मले मक़्बूल कम नहीं होता।"(1)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इबादात बजा लाने के मुआ़मले में हमेशा अपनी सुस्ती और कोताही का ए'तिराफ़ करो अगर्चे इस में तुम्हारी जिद्दो जह्द ज़ियादा हो क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ह़क़ तुम पर बहुत बड़ा है। उस ने तुम्हें अ़दम से वुजूद बख़्शा और तुम पर ने'मतों की बारिशें बरसाईं, तुम पर अपना फ़ज़्लो करम फ़रमाया, उस की अ़ता कर्दा क़ुव्वतो त़ाक़त से ही तुम उस की इत़ाअ़त करते हो और उसी की दी हुई तौफ़ीक़ और रह़मत से उस की इ़बादत बजा लाते हो।

तुम पर ज़रूरी है कि जिन कामों से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मन्अ़ फ़रमाया है उन का इर्तिकाब कर के अपने दामने ईमान को दाग़दार और दिल को सियाह न करो और जब भी कोई गुनाह हो जाए तो जल्दी से तौबा कर लो और अच्छी तौबा करो, ख़ूब नदामत का इज़्हार और कसरत से इस्तिग़फ़ार करो, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से हमेशा डरते रहो क्यूंकि मोमिन हर वक़्त अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से लरज़ता रहता है अगर्चे मुख़्लिस हो कर अच्छे त़रीक़े से त़ाअ़तो इ़बादत बजा लाता हो। तुम जानते हो कि अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के मा'सूम और औलियाए उ़ज़्ज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के मह़फ़ूज़ होने के बा वुजूद भी उन के ख़ौफ़े ख़ुदा और ख़शिय्यत का क्या आ़लम हुवा करता, वोह नेकियां करते और गुनाहों से बचते थे।

---

1 .....تاریخ مدینة دمشق لابن عساکر، الرقم ٤٩٣٣ علی بن ابی طالب، ج ٤٢، ص ٥١١ ملخصًا

www.dawateislami.net

ऐ बन्दे ! तुझे इस मुआ़मले में ज़ियादा डरना और परहेज़ करना चाहिये क्यूंकि अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ السَّلَام व औलियाए उ़ज़्ज़ाम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان रह़मते ख़ुदावन्दी की वुस्अ़त को तुझ से ज़ियादा जानते थे, तुझ से ज़ियादा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर हुस्ने ज़न रखते थे, उस के अ़फ़्वो करम की त़लब में तुझ से ज़ियादा सच्चे थे और उस के फ़ज़्लो करम के तुझ से ज़ियादा उम्मीदवार थे । लिहाज़ा तू उन की पैरवी कर नजात और सलामती पाएगा, उन के रास्ते की इत्तिबाअ़ कर कामयाब हो जाएगा और नफ़्अ़ पाएगा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह ले ले क्यूंकि जो उस की पनाह लेता है वोह सीधी राह की हिदायत पाता है ।

❁❁❁❁❁❁❁

बाब नम्बर 7 : इबादत की रुकावटें और इन का ह़ल

चूंकि दुन्या की बुन्याद मुसीबतों और आफ़तों पर रखी गई है, मैली कुचैली चीज़ों से इसे गूंधा गया है, मसरूफ़िय्यात और ग़फ़्लतों से इसे भर दिया गया है जिस की वज्ह से इत़ाअ़तो इबादत की रुकावटें ज़ियादा हो गईं और मा'सिय्यत पर आमादा करने वाले अ़वामिल की ता'दाद में भी काफ़ी ह़द तक इज़ाफ़ा हो गया । ताहम बुन्यादी त़ौर पर इन्हें चार चीज़ों में तक़्सीम किया जा सकता है :

(1).....जहालत (2).....ईमान की कमज़ोरी (3).....लम्बी उम्मीदें और (4).....ह़राम और मुश्तबा चीज़ों का खा लेना ।

हम اِنۡ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इन चारों में से हर एक पर मुख़्तसर मगर जामेअ़ गुफ़्तगू करते हुवे इन की मज़म्मत बयान करेंगे फिर इन से बाज़ रहने और ख़लासी पाने का त़रीक़ा बताएंगे । وَبِاللّٰهِ التَّوۡفِيۡق

❁❁❁❁❁❁❁

www.dawateislami.net

बाब नम्बर 8 : पहली रुकावट और इस का ह़ल दुन्या मलऊ़न है :

जहालत हर बुराई की जड़ और हर नुक़्सान का सबब है। जहालत और जाहिलों के बारे में सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशाद है : "दुन्या ला'नती है और जो इस में है वोह ला'नती है सिवाए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र, आ़लिम और त़ालिबे इ़ल्म के [1]।"[2]

जहालत की तख़्लीक़ का वाक़िआ़ :

मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जहालत को पैदा किया तो उस से फ़रमाया : "आगे आ।" तो वोह पीछे चली गई। फिर फ़रमाया : "पीछे जा।" तो वोह आगे आ गई। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : "मुझे अपनी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! तू मुझे मख़्लूक़ में सब से

---

1 .....**मुफ़स्सिरे शहीर** ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان फ़रमाते हैं : "जो चीज़ **अल्लाह** व रसूल (عَزَّوَجَلَّ وصَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم) से ग़ाफ़िल कर दे वोह दुन्या है। या जो **अल्लाह** व रसूल (عَزَّوَجَلَّ وصَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم) की नाराज़ी का सबब हो वोह दुन्या है। बाल बच्चों की परवरिश, ग़िज़ा, लिबास, घर वग़ैरा ह़ासिल करना सुन्नते अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام है येह दुन्या नहीं। इस मा'ना से वाक़ेई दुन्या और दुन्या वाली चीज़ें ला'नती हैं। **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के ज़िक्र से मुराद सारी इ़बादात हैं या'नी **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) का ज़िक्र, **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के मह़बूब बन्दे, उ़लमा, त़लबा अगर्चे दुन्या में हैं मगर दुन्या नहीं हैं। येह तो **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के मह़बूब हैं। ह़दीस शरीफ़ में है कि **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) का ज़िक्र हर इ़बादत हर सआ़दत का सर है जैसे बदन के लिये जान ज़रूरी है। ऐसे ही मोमिन के लिये ज़िक्रुल्लाह लाज़िमी है। ज़िक्रुल्लाह से दुन्या का बक़ा आस्मानो ज़मीन का क़ियाम है (मिरक़ात) जब ज़ाकिरीन फ़ना हो जाएंगे तो क़ियामत आ जावेगी।" (मिरआतुल मनाजीह, जि. 7, स. 17,मुलख़्ख़सन)

2 .....سنن ابن ماجه، كتاب الزهد، باب مثل الدنيا، الحديث: ٤١١٢، ج٤، ص٤٢٨.

www.dawateislami.net

ज़ियादा ना पसन्द है, मैं ज़रूर तुझे अपनी मख़्लूक़ के बदतरीन लोगों में रखूंगा।"(1)

जहालत भी दुश्मन है :

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं : "जहालत से बड़ा आदमी का कोई दुश्मन नहीं। आदमी जिस चीज़ से जाहिल होता है उस का दुश्मन बन जाता है।"

जहालत की मज़म्मत दलाइले अ़क़्लिया व नक़्लिया से साबित है जो किसी पर मख़्फ़ी नहीं। जाहिल न चाहते हुवे भी इ़बादात छोड़ देता और गुनाह कर बैठता है। क्यूंकि उसे उन इ़बादात का इ़ल्म नहीं होता जिन्हें बजा लाने का **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उसे हुक्म इरशाद फ़रमाया है और मा'सिय्यत से भी बे ख़बर होता है जिस से इजतिनाब का उसे हुक्म होता है।

इस रुकावट का ह़ल :

जाहिल इ़ल्म की रौशनी से जहालत की तारीकियों से नजात ह़ासिल कर सकता है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ शैख़ अ़ली बिन अबू बक्र رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه पर अपनी रह़मतें नाज़िल फ़रमाए उन्हों ने क्या ख़ूब फ़रमाया :

اَلْجَهْلُ نَارٌ لِدِيْنِ الْمَرْءِ يُحْرِقُهٗ

وَالْعِلْمُ مَاءٌ لِتِلْكَ النَّارِ يُطْفِيْهَا

तर्जमा : जहालत ऐसी आग है जो आदमी के दीन को जला डालती है और इ़ल्म ऐसा पानी है जो इस आग को बुझा देता है।

1 ....نزهة المجالس، باب فی فضل العقل، ج ۲، ص ۱۳۹ .

www.dawateislami.net

प्यारे इस्लामी भाई ! तुम पर बहुत वसीअ़ इ़ल्म ह़ासिल करना ज़रूरी नहीं बल्कि जितना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम पर फ़र्ज़ फ़रमाया है उतना इ़ल्म ह़ासिल करो, वोह उ़लूम जिन से ईमान की तक्मील होती है, जिन के ज़रीए़ फ़राइज़ की अदाएगी और ह़राम से बचने का त़रीक़ा मा'लूम होता है, जिन की फ़ौरी ज़रूरत है उन्हें फ़िलफ़ौर ह़ासिल करना ज़रूरी है और जिन की फ़ौरी ज़रूरत नहीं उन में ताख़ीर की गुंजाइश है।

कितने इ़ल्म की ज़रूरत है :

ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار फ़रमाया करते थे : "जो सिर्फ़ अपनी इस्लाह़ के लिये इ़ल्म ह़ासिल करे उसे थोड़ा इ़ल्म भी काफ़ी है और जो लोगों की भी इस्लाह़ चाहे तो लोगों की ज़रूरियात तो बहुत ज़ियादा हैं।"(1)

❁❁❁❁❁❁❁

बाब नम्बर 9 : दूसरी रुकावट और इस का ह़ल

ईमान की कमज़ोरी एक बड़ी आफ़त और मज़मूम ख़स्लत है जिस से बहुत सी बुराइयां जनम लेती हैं। मसलन इ़ल्म पर अ़मल न करना, اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف وَنَهْيٌ عَنِ الْمُنْكَر (या'नी नेकी का हुक्म देना और बुराई से मन्अ़ करना) तर्क कर देना, मग़फ़िरत के लिये कोई कोशिश किये बिग़ैर उस की उम्मीद लगाए रखना, मालो दौलत के ह़ुसूल के लिये कोशां रहना, मख़्लूक़ का ख़ौफ़ और दीगर बहुत सी बद ख़स्लतें ईमान की कमज़ोरी से पैदा होती हैं। बन्दा अपने ईमान के मुत़ाबिक़ ही अह़काम की बजा आवरी और गुनाहों से परहेज़ करता है। ईमान कमज़ोर होने की सब से बड़ी दलील येह है कि बन्दा नेकियों को तर्क कर के गुनाहों में मस्रूफ़ हो जाता है। पस हर मुसलमान को चाहिये कि अपने ईमान की तक़विय्यत के लिये कोशां रहे।

1 .....الزهدللامام احمدبن حنبل،زهدمحمدبن سيرين،الحديث:١٨٨٥،ص٣٢٦.

www.dawateislami.net

ईमान को तक़विय्यत बख़्शने वाले उमूर :

तीन उमूर से ईमान को तक़विय्यत मिलती है :

(1).....वा'दा व वईद और अह़वाले आख़िरत पर मुश्तमिल आयात और अह़ादीस में ग़ौरो फ़िक्र करने, अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के ह़ालातो मो'जिज़ात और दुश्मनों पर इन के फ़त्ह़ के वाक़िआ़त और दुन्या से बे रग़बती और आख़िरत में रग़बत रखने के ह़वाले से बुज़ुर्गाने दीन के वाक़िआ़त को सुनने-पढ़ने से

(2).....आस्मानों और ज़मीन की सल्त़नत और इन में मौजूद अ़जीबो ग़रीब निशानियों और नई नई मस्नूआ़त का निगाहे बसीरतो जुस्तजू से मुशाहदा करने से और

(3).....नेक आ'माल पर मज़बूती से कारबन्द रहने, बुराइयों और ना फ़रमानियों से इजतिनाब करने से । क्यूंकि ईमान क़ौल और अ़मल के मजमूए़ का नाम है, इत़ाअ़त से बढ़ता, मा'सिय्यत से घटता है ।[1]

बयान कर्दा तमाम उमूर ईमान को तक़विय्यत और यक़ीन को पुख़्तगी बख़्शते हैं।

❁❁❁❁❁❁❁

---

1 .....**दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 173 पर सदरुश्शरीआ़, बदरुत्तरीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "अस्ले ईमान सिर्फ़ तस्दीक़ का नाम है, आ'माले बदन तो अस्लन जुज़्वे ईमान नहीं ।" और सफ़ह़ा 180 पर फ़रमाते हैं : "ईमान क़ाबिले ज़ियादती व नुक़्सान नहीं, इस लिये कि कमी बेशी उस में होती है जो मिक़्दार या'नी लम्बाई, चौड़ाई, मोटाई या गिनती रखता हो और ईमान तस्दीक़ है और तस्दीक़, कैफ़ या'नी एक ह़ालते इज़्आ़निया । बा'ज़ आयात में ईमान का ज़ियादा होना जो फ़रमाया है इस से मुराद مُؤْمَن بِهٖ وَمُصَدَّق بِهٖ है, या'नी जिस पर ईमान लाया गया और जिस की तस्दीक़ की गई कि ज़मानए नुज़ूले क़ुरआन में इस की कोई ह़द्द मुअ़य्यन न थी, बल्कि अह़काम नाज़िल होते रहते और जो हुक्म नाज़िल होता उस पर ईमान लाज़िम होता, न कि ख़ुद नफ़्से ईमान बढ़-घट जाता हो, अलबत्ता ईमान क़ाबिले शिद्दत व ज़ो'फ़ है कि येह कैफ़ के अ़वारिज़ से हैं ।"

www.dawateislami.net

बाब नम्बर 10 : तीसरी रुकावट और इस का ह़ल

लम्बी उम्मीदों की मज़म्मत :

लम्बी उम्मीदें बांधना बहुत बुरी ख़स्लत है बल्कि येह तो वोह चीज़ है जो बन्दे को आख़िरत बरबाद और दुन्या आबाद करने पर आमादा करती है।

हलाक्त की वज्ह :

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "इस उम्मत के पहले लोग दुन्या से बे रग़बती और छोटी उम्मीदों की वज्ह से नजात पाएंगे और बा'द में आने वाले दुन्या की ह़िर्स और लम्बी उम्मीदों के सबब हलाक हो जाएंगे।"(1)

शक़ावत व बद बख़्ती :

हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "चार चीज़ें बद बख़्ती से हैं : आंखों की ख़ुश्की (या'नी ख़ौफ़े ख़ुदा से न रोना), दिल की सख़्ती, लालच और लम्बी उम्मीदें।"(2)

लम्बी उम्मीदों से पनाह :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم इस त़रह़ दुआ़ मांगा करते थे :

اَللّٰهُمَّ اَعُوْذُبِكَ مِنْ كُلِّ اَمَلٍ يُلْهِيْنِىْ

---

1 .....موسوعة لابن ابی الدنیا، کتاب الیقین، الحدیث:۳، ج۱، ص۱۹ بتغیرٍ قلیلٍ.

2 .....الترغیب و الترهیب، کتاب التوبة، باب الترغیب فی ذکر الموت، الحدیث:۱۳، ج٤، ص۱۲۰.

www.dawateislami.net

या'नी : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं हर ग़ाफ़िल कर देने वाली उम्मीद से तेरी पनाह मांगता हूं।''(1)

फ़िक्रे आख़िरत न होने का एक सबब :

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم इरशाद फ़रमाते हैं : ''मुझे तुम पर सब से ज़ियादा डर नफ़्स की पैरवी और लम्बी उम्मीदों का है। क्यूंकि इत्तिबाए नफ़्स ह़क़ से रोकती और लम्बी उम्मीदें आख़िरत से ग़ाफ़िल कर देती हैं।''(2)

बुरे आ'माल का सबब :

ह़दीसे पाक में है : ''जिस की उम्मीदें लम्बी होती हैं उस के अ़मल बुरे होते हैं।''(3)

तूले अमल की वज्ह से जनम लेने वाली ख़राबियां :

दुन्या में त़वील अ़र्से तक ज़िन्दा रहने की उम्मीद को तूले अमल (या'नी लम्बी उम्मीद) से ता'बीर किया जाता है। येह जिस में पाई जाती है उस के निहायत बे वुक़ूफ़ और अह़मक़ होने की दलील होती है। क्यूंकि वोह यक़ीन को छोड़ कर वहम पर ए'तिमाद कर लेता है ह़ालांकि अगर उसे शाम के वक़्त पूछा जाए कि ''क्या तुझे यक़ीन है कि तू सुब्ह़ तक ज़िन्दा रहेगा ?'' या सुब्ह़ के वक़्त पूछा जाए कि ''क्या तुझे शाम तक ज़िन्दा रहने का यक़ीन है ?'' तो ज़रूर उस का जवाब नफ़ी में होगा इस के बा वुजूद वोह दुन्या के लिये ऐसे कोशिश करता है जैसे उसे मरना ही नहीं। यहां तक कि अगर उसे कह दिया जाए कि तुम दुन्या में हमेशा रहोगे

1 .....الموسوعةلابن ابى الدنيا،كتاب قصرالامل،الحديث:٤٦،ج٣،ص٣١٢.

2 .....الموسوعة لابن ابى الدنيا،كتاب قصرالامل،الحديث:٤٣،ج٣،ص٣٠٤.

3 .....جامع الترمذى،ابواب الزهد،باب(٢٢)،الحديث:٢٣٣٧،ج٤،ص١٤٨.

www.dawateislami.net

तब भी वोह अपनी इस हि़र्स में इज़ाफ़े की गुंजाइश नहीं पाएगा। पस जिस की येह हा़लत हो उस से बड़ा अह़मक़ कौन हो सकता है? नीज़ लम्बी उम्मीदें उन तमाम बुरी आ़दतों और बुरे कामों की बुन्याद हैं जो बन्दे को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इता़अ़तो फ़रमां बरदारी से रोक कर मा'सिय्यतो ना फ़रमानी में धकेल देते हैं जैसे लालच, बुख़्ल और तंगदस्ती का ख़ौफ़।

दुन्या की मह़ब्बत :

लम्बी उम्मीदों की बड़ी ख़राबियों में से एक ख़राबी येह भी है कि इस की वज्ह से बन्दा दुन्या से मह़ब्बत करता है, उसे बनाने और उस का साज़ो सामान जम्अ़ करने की कोशिश में अपना क़ीमती वक़्त बरबाद करने लगता है। हा़लांकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ و اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया है कि "मुझे दुन्या को वीरान करने के लिये भेजा गया है इस लिये जो इस को आबाद करेगा वोह मुझ से नहीं (या'नी मेरे त़रीक़े पर नहीं)।"(1)

आ'माले ख़ैर में टाल मटोल करना :

लम्बी उम्मीदों से पैदा होने वाली ख़राबियो में से एक ख़राबी टाल मटोल करना भी है, येह ऐसी बांझ ख़स्लत है जो कोई नेकी नहीं करने देती। कहा जाता है कि "जहन्नमियों की ज़ियादा तर चीख़ो पुकार टाल मटोल की वज्ह से होगी।" टाल मटोल करने वाला शख़्स ता़अ़ात बजा लाने में सुस्ती दिखाता और गुनाहों से तौबा करने में ताख़ीर करता रहता है यहां तक कि इसी हा़लत में उसे मौत आ दबोचती है। कु़रआने ह़कीम में इरशाद होता है :

---

1 ......الترغيب و الترهيب، كتاب التوبة والزهد، الحديث: ٦٠، ج٤، ص٨٦، بدون قوله فمن عمرها......الخ.

www.dawateislami.net

فَيَقُوْلَ رَبِّ لَوْلَاۤ اَخَّرْتَنِيْۤ اِلٰۤى اَجَلٍ قَرِيْبٍۙ فَاَصَّدَّقَ وَاَكُنْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۱۰﴾

(پ۲۸، المنافقون: ۱۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *फिर कहने लगे ऐ मेरे रब तू ने मुझे थोड़ी मुद्दत तक क्यूं मोहलत न दी कि मैं सदक़ा देता और नेकों में होता।*

उस से कहा जाएगा :

وَلَنْ يُّؤَخِّرَ اللّٰهُ نَفْسًا اِذَا جَآءَ اَجَلُهَا ؕ (پ۲۸، المنافقون: ۱۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और हरगिज़ **अल्लाह** किसी जान को मोहलत न देगा जब उस का वा'दा आ जाए।*

एक और मक़ाम पर इरशाद होता है :

اَوَلَمْ نُعَمِّرْكُمْ مَّا يَتَذَكَّرُ فِيْهِ مَنْ تَذَكَّرَ وَجَآءَكُمُ النَّذِيْرُ ؕ فَذُوْقُوْا فَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ نَّصِيْرٍ ﴿۳۷﴾

(پ۲۲، فاطر: ۳۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और क्या हम ने तुम्हें वोह उ़म्र न दी थी जिस में समझ लेता जिसे समझना होता और डर सुनाने वाला तुम्हारे पास तशरीफ़ लाया था तो अब चखो कि ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं।*

फिर वोह दुन्या से ऐसी ह़सरतो नदामत ले कर जाता है जिस की कोई इन्तिहा नहीं।

तूले अमल का इ़लाज :

ऐ भाई ! अपनी उम्मीदें कम कर दे, मौत को निगाहों के सामने रख और लम्बी उम्मीदों को पसे पुश्त डाल दे। लज़्ज़तों का ख़ातिमा करने और जमाअ़तों को जुदा जुदा कर डालने वाली मौत को याद कर के उम्मीदें कम करने पर मदद ह़ासिल कर, अपने उन रिश्तेदारों और वाक़िफ़ कारों को याद कर जो तेरे सामने मौत का शिकार हो गए, मौत बहुत क़रीब है, निगाहों से ओझल है, इस का इन्तिज़ार किया जाता है, मौत के किसी भी वक़्त अचानक आ जाने के ख़ौफ़ से हर वक़्त इस की तय्यारी में लगा रह।

www.dawateislami.net

हुज़ूर नबिय्ये ग़ैबदान, सरवरे ज़ीशान, मालिके कौनो मकान صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم (उम्मत की ता'लीम के लिये) इरशाद फ़रमाया करते थे : "क़सम है उस ज़ात की जिस के क़ब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है ! मैं पलकें उठाता हूं तो येह गुमान करता हूं कि शायद इन्हें झुकाने से पहले मुझे मौत आ जाए और जब खाने का लुक़्मा लेता हूं तो ख़याल करता हूं कि शायद इसे निगलने से पहले मौत से हम कनार हो जाऊं ।"(1)

और कभी जब हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم तयम्मुम के लिये दीवार पर हाथ मारते तो अ़र्ज़ की जाती : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप के क़रीब में पानी मौजूद है ।" तो इरशाद फ़रमाते : "मैं नहीं जानता कि उस तक पहुंच सकूंगा या नहीं ।"(2)

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ येह शे'र पढ़ा करते थे :

كُلُّ امْرَئٍ مُصَبَّحٌ فِي اَهْلِهٖ وَالْمَوْتُ اَدْنٰى مِنْ شِرَاكِ نَعْلِهٖ

तर्जमा : हर शख़्स अपने घरवालों में इस ह़ाल में सुब्ह़ करता है कि मौत उस के जूते के तस्मे से ज़ियादा उस के क़रीब होती है ।(3)

इमाम ग़ज़ाली عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡوَالِي का फ़रमाने आ़ली :

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡوَالِی फ़रमाते हैं : "जान लो ! बेशक मौत किसी मख़्सूस वक़्त, मख़्सूस ह़ालत और मख़्सूस उ़म्र में नहीं आती, वोह ज़रूर

---

1 ...شعب الايمان للبيهقى، باب فى الزهد، الحديث:١٠٥٦٤، ج٧، ص٣٥٥.

2 ...المعجم الكبير،الحديث:١٢٩٨٧، ج١٢، ص١٨٤.

3 ...احياء علوم الدين، كتاب آداب السماع و الوجد، بيان الدليل على......الخ، ج٢، ص٣٣٨

www.dawateislami.net

आ कर रहेगी । पस दुन्या के लिये तय्यार रहने से मौत के लिये तय्यार रहना बेहतर है ।''(1)

❁❁❁❁❁❁❁

बाब नम्बर 11 : चौथी रुकावट और इस का ह़ल

ह़राम और मुश्तबा चीज़ें खाना एक ऐसा अ़मल है जो ला मुह़ाला बन्दे को इत़ाअ़ते इलाही से फेर कर मा'सिय्यत के रास्ते पर ग़ामज़न कर देता है । चुनान्चे,

ह़लाल की बरकत और ह़राम की नुहूसत :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''जो ह़लाल रिज़्क़ खाता है न चाहते हुवे भी उस के आ'ज़ा इत़ाअ़त करते हैं और जो ह़राम खाता है, न चाहते हुवे भी उस के आ'ज़ा गुनाह करते हैं ।''(2)

एक रिवायत में है कि ''जो चाहे खा, उसी जैसे अ़मल करेगा (या'नी ह़लाल त़ाअ़त पर उभारता है तो ह़राम बुराई की दा'वत देता है) ।''(3)

एक आ़रिफ़ फ़रमाते हैं : ''लोगों का बिग़ैर तह़क़ीक़ो तफ़्तीश के एक लुक़्मा खाना उन्हें ह़क़ से मह़रूम और दाइरए विलायत से ख़ारिज कर देता है ।''

मुश्तबा और ह़राम खाने वाला अगर इबादत करे भी तो क़बूल नहीं होती क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

---

1 .....بداية الهداية للغزالى،آداب النوم،ص ١٠ .

2 .....المدخل،ج،ص ١٢ ،مفهوماً.

3 .....النصيحة الكافية،النصيحة لله،الفرع الرابع الباطل،ص ١٣ .

www.dawateislami.net

إِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللّٰهُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ۝ (پ ٦، المائدہ: ٢٧)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह उसी से क़बूल करता है जिसे डर है।

ह़दीसे मुबारक में है कि "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पाक है और पाक ही को क़बूल फ़रमाता है।"(1)

ऐ भाई ! ह़राम खाने से बच क्यूंकि ह़राम से बचना फ़र्ज़ है और शुबा वाला खाना खाने से भी हाथ खींच ले कि येह तक़्वा है। रिज़्क़े ह़लाल त़लब करना फ़र्ज़ है, फ़राइज़ के बा'द येह बहुत अहम फ़रीज़ा है और रिज़्क़े ह़लाल ह़ासिल कर के इस में से मियानारवी से खा और पहन और इसराफ़ न कर क्यूंकि ह़लाल इसराफ़ को नहीं उठाता। पेट भर कर खाना न खा क्यूंकि ह़लाल से पेट भरना हर बुराई की इब्तिदा है तो ह़राम का क्या आ़लम होगा। चुनान्चे,

पेट का क़ुफ़्ले मदीना लगाइये :

ह़ज़रते सय्यिदुना मिक़्दाम बिन मा'दी कर्ब رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं मैं ने **सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते हुवे सुना कि "किसी आदमी ने पेट से ज़ियादा बुरा बरतन कोई नहीं भरा(2), इन्सान के लिये चन्द लुक़्मे

---

(1) ......صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ، باب قبول الصدقۃ......الخ، الحدیث: ١٠١٥، ص ٥٠٦.

(2) ......**मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत** मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : "ज़ियादा पेट भरने से मुख़्तलिफ़ बीमारियां पैदा होती हैं। नव्वे फ़ीसदी बीमारियां पेट से होती हैं। फिर इस से सख़्त ग़फ़्लत पैदा होती है। दिल में नूर नहीं आता।" कुछ आगे जा कर फ़रमाते हैं : "सूफ़िया फ़रमाते हैं कि क़दरे भूका रहने में दस फ़ाइदे हैं जिस्मानी सिह़्ह़त, दिल की सफ़ाई त़बीअ़त की हश्शाशी बश्शाशी या'नी चुस्ती, दिल की नर्मी, त़बीअ़त में इन्किसार व इज्ज़, तकब्बुर व ग़ुरूर का टूटना, गुनाहों की कमी, दरमियानी दरजे की नींद........ **बक़िय्या अगले सफ़ह़े पर**

www.dawateislami.net

काफ़ी हैं जो उस की पीठ को सीधा रखें, फिर अगर ज़ियादा की ज़रूरत हो तो एक तिहाई खाने के लिये, एक तिहाई पानी के लिये और एक तिहाई सांस के लिये।"[1]

❁❁❁❁❁❁❁

बाब नम्बर 12 : इख़्लास का बयान

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त कुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाता है :

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ ﴿٥٦﴾ (پ٢٧، الذّٰريٰت:٥٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और मैं ने जिन्न और आदमी इतने ही लिये बनाए कि मेरी बन्दगी करें।

يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّ اَرْضِيْ وَاسِعَةٌ فَاِيَّايَ فَاعْبُدُوْنِ ﴿٥٦﴾ (پ٢١، العنكبوت:٥٦)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ मेरे बन्दो जो ईमान लाए बेशक मेरी ज़मीन वसीअ़ है तो मेरी ही बन्दगी करो।

प्यारे इस्लामी भाई ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे तौफ़ीक़ दे तुझ पर लाज़िम है कि इ़बादत में रुकावट डालने और इस राह में आड़े आने वाले उमूर से खुद को बचा कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत पर कमर बांध ले। और याद रख ! इ़बादत बिग़ैर इ़ल्म के दुरुस्त नहीं।

बक़िय्या ह़ाशिया......इ़बादात का शौक़, ज़िक्रे इलाही में लज़्ज़तो ज़ौक़ वग़ैरा।"

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 7,स. 28,29)

मदनी मश्वरा : भूक के फ़ज़ाइल जानने, कम खाने की आ़दत बनाने और ढेरों ढेर इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी, तिब्बी, शरई मा'लूमात का ख़ज़ाना पाने के लिये **"दा'वते इस्लामी"** के इशाअ़ती इदारे **"मक्तबतुल मदीना"** की मत़बूआ़ **1548** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"फ़ैज़ाने सुन्नत"** के बाब **"आदाबे त़आ़म"** और **"पेट का कुफ़्ले मदीना"** का मुत़ालआ़ बेहद मुफ़ीद रहेगा। **इ़ल्मिय्या**

[1] جامع الترمذی، کتاب الزهد، باب ماجاء فی راهية.....الخ، الحديث:٢٣٨٧، ج٤، ص١٦٨.

www.dawateislami.net

और बिग़ैर इख़्लास के इ़ल्मो इबादत का कुछ फ़ाएदा नहीं । लिहाज़ा तेरे लिये इख़्लास ज़रूरी है क्यूंकि येह आ'माल का मदार है और इसी अस्ल पर ए'तिमाद है ।

इख़्लास की ता'रीफ़ :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू क़ासिम अ़ब्दुल करीम हवाज़िन क़ुशैरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "इख़्लास येह है कि इबादत में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इ़लावा किसी और का इरादा न किया जाए । या'नी तू इबादत के ज़रीए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब ह़ासिल करने का इरादा करे कोई और मक़्सद न हो, न मख़्लूक़ के लिये बनावट हो न लोगों से ता'रीफ़ की ख़्वाहिश और न ही लोगों की मह़ब्बत हो बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के क़ुर्ब के इ़लावा कोई दूसरी बात पेशे नज़र न हो ।"

मज़ीद इरशाद फ़रमाते हैं : "येह कहना भी दुरुस्त है कि मख़्लूक़ की निगाहों से अपने अ़मल को पाक रखने का नाम इख़्लास है ।"[1]

❁❁❁❁❁❁❁

बाब नम्बर 13 : रियाकारी

शिर्के असग़र :

प्यारे इस्लामी भाई ! रियाकारी से बच क्यूंकि येह आ'माल को बरबाद और सवाब को ज़ाएअ़ कर देती, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी और ग़ज़ब का बाइ़स बनती है और हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस का नाम शिर्के असग़र रखा है ।[2]

---

1 .....الرسالة القشيرية،باب الاخلاص،ص٢٤٢.

2 .....المعجم الكبير،الحديث:١٠٤٣٠،ج٤،ص٢٥٣.

www.dawateislami.net

"रियाकार" क़ारी, शहीद और सख़ी का अन्जाम :

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मख़्लूक़ में सब से पहले तीन बन्दों को जहन्नम में डाला जाएगा : एक वोह क़ारी जिस ने इस लिये क़ुरआन पढ़ा कि लोग उसे क़ारी कहें, दूसरा वोह शहीद जिस ने इस लिये क़िताल किया कि लोग उसे बहादुर कहें और तीसरा वोह सख़ी जिस ने इस लिये माल सदक़ा किया कि लोग उसे सख़ी कहें।"(1)

रिया की ता'रीफ़ :

जिन आ'माल के ज़रीए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब हासिल होता है मसलन नमाज़, रोज़ा वग़ैरा उन के ज़रीए मख़्लूक़ के दिल में अपनी क़द्रो मन्ज़िलत चाहने का नाम रिया है।

रिया का इलाज :

जब तू अपने दिल में रिया महसूस करे तो अ़मल तर्क कर के इख़्लास त़लब न कर क्यूंकि इस त़रह़ तो तू शैत़ान को ख़ुश करेगा बल्कि तुझ पर ग़ौरो फ़िक्र करना ज़रूरी है कि जो आ'माल लोगों से छुप कर नहीं किये जा सकते जैसे ह़ज, जिहाद, त़लबे इल्म, नमाज़े बा जमाअ़त वग़ैरा तू उन्हें लोगों के सामने ही बजा ला जैसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हुक्म इरशाद फ़रमाया है। और (इख़्लास के लिये) अपने नफ़्स से जिहाद कर और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मदद त़लब कर।

और वोह आ'माल जो इस दरजे के न हों (या'नी जिन्हें छुप कर करना मुमकिन हो) जैसे रोज़ा, रात की इबादत, सदक़ा और तिलावत वग़ैरा तो ऐसे आ'माल को छुपाने में बहुत ज़ियादा कोशिश कर। क्यूंकि इन आ'माल को छुप कर करना बहर ह़ाल अफ़्ज़ल है सिवाए उस शख़्स

1 .....سنن النسائی، کتاب الجهاد، باب من قاتل لیقال.....الخ، الحدیث: ۳۱۳٤، ص ۵۱۰ مفهوماً.

www.dawateislami.net

कि जिसे रिया का ख़ौफ़ न हो और वोह जिसे उम्मीद हो कि उसे देख कर लोग उस की इक़्तिदा करेंगे और वोह इस का अह्ल भी हो ।

❁❁❁❁❁❁❁

बाब नम्बर 14 : ख़ुद पसन्दी

प्यारे इस्लामी भाई ! खुद पसन्दी से बच कि येह आ'माल बरबाद कर देती है । चुनान्चे,

ख़ुद पसन्दी की आफ़त :

सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइसे नुज़ूले सकीना صَلَّى اللہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "खुद पसन्दी नेकियों को इस त़रह़ खा जाती है जिस त़रह़ आग लकड़ी को खा जाती है ।"[1]

हलाक करने वाली चीज़ें :

एक रिवायत में है कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तीन चीज़ें हलाक कर देती हैं : (1)......ऐसा बुख़्ल जिस की पैरवी की जाए (2)......ऐसी नफ़्सानी ख़्वाहिश जिस पर अ़मल किया जाए और (3)......बन्दे का खुद पसन्दी में मुब्तला होना ।"[2]

ख़ुदपसन्दी की ता'रीफ़ :

बन्दे का ख़ुद को बड़ा समझना और अपने आ'माल को अच्छा ख़याल करना **ख़ुद पसन्दी** कहलाता है, इस की

1 ......تفسیر کشاف،پ۲۶،محمد،تحت الآیۃ۳۳،ج۴،ص۳۲۹.

2 ......المعجم الاوسط،الحدیث:۵۴۵۲،ج۴،ص۱۲۹.

www.dawateislami.net

वज्ह से अ़मल पर नाज़, लोगों पर बड़ाई और नफ़्स से राज़ी रहने की वबाएं जनम लेती हैं। और येह ऐसा ही है, जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़त़ाउल्लाह رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "ग़फ़्लत, शहवत और नफ़्स की कारस्तानियों पर राज़ी रहना तमाम बुराइयों की जड़ है।"(1)

जो अपने नफ़्स पर राज़ी होता है वोह अपने उ़यूब देखने से अन्धा हो जाता है और अपने उ़यूब से ग़ाफ़िल शख़्स कैसे फ़लाह़ पा सकता है ?

وَعَيْنُ الرِّضَا عَنْ كُلِّ عَيْبٍ كَلَيْلَةٍ وَلٰكِنْ عَيْنُ السُّخْطِ تُبْدِى الْمَسَاوِيَا

तर्जमा : खुश नज़्री हर ऐ़ब से रात की त़रह़ है लेकिन गु़स्से की नज़्र बुराइयों को ज़ाहिर कर देती है।(2)

❁❁❁❁❁❁❁

बाब नम्बर 15 : ## दुन्या की मह़ब्बत

बुराइयों की जड़ :

सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "दुन्या की मह़ब्बत हर बुराई की जड़ है।"(3)

येह ह़क़ीक़त है कि दुन्या की मह़ब्बत हर ख़त़ा की जड़, हर आफ़त की अस्ल, हर मुसीबत की बुन्याद, हर फ़ित्ने का सर चश्मा और हर मशक़्क़त का मर्कज़ है और येह ऐसी मुसीबत है जिस का नुक़्सान इस

---

1 ...ايقاظ الهم شرح متن الحكم،الجزء١،ص٥٠.

2 ...الرسالة القشيريه،باب الصحبة،ص٣٢٦.

3 ...مشكاةالمصابيح،كتاب الرقاق،الفصل الثالث الحديث:٥٢١٣،ج٢،ص٢٥٠.

www.dawateislami.net

ज़माने में फैल चुका, जिस का शर छा चुका और जिस का ख़त़रा बहुत बढ़ चुका है, मह़ब्बते दुन्या के अन्धेरे ने हर ख़ासो आ़म को ढांप लिया है। फिर भी लोग शर्मो आ़र मह़सूस किये बिग़ैर बर्मला इस की मह़ब्बत का इज़्हार करते हैं। दुन्या की मह़ब्बत लोगों के दिलों में कामिल त़ौर पर घर कर चुकी है। दुन्या सजाने और इस का साज़ो सामान इकठ्ठा करने की अन्धी ह़िर्स, इन्हें दुन्या से मह़ब्बत के नतीजे में मिली है। उन की दौड़ धूप दिन रात शुबहात और ह़राम को शिकार करने में ही सर्फ़ हो रही है। गोया यूं लगता है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन पर दुन्या को सजाना, इसे आबाद करना ऐसे ही फ़र्ज़ किया है जैसा कि नमाज़ और रोज़े।

इसी मह़ब्बत की वज्ह से दीन के निशान मिट गए, यक़ीन के अन्वार मांद पड़ गए, नसीह़त करने वालों की ज़बानें बन्द हो गईं। इसी की वज्ह से हिदायत के रास्ते बन्द और गुमराही के रास्ते खुल गए। रब्बे लम यज़ल की क़सम ! दुन्या की मह़ब्बत अन्धा और बहरा फ़ित्ना और ऐसा सियाह अन्धेरा है कि जिस में न तो कोई दुआ़ क़बूल होती है और न ही किसी पुकारने वाले की पुकार सुनी जाती है।

इस उम्मत का बछड़ा :

सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशादे ह़क़ीक़त बुन्याद है : “हर उम्मत के लिये कोई न कोई चीज़ फ़ित्ना हुई है और मेरी उम्मत का फ़ित्ना मालो दौलत है और हर उम्मत के लिये एक बछड़ा हुवा है और मेरी उम्मत का बछड़ा दिरहमो दीनार हैं।”(1)

---

(1)......جامع الترمذی ابواب الزھد، باب ماجاء ان فتنة......الخ،الحدیث:۲۳۴۳،ج۴،ص۱۵۰

فردوس الاخبار بماثور الخطاب،الحدیث:۵۰۱۹،ج۳،ص۳۳۸۔

www.dawateislami.net

ह़दीस की तश्रीह़ :

हर उम्मत में ऐसी चीज़ ज़रूर रही है जिस की वज्ह से लोग **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत से यक्सर ग़ाफ़िल हो गए जैसा कि बनी इस्राईल मा'बूदे ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत छोड़ कर बछड़े की पूजापाट करने लग गए थे।

❁❁❁❁❁❁❁

ख़ातिमे की तम्हीद

दुन्या और त़लबगाराने दुन्या की मज़म्मत में वारिद आयात, अह़ादीसो अक़्वाल पर मुश्तमिल इस रिसाले के "ख़ातिमे" से क़ब्ल अच्छा होगा कि हम एक ऐसा क़ाइ़दा बयान करें जिस पर ए'तिमाद हो और उस की त़रफ़ रुजूअ़ किया जाएगा। और तौफ़ीक़ देने वाली ज़ात **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की है।

दुन्या के तीन ह़िस्से :

दुन्या के तीन ह़िस्से हैं :

(1).....पहला वोह जिस में सवाब है (2).....दूसरा वोह जिस का ह़िसाब है और (3).....तीसरा वोह जिस में अ़ज़ाब है।

वज़ाह़त :

सवाब वाला ह़िस्सा वोह है जिस के वसीले से बन्दा भलाई तक पहुंचता और बुराई से नजात पाता है। येह मोमिन की सुवारी, आख़िरत की खेती और किफ़ायत करने वाली ह़लाल रोज़ी है।

ह़िसाब वाला ह़िस्सा वोह है जिस की वज्ह से तू किसी हुक्म की अदाएगी से ग़ाफ़िल न हो और इस की त़लब में किसी ना जाइज़ काम का इर्तिकाब न करे और इस के अह्ल वोह अग़निया हैं जिन का ह़िसाब त़वील होगा, फ़ुक़रा इन से 500 साल पहले जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे।

www.dawateislami.net

और अ़ज़ाब वाला ह़िस्सा वोह है जिस में बन्दा तमाम ज़रूरी उमूर की अदाएगी से दूर हो कर गुनाहों में मुब्तला हो जाता है। जो इस ह़िस्से का मालिक बनेगा येह उस को आग की त़रफ़ बढ़ाएगा और ख़सारे के घर में धकेल देगा। चुनान्चे,

दुन्यादार, दुन्या के साथ जहन्नम में :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : (बरोज़े क़ियामत) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ दुन्या को जहन्नम में जाने का हुक्म देगा तो वोह अ़र्ज़ करेगी : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरा गुरौह और मेरे चाहने वाले ?" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : "इस के गुरौह और चाहने वालों को भी इस के साथ जहन्नम में डाल दो।" पस उन्हें भी जहन्नम में डाल दिया जाएगा।[1]

त़लबगाराने दुन्या की अक़्साम :

दुन्या के त़लबगारों की मुख़्तलिफ़ अक़्साम हैं :

(1)......वोह लोग जो दुन्या का माल इस निय्यत से ह़ासिल करते हैं कि रिश्तेदारों से सिलए रेह़मी करेंगे और ग़रीबों की मदद करेंगे उन का शुमार सख़िय्यों में होता है, अगर उन का अ़मल उन की निय्यत के मुत़ाबिक़ हो तो अज्र पाएंगे लेकिन इस के बा वुजूद उन में ह़िक्मत नाम की कोई चीज़ नहीं क्यूंकि साह़िबे ह़िक्मत वोह होता है जो किसी ऐसी चीज़ की ख़्वाहिश न करे जिस के बारे में उसे पता न हो कि उसे पा लेने के बा'द उस का क्या ह़ाल होगा ? लिहाज़ा इस निय्यत से माल ह़ासिल करने वाले "सा'लबा" के क़िस्से से इब्रत ह़ासिल करें जिस की त़रफ़ क़ुरआने मजीद में इशारा किया गया है। चुनान्चे,

---

1 ......قوت القلوب،الفصل الثانی و الثلاثون ......الخ،ذکرماهیة الدنیاو کیفیة......الخ، فصل اخر،ج١،ص٤٤٦،بتغیرٍقلیل.

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَ مِنْهُمْ مَّنْ عٰهَدَ اللّٰهَ لَىٕنْ اٰتٰىنَا مِنْ فَضْلِهٖ لَنَصَّدَّقَنَّ وَ لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الصّٰلِحِیْنَ ﴿۷۵﴾

(پ ١٠،التوبة:٧٥)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और उन में कोई वोह हैं जिन्हों ने* ***अल्लाह*** *से अ़ह्द किया था कि अगर हमें अपने फ़ज़्ल से देगा तो हम ख़ैरात करेंगे और हम ज़रूर भले आदमी हो जाएंगे ।* (1)

---

(1)......सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی इस आयत के तह़त **तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में फ़रमाते हैं :

शाने नुज़ूल : सा'लबा बिन (अबी) ह़ातिब ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से दरख़्वास्त की, कि उस के लिये मालदार होने की दुआ़ फ़रमाएं, हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ऐ सा'लबा थोड़ा माल जिस का तू शुक्र अदा करे उस बहुत से बेहतर है जिस का शुक्र अदा न कर सके ।" दोबारा फिर सा'लबा ने ह़ाज़िर हो कर येही दरख़्वास्त की और कहा : "उसी की क़सम, जिस ने आप को सच्चा नबी बना कर भेजा कि अगर वोह मुझे माल देगा तो मैं हर ह़क़ वाले का ह़क़ अदा करूंगा ।" हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुआ़ फ़रमाई । **अल्लाह** तआ़ला ने उस की बकरियों में बरकत फ़रमाई और इतनी बढ़ीं कि मदीने में उन की गुंजाइश न रही तो सा'लबा उन को ले कर जंगल में चला गया और जुमुआ़ व जमाअ़त की ह़ाज़िरी से भी मह़रूम हो गया । हुज़ूर ने उस का ह़ाल दरयाफ़्त फ़रमाया तो सह़ाबा ने अ़र्ज़ किया कि "उस का माल बहुत कसीर हो गया है और अब जंगल में भी उस के माल की गुंजाइश न रही ।" हुज़ूर ने फ़रमाया कि "सा'लबा पर अफ़्सोस ।" फिर जब हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ज़कात के तह़सील करने वाले भेजे, लोगों ने उन्हें अपने अपने सदक़ात दिये । जब सा'लबा से जा कर उन्हों ने सदक़ा मांगा उस ने कहा : "येह तो टेक्स हो गया, जाओ मैं सोच लूं ।" जब येह लोग रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में वापस आए तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन के कुछ अ़र्ज़ करने से क़ब्ल दो मरतबा फ़रमाया : "सा'लबा पर अफ़्सोस ।" तो येह आयत नाज़िल हुई । फिर सा'लबा सदक़ा ले कर ह़ाज़िर हुवा तो सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**अल्लाह** तआ़ला ने मुझे इस के क़बूल फ़रमाने की मुमानअ़त फ़रमा दी ।" वोह अपने सर पर ख़ाक डाल कर वापस हुवा । फिर इस सदक़े को ख़िलाफ़ते सिद्दीक़ी में ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के पास लाया उन्हों ने भी इसे क़बूल न फ़रमाया फिर ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी में ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के पास लाया उन्हों ने भी क़बूल न फ़रमाया और ख़िलाफ़ते उ़स्मानी में येह शख़्स हलाक हो गया ।"

www.dawateislami.net

(2).....दुन्या के त़लबगारों की दूसरी क़िस्म में वोह लोग दाख़िल हैं जिन का दुन्या से मक़्सद ख़्वाहिशात की तक्मील और लज़्ज़ाते दुन्या से लुत़्फ़ अन्दोज़ होना होता है। ऐसों का शुमार जानवरों में किया गया है और येह चोपायों के जुमरे में दाख़िल हैं। इन का और इन जैसों का बयान कुरआन में यूं किया गया है। चुनान्चे,

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

اَمْ تَحْسَبُ اَنَّ اَكْثَرَهُمْ يَسْمَعُوْنَ اَوْ يَعْقِلُوْنَ ؕ اِنْ هُمْ اِلَّا كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ سَبِيْلًا ﴿۴۴﴾

(پ۱۹، الفرقان:٤٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *या येह समझते हो कि उन में बहुत कुछ सुनते या समझते हैं वोह तो नहीं मगर जैसे चोपाए बल्कि इन से भी बदतर गुमराह।* [1]

(3).....और तीसरी क़िस्म में वोह लोग आते हैं जो दूसरों पर फ़ख़्र करने और बड़ा मालदार बन कर नुमायां नज़र आने के लिये माल ह़ासिल करते हैं। येह अह़मक़ों, मग़रूरों बल्कि मरदूदों और मलऊ़नों में शुमार होते हैं। चुनान्चे,

---

1....सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى इस आयत के तह़त **तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में इरशाद फ़रमाते हैं :

''या'नी वोह अपने शिद्दते इनाद से न आप की बात सुनते हैं न दलाइलो बराहीन को समझते हैं बहरे और ना समझ बने हुवे हैं। क्यूंकि चोपाए भी अपने रब की तस्बीह़ करते हैं और जो इन्हें खाने को दे उस के मुत़ीअ़ रहते हैं और एह़सान करने वाले को पहचानते हैं और तकलीफ़ देने वाले से घबराते हैं, नाफ़ेअ़ की त़लब करते हैं, मुज़िर से बचते हैं, चरागाहों की राहें जानते हैं, येह कुफ़्फ़ार इन से भी बदतर हैं कि न रब की इत़ाअ़त करते हैं न उस के एह़सान को पहचानते हैं, न शैत़ान जैसे दुश्मन की ज़रर रसानी को समझते हैं, न सवाब जैसी अ़ज़ीमुल मन्फ़अ़त चीज़ के त़ालिब हैं, न अ़ज़ाब जैसे सख़्त मुज़िर मोहलिका से बचते हैं।''

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

قَدْ عَلِمَ كُلُّ اُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ؕ

(پ ١، البقرة: ٦٠)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *हर गुरौह ने अपना घाट पहचान लिया।*

وَ رَبُّكَ يَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُوْرُهُمْ وَ مَا يُعْلِنُوْنَ ﴿٦٩﴾

(پ ٢٠، القصص: ٦٩)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और तुम्हारा रब जानता है जो उन के सीनों मे छुपा है और जो ज़ाहिर करते हैं।*

तो ऐ भाई ! अपने नफ़्स को नसीहत कर और इस के धोके से बच क्यूंकि येह तुझे ऐसे काम की त़रफ़ बुलाता है जिसे करने की तेरी निय्यत नहीं। फिर तू ऐसा हो जाएगा कि (आ'माल पर भरोसा करते हुवे) नाकामी का शिकार होगा और (आख़िरत में नेकियों का) दा'वा करेगा (लेकिन फ़सादे निय्यत की वज्ह से नेकियों के मुआ़मले में तू तही दामान और मुफ़्लिस होगा) और दुन्या व आख़िरत का ख़सारा तेरा मुक़द्दर बन जाएगा। चुनान्चे,

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِيْنُ ﴿١٥﴾

(پ ٢٣، الزمر: ١٥)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *येही खुली हार है।*

जब येह साबित हो गया तो अब हम ख़ातिमे की त़रफ़ आते हैं।

❋❋❋❋❋❋❋

www.dawateislami.net

ख़ातिमा

इस में इरशादाते ख़ुदावन्दी व फ़रामीने मुस्त़फ़ा और अक़्वाले औलियाए किराम बयान किये जाएंगे जिन में दुन्या की बे सबाती, इस के ह़क़ीरो ज़लील होने और इस के धोके में मुब्तला हो कर इस के फ़ना होने को मुह़ाल समझने वाले के अह़मक़ व बे वुक़ूफ़ होने को वाज़ेह़ किया गया है। नीज़ जो इन में ग़ौरो फ़िक्र करेगा येह उसे दुन्या से बे रग़बती पर आमादा करेंगे जब कि वोह दिल रखता हो या कान लगाता हो और तवज्जोह करता हो। चुनान्चे,

इरशादे ख़ुदावन्दी

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿1﴾ اِنَّمَا مَثَلُ الْحَیٰوةِ الدُّنْیَا كَمَآءٍ اَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ مِمَّا یَاْكُلُ النَّاسُ وَالْاَنْعَامُ ؕ حَتّٰۤى اِذَاۤ اَخَذَتِ الْاَرْضُ زُخْرُفَهَا وَازَّیَّنَتْ وَظَنَّ اَهْلُهَاۤ اَنَّهُمْ قٰدِرُوْنَ عَلَیْهَاۤ ۙ اَتٰىهَاۤ اَمْرُنَا لَیْلًا اَوْ نَهَارًا فَجَعَلْنٰهَا حَصِیْدًا كَاَنْ لَّمْ تَغْنَ بِالْاَمْسِ ؕ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *दुन्या की ज़िन्दगी की कहावत तो ऐसी ही है जैसे वोह पानी कि हम ने आस्मान से उतारा तो उस के सबब ज़मीन से उगने वाली चीज़ें सब घनी हो कर निकलीं जो कुछ आदमी और चोपाए खाते हैं यहां तक कि जब ज़मीन ने अपना सिंगार ले लिया और ख़ूब आरास्ता हो गई और उस के मालिक समझे कि येह हमारे बस में आ गई हमारा हुक्म उस पर आया रात में या दिन में तो हम ने उसे कर दिया काटी हुई गोया कल थी ही नहीं हम यूंही आयतें मुफ़स्सल बयान*

www.dawateislami.net

الْاٰیٰتِ لِقَوْمٍ یَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿۲۴﴾
(پ۱۱،یونس ۲۴)

करते हैं ग़ौर करने वालों के लिये।[1]

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक हम ने ज़मीन का सिंगार किया जो कुछ उस पर है कि उन्हें आज़माएं उन में किस के काम बेहतर हैं और बेशक जो कुछ उस पर है एक दिन हम उसे पट पर मैदान (सफ़ेद ज़मीन) कर छोड़ेंगे।

﴾2﴿ اِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْاَرْضِ زِیْنَةً لَّهَا لِنَبْلُوَهُمْ اَیُّهُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ﴿۷﴾ وَ اِنَّا لَجٰعِلُوْنَ مَا عَلَیْهَا صَعِیْدًا جُرُزًا ﴿۸﴾
(پ۱۵،الکھف:۷،۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और ऐ सुनने वाले अपनी आंखें न फैला उस की त़रफ़ जो हम ने काफ़िरों के जोड़ों को बरतने के लिये दी है जितनी दुन्या की ताज़गी कि हम उन्हें इस के सबब फ़ितना में डालें और तेरे रब का रिज़्क़ सब से अच्छा और सब से देर पा है।[2]

﴾3﴿ وَلَا تَمُدَّنَّ عَیْنَیْكَ اِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِهٖۤ اَزْوَاجًا مِّنْهُمْ زَهْرَةَ الْحَیٰوةِ الدُّنْیَا ۙ۬ لِنَفْتِنَهُمْ فِیْهِ ؕ وَرِزْقُ رَبِّكَ خَیْرٌ وَّ اَبْقٰى ﴿۱۳۱﴾
(پ۱۶،طٰهٰ:۱۳۱)

1.....सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی इस आयत के तह़त फ़रमाते हैं : "येह उन लोगों के ह़ाल की एक तमसील है जो दुन्या के शेफ़्ता हैं और आख़िरत की उन्हें कुछ परवाह नहीं इस में बहुत दिल पज़ीर त़रीक़े पर ख़ात़िर गुज़ीं किया गया है कि दुन्यवी ज़िन्दगानी उम्मीदों का सब्ज़ बाग़ है इस में उ़म्र खो कर जब आदमी उस ग़ायत पर पहुंचता है जहां उस को ह़ुसूले मुराद का इत़मीनान हो और वोह कामयाबी के नशे में मस्त हो, अचानक उस को मौत पहुंचती है और वोह तमाम ने'मतों और लज़्ज़तों से मह़रूम हो जाता है। (ह़ज़रते सय्यिदुना) क़तादा (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ) ने कहा कि दुन्या का त़लबगार जब बिल्कुल बे फ़िक्र होता है उस वक़्त उस पर अ़ज़ाबे इलाही आता है और उस का तमाम सरो सामान जिस से उस की उम्मीदें वाबस्ता थीं ग़ारत हो जाता है।"

2 ......मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस आयत के तह़त फ़रमाते हैं : "या'नी काफ़िरों की दौलत व औलाद वग़ैरा को लालच व वुक़्अ़त की नज़र से न देखो। येह रह़मत की शक्ल में अ़ज़ाब है। इस से मा'लूम हुवा कि मोमिन के मालो दौलत पर ग़िब्त़ा व रश्क करना जाइज़ है।"

www.dawateislami.net

﴾4﴿ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الْاٰخِرَةِ نَزِدْ لَهٗ فِيْ حَرْثِهٖ ۚ وَ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا وَ مَا لَهٗ فِي الْاٰخِرَةِ مِنْ نَّصِيْبٍ ﴿۲۰﴾ (پ۲۵، الشوریٰ: ۲۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जो आख़िरत की खेती चाहे हम उस के लिये उस की खेती बढ़ाएं और जो दुन्या की खेती चाहे हम उसे उस में से कुछ देंगे और आख़िरत में उस का कुछ हिस्सा नहीं।[1]

﴾5﴿ اِعْلَمُوْۤا اَنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّ لَهْوٌ وَّ زِيْنَةٌ وَّ تَفَاخُرٌۢ بَيْنَكُمْ وَ تَكَاثُرٌ فِي الْاَمْوَالِ وَ الْاَوْلَادِ ؕ كَمَثَلِ غَيْثٍ اَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُوْنُ حُطَامًا ؕ وَ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۙ وَّ مَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَ رِضْوَانٌ ؕ وَ مَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَاۤ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ﴿۲۰﴾ (پ۲۷، الحدید: ۲۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जान लो कि दुन्या की ज़िन्दगी तो नहीं मगर खेलकूद और आराइश और तुम्हारा आपस में बड़ाई मारना और माल और औलाद में एक दूसरे पर ज़ियादती चाहना उस मींह की त़रह़ जिस का उगाया सब्ज़ा किसानों को भाया फिर सूखा कि तू उसे ज़र्द देखे फिर रोंदन (पामाल किया हुवा) हो गया और आख़िरत में सख़्त अ़ज़ाब है और **अल्लाह** की त़रफ़ से बख़्शिश और उस की रिज़ा और दुन्या का जीना तो नहीं मगर धोके का माल।[2]

1.....मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस आयत के तह़्त फ़रमाते हैं : "क्यूंकि उस ने आख़िरत के लिये आ'माल किये ही नहीं, मा'लूम हुवा कि रियाकार सवाब से मह़रूम रहता है मगर शरअ़न उस का अ़मल दुरुस्त है, रिया की नमाज़ से फ़र्ज़ अदा हो जाएगा, सवाब न मिलेगा।"

2.....मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : "इस से मा'लूम हुवा कि ह़याते दुन्या वोह ज़िन्दगी है जो नफ़्से अम्मारा के लिये सर्फ़ की जाए। इस सूरत में ज़िन्दगी के सारे काम लग़्व और खेल हैं। मगर जो ज़िन्दगी तोशए आख़िरत जम्अ़ करने का ज़रीआ़ बने वोह ह़याते दुन्या नहीं बल्कि ह़याते आख़िरत है। शैत़ान की नेकियां दुन्या थीं, ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की ख़त़ा भी दुन्या नहीं वोह मक़्बूले तौबा और बुलन्दिये दरजात का ज़रीआ़ बनी। **ख़याल रहे!** कि लह्वो ला'ब वोह है जिस में मश्ग़ूलिय्यत ज़ियादा हो मगर नतीजा कुछ न हो।"

www.dawateislami.net

﴾6﴿ فَاَمَّا مَنْ طَغٰىۙ﴿۳۷﴾ وَ اٰثَرَ الْحَیٰوةَ الدُّنْیَاۙ﴿۳۸﴾ فَاِنَّ الْجَحِیْمَ هِیَ الْمَاْوٰىؕ﴿۳۹﴾ (پ۳۰، النزعت:۳۷تا۳۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो वोह जिस ने सरकशी की, और दुन्या की ज़िन्दगी को तरजीह़ दी, तो बेशक जहन्नम ही उस का ठिकाना है। (1)

फ़रामीने मुस्त़फ़ा

दुन्या की हैसिय्यत :

﴾1﴿......सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशाद है : "दुन्या ला'नती है और जो इस में है वोह ला'नती है सिवाए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र, आ़लिम और त़ालिबे इ़ल्म के। अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक दुन्या की हैसिय्यत मच्छर के पर बराबर भी होती तो इस में से किसी काफ़िर को पानी का एक घूंट न पिलाता।"(2)

दुन्या मुर्दार है :

﴾2﴿......सरकारे वाला तबार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "दुन्या सड़ा हुवा मुर्दार है।"(3)

---

1 ......मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : "या'नी जो शख़्स अम्बिया की इत़ाअ़त से सर फेरे और आख़िरत के मुक़ाबिल दुन्यावी ज़िन्दगी को इख़्तियार करे वोह दाइमी जहन्नमी है क्यूंकि वोह काफ़िर है, ख़याल रहे कि दुन्यावी ज़िन्दगी वोह है जो नफ़्सानी ख़्वाहिशात में ख़र्च हो। और जो ज़िन्दगी आख़िरत की तय्यारी में सर्फ़ हो वोह दुन्या की ज़िन्दगी नहीं अगर्चे दुन्या में ज़िन्दगी हैं। दुन्या की ज़िन्दगी और है, दुन्या में ज़िन्दगी कुछ और। दुन्या की ज़िन्दगी फ़ानी है मगर जो दुन्या में ज़िन्दगी आख़िरत के लिये है, फ़ना नहीं।"

2 ......سنن ابن ماجه، کتاب الزهد،باب مثل الدنیا،الحدیث:۴۱۱۰،۴۱۱۲،ج۴،ص۴۲۷،۴۲۸ .

3 ......حلیة الاولیاء،الرقم۴۰۳یوسف بن اسباط،الحدیث:۱۲۱۲۳،ج۸،ص۲۶۰.

www.dawateislami.net

दुन्या ग़लाज़त की त़रह़ है :

﴾3﴿.....ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इब्ने आदम की ग़लाज़त को दुन्या की मिसाल बनाया ।"(1)

दुन्या व आख़िरत की मिसाल :

﴾4﴿.....हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "दुन्या आख़िरत के मुक़ाबिल ऐसी है जैसे तुम में से कोई अपनी उंगली समन्दर में डाले फिर देखे कि वोह कितना पानी ले कर लौटती है ।"(2)

क़ियामत की ह़सरत :

﴾5﴿.....हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "क़ियामत के दिन हर एक को येह ह़सरत होगी कि काश ! उसे दुन्या में थोड़ी रोज़ी भी न दी होती ।"

दुश्वार गुज़ार घाटी :

﴾6﴿.....नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बेशक तुम्हारे सामने एक सख़्त दुश्वार गुज़ार घाटी है, जिसे सिर्फ़ हल्के बोझ वाले ही उ़बूर कर सकेंगे ।" एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या मैं हल्कों में से हूं ?"

---

1 .....شعب الايمان للبيهقى،باب فى المطاعم،الحديث:٥٦٥٣،ج٥،ص٢٩.

2 .....سنن ابن ماجه،كتاب الزهد،باب مثل الدنيا،الحديث:٤١٠٨،ج٤،ص٤٢٦.

www.dawateislami.net

इरशाद फ़रमाया : "क्या तुम्हारे पास आज के दिन की रोज़ी है?" उस ने अ़र्ज़ की : "जी हां।" फिर इरशाद फ़रमाया : "क्या कल के खाने के लिये भी कुछ है?" अ़र्ज़ की : "नहीं।" प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अगर तुम्हारे पास कल के खाने के लिये भी कुछ होता तो तुम हल्के बोझ वालों में से न होते।"(1)

दुन्या और औ़रतों से बचो :

﴿7﴾.....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "दुन्या शीरीं, सर सब्ज़ो शादाब है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें इस में ख़लीफ़ा बनाएगा फिर देखेगा तुम कैसे अ़मल करते हो। लिहाज़ा दुन्या से बचो और औ़रतों से डरो! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम! मुझे तुम पर तंगदस्ती से ख़ौफ़ नहीं बल्कि मैं तुम पर इस बात से डरता हूं कि तुम पर दुन्या फैला दी जाएगी जैसे तुम से पहले वालों पर फैला दी गई थी। फिर तुम इस में रग़बत कर जाओ जैसे वोह लोग रग़बत रखते थे और येह तुम्हें वैसे ही हलाक कर दे जैसे उन्हें हलाक किया।"(2)

दुन्या की ज़ेबो ज़ीनत का ख़ौफ़ :

﴿8﴾.....हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मैं अपने बा'द तुम पर इस बात से ख़ौफ़ करता हूं कि दुन्या की ज़ेबो ज़ीनत और तरो ताज़गी तुम पर खोल दी जाएगी।"(3)

---

1 .....المعجم الاوسط، الحديث:٤٨٠٩،ج٣،ص٥٢٣

2 ...سنن ابن ماجه، كتاب الفتن،فتنة الماء،الحديث:٤٠٠٠،٤٩٩٧،ج٤،ص٣٥٦،٣٥٧.

3 ..صحيح مسلم، كتاب الزكاة،باب تخوف مايخرج.....الخ، الحديث:١٠٥٢،ص٥٢٣.

www.dawateislami.net

दुन्या जादूगर है :

﴾9﴿.....हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "दुन्या से डरो ! येह हारूत मारूत से भी ज़ियादा जादूगर है।"(1)

काफ़िर की जन्नत :

﴾10﴿.....हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "दुन्या मोमिन के लिये क़ैदख़ाना और काफ़िर के लिये जन्नत है।"(2)

मोमिन को दुन्या से दूर रखा जाता है :

﴾11﴿.....सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने मोमिन बन्दे को दुन्या से इस त़रह़ दूर रखता है जैसे कोई शफ़ीक़ चरवाहा अपनी बकरियों को हलाकत में डालने वाली चरागाह से दूर रखता है।"(3)

हुब्बे दुन्या का गुनाह :

﴾12﴿.....सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गंजीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "दुन्या की मह़ब्बत एक ऐसा गुनाह है जो (बिग़ैर तौबा के) मुआ़फ़ नहीं होता।"(4)

---

1 .....شعب الايمان للبيهقى،باب فى الزهدوقصرالامل،الحديث:١٠٥٠٤،ج٧،ص٣٣٩.

2 .....سنن ابن ماجه،كتاب الزهد،باب مثل الدنيا،الحديث:٤١١٣،ج٤،ص٤٢٨.

3 .....شعب الايمان للبيهقى،باب فى الزهدوقصرالامل،الحديث:١٠٤٥١،ج٧،ص٣٢١.

4 .....فردوس الاخبار بمأثور الخطاب،الحديث:٣١٦٧،ج٢،ص٢٤٨،مفهومًا.

www.dawateislami.net

बाक़ी को फ़ानी पर तरजीह़ दो :

﴾13﴿.....हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो अपनी आख़िरत से मह़ब्बत करता है वोह अपनी दुन्या को नुक़्सान पहुंचाता है और जो अपनी दुन्या से मह़ब्बत करता है वोह आख़िरत का नुक़्सान उठाता है। पस तुम बाक़ी रहने वाली को फ़ना होने वाली पर तरजीह़ दो।"(1)

दुन्या की कड़वाहट, आख़िरत की मिठास :

﴾14﴿.....शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "दुन्या की कड़वाहट आख़िरत की ह़लावत है और दुन्या की ह़लावत आख़िरत की कड़वाहट है।"(2)

दुन्या में मालदार आख़िरत में कंगाल :

﴾15﴿.....सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "कसीर मालो दौलत वाले क़ियामत के दिन तही दामां (कंगाल) होंगे सिवाए उस के जिस ने ज़ियादा से ज़ियादा माल राहे ख़ुदा में ख़र्च किया होगा।"(3)

तिहामा पहाड़ के बराबर नेकियां :

﴾16﴿.....हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद

---

1 .....شعب الایمان للبیھقی،باب فی الزھدوقصرالامل،الحدیث:۱۰۳۳۷،ج۷،ص۸۸.

2 .....شعب الایمان للبیھقی،باب فی الزھدوقصرالامل،الحدیث:۱۰۳۳۶ج۷،ص۸۸.

3 .....کنزالعمال،کتاب الاخلاق،باب الزھد،الحدیث:۶۲۷۹،ج۳،ص۹۳.

www.dawateislami.net

फ़रमाया : "क़ियामत के दिन कुछ लोगों को लाया जाएगा जिन के आ'माल "**तिहामा**" पहाड़ के बराबर होंगे लेकिन उन्हें गुबार के बिखरे हुवे बारीक ज़र्रे कर दिया जाएगा और फिर उन लोगों को जहन्नम में डाले जाने का हुक्म दिया जाएगा ह़ालांकि वोह नमाज़ी, रोज़ादार बल्कि रातों को इ़बादत करने वाले होंगे। लेकिन जब उन पर दुन्या आश्कार होती तो वोह उस पर झपट पड़ते थे।"[(1)]

मेरी और दुन्या की मिसाल :

﴾17﴿......शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहि़बे मुअ़त्त़र पसीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मुझे दुन्या से क्या तअ़ल्लुक़ ?" मेरी और दुन्या की मिसाल उस मुसाफ़िर की त़रह़ है जो गर्मी वाले दिन में चले, फिर एक दरख़्त के नीचे कुछ देर लेट जाए फिर (दरख़्त को छोड़ कर आगे) चला जाए [(2)]।"[(3)]

1......احیاء علوم الدین، کتاب ذم الدنیا، ج۳، ص۲۵۲۔
حلیة الاولیاء، الرقم۲۹ سالم مولی ابی حذیفة، الحدیث:۵۷۵، ج۱، ص۳۳۳.

2......मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : "या'नी जैसे येह सुवार इतनी देर आराम के लिये अपना बिस्तर नहीं खोलता, बल्कि ज़मीन पर ही लेट कर धूप ढल जाने पर चल देता है, ऐसे ही हमारा ह़ाल है, कि हम कौनैन के मालिक हैं, मगर अपने लिये कुछ नहीं रखते। लिहाज़ा ह़दीस का मत़लब येह नहीं कि हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने पर्दा फ़रमाने के बा'द दुन्या को और अपनी उम्मत को छोड़ दिया, इन सब से बे तअ़ल्लुक़ हो गए। अगर हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم हम को छोड़ दें, तो हम हलाक हो जाएं, सूरज दुन्या को छोड़ दे, तो दुन्या अन्धेरी हो जावे, रूह़ बदन को छोड़ दे तो बदन मर जावे, जड़ दरख़्त को छोड़ दे तो दरख़्त सूख जावे, अगर हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم दुन्या को छोड़ दें, तो कोई "अल्लाह-अल्लाह" कहने वाला न रहे।" (मिरआतुल मनाजीह, जि. 7, स. 65)

3......شعب الایمان للبیهقی، الحدیث:۱۰۴۵۰، ج۲، ص۱۶۷.

www.dawateislami.net

गोया पूरी दुन्या मिल गई :

﴾18﴿.....नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो तुम में से इस ह़ाल में सुब्ह़ करे कि उस के दिल में अम्नो अमान हो, जिस्म में तन्दुरुस्ती हो और उस के पास उस दिन का खाना भी हो तो गोया उस के लिये दुन्या पूरी जम्अ़ कर दी गई ।"(1)

﴾19﴿.....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मुझे दुन्या वीरान करने के लिये भेजा गया है इस लिये जो इसे आबाद करेगा वोह मुझ से नहीं (या'नी मेरे त़रीक़े पर नहीं) ।"(2)

अच्छी निय्यत का फल :

﴾20﴿.....हुज़ूरे अन्वर, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस की निय्यत आख़िरत का ह़ुसूल हो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के दिल को ग़िना से भर देता और उस के मुआ़मलात को जम्अ़ फ़रमा देता है और दुन्या उस के पास ज़लीलो ख़्वार हो कर आती है और जिस की निय्यत सिर्फ़ दुन्या का ह़ुसूल ही हो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे तंगदस्ती में मुब्तला कर देता और उस के मुआ़मलात को मुन्तशिर फ़रमा देता है और उसे दुन्या में से उतना ही मिलता है जितना कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस के मुक़द्दर में लिख दिया है ।"(3)

---

1 .....جامع الترمذی،ابواب الزهد،باب(٣٩)،الحدیث:٢٣٥٣،ج٤،ص١٥٥.

2 .....الترغیب والترهیب،کتاب التوبة والزهد،الحدیث:٦٠،ج٤،ص٨٦،دون قوله فمن عمرها.....الخ.

3 .....المسنداللامام احمدبن حنبل،حدیث زیدبن ثابت،الحدیث:٢١٦٤٦،ج٨، ص١٤٠،بتغیرٍ قلیلٍ.

www.dawateislami.net

दुन्या में ऐसे रहो :

﴾21﴿......हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले मोहूतशम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "दुन्या में ऐसे रहो जैसे तुम मुसाफ़िर या रास्ता उ़बूर करने वाले हो और अपने आप को मुर्दों में शुमार करो ।"(1)

हर दिल अ़ज़ीज़ बनने का नुस्ख़ा :

﴾22﴿......हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "दुन्या से बे रग़बती इख़्तियार करो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम से मह़ब्बत फ़रमाएगा । और जो कुछ लोगों के पास है इस से बे परवाह हो जाओ तो लोग भी तुम से मह़ब्बत करेंगे ।"(2)

दुन्या की आफ़ात :

﴾23﴿......सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "दुन्या उस का घर है जिस का कोई घर नहीं, उस का माल है जिस का कोई माल नहीं, इसे वोही जम्अ़ करता है जिस में कुछ अ़क़्ल नहीं, इस पर वोही ग़मगीन होता है जिसे इ़ल्म नहीं, इस पर वोही ह़सद करता है जिसे कुछ समझ नहीं और इस पर वोही ख़ुश होता है जिसे यक़ीन नहीं ।"(3)

दुन्या की मह़ब्बत का वबाल :

﴾24﴿......हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक

---

1 ......شعب الایمان للبیهقی،باب فی الزهد وقصر الامل،الحدیث:١٠٢٤٦،ج٧،ص٢٦٢.

2 ......شعب الایمان للبیهقی،باب فی الزهد وقصر الامل، الحدیث:١٠٥٢٣،ج٧،ص٣٤٤.

3 ......شعب الایمان للبیهقی،باب فی الزهد وقصر الامل،الحدیث:١٠٦٣٧،ج٧،ص٣٧٥.

www.dawateislami.net

صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस किसी के दिल में दुन्या की मह़ब्बत डेरा डालती है वोह इस की वज्ह से तीन चीज़ों में मुब्तला हो जाता है : (1) न ख़त्म होने वाली मसरूफ़िय्यत (2) ऐसी ग़रीबी कि कभी ख़ुशह़ाली न हो और (3) .....ऐसी आरज़ू जो कभी पूरी न हो।"(1)

दुन्या व आख़िरत के त़लबगार :

﴿25﴾.....सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "दुन्या और आख़िरत दोनों त़ालिब भी हैं और मत़लूब भी। पस जो आख़िरत को त़लब करता है दुन्या उसे तलाश करती है यहां तक कि वोह इस में से अपना पूरा पूरा हिस्सा ले लेता है और जो दुन्या का त़लबगार होता है आख़िरत उसे ढूंडती रहती है यहां तक कि मौत उसे गरदन से आ दबोचती है।"(2)

ख़ुशबख़्त और बदबख़्त :

﴿26﴾.....हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "सुनो ! सआ़दत मन्द वोह है जो बाक़ी (या'नी आख़िरत) को फ़ानी (या'नी दुन्या) पर तरजीह़ दे क्यूंकि आख़िरत की ने'मतें हमेशा रहेंगी और दुन्या की तकालीफ़ ख़त्म न होंगी और वोह आख़िरत के लिये अपना माल आगे भेज दे (या'नी राहे ख़ुदा में ख़र्च कर दे) और ऐसा न करे कि इसे वुरसा के लिये छोड़ जाए और वोह इसे रिज़ाए रब्बुल अनाम के लिये ख़र्च कर के सआ़दत मन्द बन जाएं और येह इसे जम्अ़ करने और ज़ख़ीरा करने के सबब बदबख़्त हो जाए।"(3)

---

1 .....الفردوس الاخبار بمأثور الخطاب، الحديث: ٦٢١٢، ج٤، ص٦٨.

2 .....الفتوحات المكيه، الباب الموفى ستين و خمسمائة.....الخ، ج٨، ص٤٥٧.

3 .....الفتوحات المكيه، الباب الموفى ستين و خمسمائة.....الخ، ج٨، ص٤٥٧.

www.dawateislami.net

दुन्या के त़ालिब का अन्जाम :

﴾27﴿.....शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रंजो मलाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "दुन्या का त़ालिब हलाक हो कर मुंह के बल गिरे । जब उसे कांटा लगे तो न निकाल सके ।"(1)

दिल व जिस्म की राह़त :

﴾28﴿.....सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "दुन्या से बे रग़बती दिल और जिस्म को राह़त पहुंचाती है, इस में रग़बत ग़मों को बढ़ाती है और बेकारी दिल को सख़्त कर देती है ।"(2)

नूर जब दिल में दाख़िल होता है :

﴾29﴿.....ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "नूर जब दिल में दाख़िल होता है तो दिल कुशादा हो जाता है ।" अ़र्ज़ की गई : "क्या इस की कोई निशानी है ?" इरशाद फ़रमाया : "धोके के घर से दूर रहना, हमेशा के घर की त़रफ़ रुजूअ़ करना और मौत आने से पहले उस के लिये तय्यारी कर लेना ।"(3)

ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَیْہِ السَّلَام को वह्य :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की त़रफ़ वह्य फ़रमाई कि "ऐ मूसा (عَلَیْہِ السَّلَام) !

---

1 .....سنن ابن ماجه، كتاب الزهد، باب فی المكثرين، الحديث: ٤١٣٦، ج٤، ص٤٤١.

2 .....الجامع الصغير للسيوطی، الحديث: ٤٥٩٦، ص٢٨١.

3 .....المستدرك، كتاب الرقاق، باب اعلام النور فی الصدور، الحديث: ٧٩٣٣، ج٥، ص٤٤٢.

www.dawateislami.net

जब मैं किसी से मह़ब्बत करता हूं तो दुन्या को इस से अलग कर देता हूं और मैं अपने मुह़िब्बीन के साथ ऐसा ही करता हूं । ऐ मूसा (عَلَيْهِ السَّلَام) ! अगर तुम मालो दौलत को अपनी त़रफ़ आते देखो तो कहो कि किसी लग़ज़िश पर इ़ताब जल्दी हो गया और जब फ़क़्र को अपनी जानिब आते देखो तो कहो कि सालिह़ीन के शिआ़र को **मरह़बा** ।''(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَيْهِ السَّلَام को वह़्य :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की त़रफ़ वह़्य फ़रमाई कि ''ऐ दावूद (عَلَيْهِ السَّلَام) ! जिस ने दुन्यावी ख़्वाहिशात को आख़िरत की राह़तों पर तरजीह़ दी उस ने ऐसी गिरह थामी जिस में मज़बूत़ी नहीं और जिस ने उख़रवी राह़तों को ख़्वाहिशाते दुन्या पर फ़ौक़िय्यत दी उस ने बड़ी मज़बूत़ गिरह थामी जिसे कभी खुलना नहीं ।''

ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام को वह़्य :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की त़रफ़ वह़्य फ़रमाई कि ''ऐ ईसा (عَلَيْهِ السَّلَام) ! बनी इस्राईल से फ़रमाओ कि मेरी त़रफ़ से दो बातें याद कर लो । उन से फ़रमाओ कि अपने दीन की सलामती के साथ थोड़ी दुन्या पर राज़ी रहो जिस त़रह़ दुन्यादार अपनी दुन्या की सलामती के लिये थोड़े पर राज़ी रहते हैं ।''(2)

मुनाजात की लज़्ज़त से मह़रूमी :

बा'ज़ आस्मानी किताबों में है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : ''जब अह़्ले इ़ल्म में से कोई दुन्या की त़रफ़ माइल होता

1 .....حلية الاولياء،تكملة كعب الاحبار،الحديث:٧٦٢١،ج٦،ص٥،بدون قوله"واوحى ..... الى باحبابى".

2 .....احياء علوم الدين، كتاب ذم الدنيا، ج٣،ص٢٥٥.

www.dawateislami.net

है तो मैं उस के साथ सब से हल्का मुआ़मला येह करता हूं कि उस के दिल से मुनाजात की लज़्ज़त निकाल देता हूं।"(1)

ऐ दुन्या कड़वी हो जा :

ह़दीसे क़ुदसी में है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने दुन्या से इरशाद फ़रमाया : "ऐ दुन्या ! मेरे औलिया के लिये कड़वी हो जा, उन्हें फ़ितने में मुब्तला करने के लिये मीठी न बन।"(2)

सय्यिदुना अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم के अक़्वाल

दो सोकनें :

﴿1﴾.....अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं : "दुन्या व आख़िरत की मिसाल मशरिक़ो मग़रिब जैसी है, तू इन में से किसी एक से जितना क़रीब होगा दूसरी से उतना ही दूर हो जाएगा। या इन की मिसाल दो सोकनों जैसी है, तू इन में से किसी एक को ख़ुश करेगा तो दूसरी नाराज़ हो जाएगी। या इन की मिसाल दो ऐसे बरतनों जैसी है जिन में से एक भरा हो और दूसरा ख़ाली, तो ख़ाली बरतन को जितना भरेगा दूसरा उतना ही ख़ाली हो जाएगा।"(3)

दुन्या में छे चीज़ें हैं :

﴿2﴾.....अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं : "मैं ने दुन्या में छे चीज़ें पाईं :

---

1 .....احیاء علوم الدین، کتاب العلم، الباب السادس فی آفات العلم.....الخ، ج۱، ص۸۸، مفهومًا.

2 .....المستطرف فی کل فن مستظرف، الباب الثالث والثمانون فی ذکر الدنیا.....الخ، ج۲، ص۵۰۳.

3 .....میزان العمل للغزالی علیه رحمة الله الوالی، ص٤٦.

www.dawateislami.net

(1).....**खाना :** सब से बेहतरीन खाना शहद है और वोह मख्खी का लुआ़ब है (2)....**मश्रूब :** सब से बेहतरीन मश्रूब पानी है और इस में नेको बद बराबर हैं (3)....**ख़ुश्बू :** सब से अच्छी ख़ुश्बू कस्तूरी है और वोह हिरन का ख़ून है (4)....**लिबास,** सब से उ़म्दा लिबास रेशम है और वोह कीड़ों के लुआ़ब से बनता है (5).....**सुवारी :** सब से अच्छी सुवारी घोड़ा है और उस पर सुवार हो कर लोगों को क़त्ल किया जाता है और (6)....**बीवी :** (जिस से सोह़बत की जाती है) और येह पेशाब गाह का पेशाब गाह में जाना है और तेरे लिये इतनी बात ही काफ़ी है कि औ़रत अपने बदन के सब से अच्छे हि़स्से को संवारती है लेकिन उस के सब से बुरे मक़ाम की त़लब होती है।''(1)

ज़ाहिदीन के लिये ख़ुशख़बरी :

﴿3﴾.....अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं : ''दुन्या से बे रग़बती और आख़िरत में रग़बत रखने वालों के लिये ख़ुशख़बरी है। येह वोह लोग हैं जिन्हों ने ज़मीन को फ़र्श बना लिया, मिट्टी को बिछौना, पानी को ख़ुश्बू बनाया, मुनाजात व तिलावते क़ुरआन को अपनी पहचान और शिआ़र बना लिया और उन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के रास्ते पर चलते हुवे दुन्या से किनारा कशी इख़्तियार कर ली।''(2)

इस मफ़्हूम के चन्द अश्आ़र :

اِنَّ لِلّٰهِ رِجَالًا فُطُنَا ۔۔۔ طَلَّقُوا الدُّنْيَا وَخَافُوْا الْفِتَنَا

نَظَرُوْا فِيْهَا فَلَمَّا عَلِمُوْا ۔۔۔ اِنَّهَا لَيْسَتْ لِحَيٍّ وَطَنَا

جَعَلُوْا هَا الْجَنَّةَ وَاتَّخَذُوْا ۔۔۔ صَالِحَ الْاَعْمَالِ فِيْهَا سُفُنَا

---

1 .....احیاء علوم الدین، کتاب ذم الدنیا، باب بیان ذم الدنیا، ج۳، ص ۲۶۰، بتغیرٍ قلیلٍ.

2 .....حلیة الاولیاء، الرقم ٤ علی بن ابی طالب رضی الله عنه، الحدیث: ۲۴۲، ج۱، ص ۱۲۰.

www.dawateislami.net

तर्जमा : (1).....बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के कुछ ऐसे बन्दे भी हैं जिन्हों ने फ़ितने से डर कर दुन्या को छोड़ दिया।

(2).....उन्हों ने दुन्या में ग़ौरो फ़िक्र किया, फिर जब येह जान लिया कि येह ज़िन्दा लोगों का देस नहीं है।

(3).....तो उन्हों ने दुन्या को भंवर ठहरा कर उस में आ'माले सालिह़ा को सफ़ीना बना लिया।[1]

दुन्या ख़सीस है :

ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "दुन्या ख़सीस है और हर ख़सीस से मुशाबहत रखती है और इस से ज़ियादा ख़सीस वोह शख़्स है जो इसे बिला ज़रूरत ह़ासिल करता है।"[2]

जैसा कि मुतनब्बा ने कहा :

وَشِبْهُ الشَّيْءِ مُنْجَذِبٌ اِلَيْهِ وَاَشْبَهُنَا بِدُنْيَا نَا الطَّغَام

وَلَوْلَمْ يَعْلُ اِلَّا ذُوْ مَحَلٍ تَعَالَى الْجَيْشُ وَانْحَطَّ الْقَتَام

तर्जमा :

(1).....जो चीज़ जिस से मुशाबहत रखती है वोह उसी की त़रफ़ माइल होती है और दुन्या में हमारी मुशाबहत घटया लोगों के साथ है।

(2).....और अगर हर ज़ी मर्तबा चीज़ बुलन्द होती तो लश्कर ऊपर और ग़ुबार नीचे होता।[3]

❁❁❁❁❁❁❁

1 .....مرقاة المفاتيح، كتاب الرقاق، باب الامل والحرص، تحت الحديث: ٥٢٧٤، ج٩ص١٢٦.

2 .....حلية الاولياء، الرقم ١٧٠، سعيدبن مسيب، الحديث: ١٩٠٥، ج٢، ص١٩٣.

3 .....شرح ديوان المتنبى، ص٨٣.

www.dawateislami.net

सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى के अक़्वाल

मौत ने दुन्या को रुस्वा कर दिया :

﴿1﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "मौत ने दुन्या को रुस्वा कर दिया और किसी अ़क़्लमन्द के लिये इस में कोई ख़ुशी नहीं छोड़ी। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस शख़्स पर रह़्म फ़रमाए जो बोसीदा कपड़े पहने, गिरे पड़े टुकड़े खा कर गुज़ारा करे, ज़मीन से चिपका रहे, अपने गुनाहों पर रोता रहे और अच्छे त़रीक़े से इ़बादात बजा लाता रहे।"(1)

दुन्यावी मश़्ग़ूलिय्यत से बचो :

﴿2﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "जब दिल में दुन्या की मह़ब्बत बस जाती है तो इस से आख़िरत का ख़ौफ़ निकल जाता है। दुन्यावी मश़्ग़ूलिय्यत से बचो ! क्यूंकि जो अपने लिये दुन्या का एक दरवाज़ा खोलता है उस के लिये उख़रवी आ'माल के कई दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं।"(2)

आदमी मिस्कीन है :

﴿3﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "आदमी मिस्कीन है, अपने माल को तो कम समझता है लेकिन अपने अ़मल को कम नहीं समझता। दीनी मुसीबत पर ख़ुश होता

---

1 .....حلية الاولياء،الرقم١٦٩حسن بصرى،الحديث:١٨١٥،١٨١٧،ج٢،ص١٧٠،١٧١.

2 .....احياء علوم الدين، كتاب ذم الدنيا،ج٣،ص٢٥٨،مفهومًا.

www.dawateislami.net

है और दुन्यावी मुसीबत पर चीख़ो पुकार करता है। दुन्या की बुन्याद तो ऐ़बों और बीमारियों पर ही रखी गई है। अगर तुम ऐ़बों और बीमारियों से नजात पा लो तो मौत से फिर भी नहीं बच सकते।''(1)

किसी ने क्या ख़ूब कहा है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ कहने वाले को जज़ाए ख़ैर दे :

هَبِ الدُّنْيَاتُوَا تِيْكَا　　اَلَيْسَ الْمَوْتُ يَأْ تِيْكَا
اَ لَايَاطَالِبَ الدُّنْيَا　　دَ عِ الدُّنْيَالِشَانِيْكَا
فَمَاتَصْنَعُ بِالدُّنْيَا　　وَظِلُّ الْمَيْلِ يَكْفِيْكَا
كَمَااَضْحَكَكَ الدَّ هْرُ　　كَذَاكَ الدَّ هْرُيُبْكِيْكَا

तर्जमा : (1).....तू दुन्या को छोड़ दे येह तुझे बरबाद कर देगी। क्या तुझे मौत नहीं आएगी ?

(2).....ऐ दुन्या के त़लबगार ! सुन, अपने (उख़रवी) मुआ़मले के लिये दुन्या को तर्क कर दे।

(3).....तू दुन्या का क्या करेगा ? येह ढलते हुवे साए तुझे इ़ब्रत के लिये काफ़ी हैं।

(4).....ज़माना जिस त़रह़ तुझे हंसाता है उसी त़रह़ तुझे रुलाएगा।

दुन्या इमाम बाक़िर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की नज़र में :

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बाक़िर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का फ़रमान है कि ''दुन्या क्या है और अ़न क़रीब क्या हो जाएगी ? येह एक सुवारी ही तो है जिस पर तुम सुवार हो या कपड़ा है जिसे तुम ने पहन लिया या औ़रत है जिसे तुम ने ह़ासिल कर लिया है।''(2)

---

1 .....احیاء علوم الدین، کتاب ذم الدنیا، ج۳، ص۲۵۸، دون قوله علی الاسقام.....الخ.

2 .....حلیة الاولیاء، الرقم۲۳۵، محمدبن علی الباقر، الحدیث:۳۷۳۶، ج۳، ص۲۱۳.

www.dawateislami.net

जन्नत में पहले दाख़िल होने वाले :

हज़रते सय्यिदुना वह्ब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : जन्नत के 8 दरवाज़े हैं जब लोग इन दरवाज़ों पर पहुंचेंगे तो ख़ाज़िने जन्नत उन से कहेंगे : "हमें अपने रब عَزَّوَجَلَّ की इ़ज़्ज़त की क़सम ! दुन्या से बे रग़बती रखने और जन्नत से मह़ब्बत करने वालों से पहले कोई इस में दाख़िल नहीं होगा।"(1)

ज़मीन बोलने लगी :

हज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन सीरीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمُبِيْن फ़रमाते हैं : "दो शख़्स ज़मीन के मुआ़मले में लड़ रहे थे कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ज़मीन को हुक्म फ़रमाया कि "इन दोनों से कलाम कर।" चुनान्चे, ज़मीन कहने लगी : "ऐ मिस्कीनो ! तुम से पहले तन्दुरुस्त लोगों के इ़लावा हज़ार मा'ज़ूर भी मेरे मालिक बन चुके हैं।"(2)

❁❁❁❁❁❁❁

सय्यिदुना अबू ह़ाज़िम رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के अक़्वाल

दुन्या की ना पाएदारी :

﴾1﴿......हज़रते सय्यिदुना अबू ह़ाज़िम मदनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِی फ़रमाते हैं : "दुन्या की जो चीज़ भी तुम्हें ख़ुश करती है उस के साथ तकलीफ़ ज़रूर होती है।"(3)

---

1 ....احياء علوم الدين، كتاب الفقر والزهد، بيان فضيلة الزهد، ج٤، ص٢٧٦.

2 ....حلية الاولياء، الرقم١٩٣ محمدبن سرين، الحديث:٢٣٦٧، ج٢، ص٣١٣.

3 ....صفة الصفوة، الرقم١٨٥، ابو حازم سلمة بن دينار، ج١، الجزء الثانی، ص١١١.

www.dawateislami.net

दुन्या ग़म का घर है :

﴿2﴾.....दुन्या फ़ना होने की जगह है, इस को क़रार नहीं, दुन्या ग़म का घर है, ख़ुशी का नहीं, तंगी का घर है ख़ुशहाली का नहीं ।[1]

﴿3﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़ाज़िम मदनी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی की अहलिय्या ने उन से अ़र्ज़ की, कि : "अचानक सर्दी हो गई है और खाना, लिबास और लकड़ियों के सिवा हमारा कोई चारा नहीं है ।" आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "इन के बिग़ैर तो चारा है लेकिन मौत, फिर मरने के बा'द उठाए जाने और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दरबार में ह़ाज़िर होने और इस के बा'द जन्नत या जहन्नम से छुटकारा नहीं है ।"[2]

फ़ाजिर दुन्या की हर चीज़ में सबक़त ले गए :

﴿4﴾.....आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मज़ीद फ़रमाते हैं : "तुम दुन्या की जिस चीज़ की त़रफ़ भी हाथ बढ़ाओगे तो किसी फ़ासिक़ को उस की त़रफ़ सबक़त करता पाओगे ।"[3]

दुन्या से दूरी बड़ी ने'मत है :

﴿5﴾.....आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की येह ने'मत कि उस ने दुन्या को मुझ से दूर रखा, उस ने'मत से अफ़्ज़ल है कि वोह मुझे दुन्या अ़त़ा फ़रमाता (क्यूंकि येह ने'मत जिन लोगों को भी मिली वोह इस के सबब हलाक हो गए) ।"[4]

---

1 .....احیاء علوم الدین، کتاب الفقر والزھد، بیان فضیلۃ الزھد، ج٤، ص٢٧٧، مفھومًا.

2 .....احیاء علوم الدین، کتاب الفقر والزھد، بیان فضیلۃ الزھد، ج٤، ص٢٧٧، مفھومًا.

3 .....احیاء علوم الدین، کتاب ذم الدنیا، بیان ذم الدنیا، ج٣، ص٢٥٩.

4 .....صفۃ الصفوۃ، الرقم ١٨٥، ابو حازم سلمۃ بن دینار، ج١، الجزء الثانی، ص١٠٨.

www.dawateislami.net

ख़्वाब और आरज़ूएं :

﴾6﴿......आप رَحْمَةُاللّٰهِ تعالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "दुन्या का जो हि़स्सा गुज़र गया वोह एक ख़्वाब है और जो बाक़ी है वोह आरज़ूएं हैं।"(1)

इस मफ़्हूम को किसी शाइ़र ने यूं बयान किया है :

كَعَبُوْرِطَيْفٍ اَوْكَظِلٍ زَائِلٍ　　اِنَّ اللَّبِيْبَ بِمِثْلِهَالَايُخْدَعِ

तर्जमा : येह दुन्या गुज़रे हुवे ख़्वाबो ख़याल या ढलने वाले साए की मिस्ल है। बेशक अ़क़्लमन्द शख़्स इस जैसी चीज़ से धोका नहीं खाता।

अबू त़य्यिब मुतनब्बा ने कहा :

وَكَمْ مَنْ يَّعْشَقُ الدُّنْيَا قَدِيْمًا　　وَلٰكِنْ لَاسَبِيْلَ اِلَى الْوِصَالِ
نَصِيْبُكَ فِيْ حَيَاتِكَ مِنْ حَبِيْبٍ　　نَصِيْبُكَ فِيْ مَنَامِكَ مِنْ خَيَالِ

तर्जमा : (1)......दुन्या के कितने ही आ़शिक़ बोसीदा हो गए लेकिन फिर भी उन के लिये विसाल की कोई राह नहीं।

(2)......तेरी ज़िन्दगी में मह़बूब चीज़ से तेरा इतना ही हि़स्सा है जितना तू सोते में ख़्वाब देख ले।(2)

सय्यिदुना लुक़्मान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के इरशादात

﴾1﴿......ह़ज़रते सय्यिदुना लुक़्मान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : "जिस ने दुन्या को आख़िरत के इ़वज़ फ़रोख़्त कर दिया उस ने दुन्या व आख़िरत दोनों में फ़ाएदा उठाया और जिस ने दुन्या के बदले आख़िरत को बेच दिया उस ने दुन्या व आख़िरत में ख़सारा उठाया।"(3)

1......حلیة الاولیاء،الرقم۲٤٠،سلمة بن دینار،الحدیث:۳۹۳۸،ج۳،ص۲۷۵.

2......شرح دیوان المتنبی،ج۱،ص۱۹۵.

3......احیاء علوم الدین،کتاب ذم الدنیا،باب بیان ذم الدنیا،ج۳،ص۲۵٦.

www.dawateislami.net

बेटे को नसीह़त :

﴿2﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना लुक़्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने बेटे को नसीह़त करते हुवे इरशाद फ़रमाया : "ऐ मेरे बेटे ! दुन्या एक गहरा समन्दर है और इस में बेशुमार लोग डूब चुके हैं। इस में तक़्वा तेरी कश्ती होना चाहिये। इस को ईमान से भर दो और तवक्कुल को इस का बादबान बनाओ ताकि तुम्हें नजात ह़ासिल हो और मुझे नहीं मा'लूम कि तुम नजात पाओगे।"(1)

❁❁❁❁❁❁❁

सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفَّار के अक़्वाल

जिस्म और दिल :

﴿1﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : "जब जिस्म बीमार होता है तो खाने, पीने, सोने और आराम करने से उसे कुछ फ़ाएदा नहीं होता इसी त़रह़ दिल पर जब दुन्या की मह़ब्बत ग़ालिब आ जाती है तो उसे नसीह़त करने से कोई फ़ाएदा नहीं होता।"(2)

दुन्या मेरे घर में दाख़िल न फ़रमा :

﴿2﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْخَالِق ने अपने अस्ह़ाब से फ़रमाया : मैं दुआ करता हूं, तुम आमीन कहना। फिर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने दुआ की : اَللّٰھُمَّ لَا تُدْخِلْ بَیْتَ مَالِکٍ مِّنَ الدُّنْیَا لَا قَلِیْلٌ وَّلَا کَثِیْر

---

1 .....احیاء علوم الدین، کتاب ذم الدنیا، باب بیان ذم الدنیا، ج۳، ص۲۵۶.

2 .....حلیۃ الاولیاء، الرقم ۲۰۰، مالك بن دینار، الحدیث: ۲۷۷۳، ج۲، ص۴۱۲، بتغیرٍ قلیلٍ.

www.dawateislami.net

"या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मालिक के घर में दुन्या दाख़िल न फ़रमा, न थोड़ी न ज़ियादा।"(1)

﴿3﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْخَالِق जब घर से निकलते तो दरवाज़े को रस्सी से बांध देते और फ़रमाते : "अगर कुत्ते न होते तो मैं इसे खुला छोड़ देता।"

﴿4﴾.....आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाया करते थे कि "बन्दा उस वक़्त तक सिद्दीक़ीन का मर्तबा नहीं पा सकता जब तक वोह अपनी ज़ौजा को ऐसे न छोड़ दे गोया कि वोह बेवा हो और उस की पनाहगाह कुत्तों के ठिकानों की त़रह़ न हो।"(2)

दुन्या का उम्मीदवार :

﴿5﴾.....एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْخَالِق एक शख़्स के सामने से गुज़रे जो खजूर के पौदे लगा रहा था, आप वहां से जल्द गुज़र गए, फिर कुछ अ़र्से के बा'द दोबारा वहां से गुज़र हुवा तो देखा कि वोह पौदे फलदार हो चुके हैं, आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने खजूर लगाने वाले के बारे में दरयाफ़्त फ़रमाया किसी ने बताया कि वोह इन्तिक़ाल कर चुका है उस वक़्त आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने येह अश्आ़र कहे :

مُؤَمِّلُ دُنْيَالِتَبْقٰى لَهٗ　　فَمَاتَ الْمُؤَمِّلُ قَبْلَ الْاَمَل

يُرَبِّيْ فَسِيْلًاوَيُعْنٰى بِهٖ　　فَعَاشَ الْفَسِيْلُ وَمَاتَ الرَّجُل

तर्जमा : (1).....आदमी ने दुन्या से उम्मीद लगाई कि वोह इस के पास रहेगी लेकिन उम्मीदवार उम्मीद पूरी होने से पहले ही मौत का शिकार हो गया।

---

1 .....حلية الاولياء،الرقم ٢٠٠،مالك بن دينار،الحديث:٦ ٢٨٠،ج٢،ص٤١٩.

2 .....حلية الاولياء،الرقم ٢٠٠،مالك بن دينار،الحديث:٩ ٢٧٤،ج٢،ص٤٠٧.

www.dawateislami.net

(2).....उस ने खजूर की परवरिश व निगहदाश्त की फिर खजूर का दरख़्त तो बाक़ी रहा लेकिन वोह शख़्स दुन्या से चला गया।[1]

अबू अ़ताहिया ने कहा :

كَمْ عَامِرٍ دارًا لِيَسْكُنَ ظِلَّهَا سَكَنَ الْقُبُوْرَوَدَارَهُ لَمْ يَسْكُن

तर्जमा : बहुत से घर ता'मीर करने वालों ने इस उम्मीद पर घर ता'मीर किये कि इन के साए में रहेंगे लेकिन वोह घरों में बसेरा करने के बजाए क़ब्रों के मकीन बन गए।

"कलिमए त़य्यिबा" हिफ़ाज़त करता है :

बा'ज़ रिवायात में है कि "لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ" उस वक़्त तक अपने पढ़ने वालों की हिफ़ाज़त करता है जब तक वोह दुन्या को दीन पर तरजीह़ न दें। पस जब वोह दुन्या को दीन पर तरजीह़ देते हुवे येह कलिमा पढ़ते हैं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "तुम झूटे हो, इस क़ौल में सच्चे नहीं।"[2]

दुन्या को मुझ से रोक दे :

एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस त़रह़ दुआ मांगा करते थे कि "ऐ वोह ज़ात ! जिस ने आस्मान को ज़मीन पर गिरने से रोक रखा है मगर तेरी इजाज़त से दुन्या को मेरे पास आने से रोक दे।"[3]

---

1 .....حلية الاولياء،الرقم ٢٠٠،مالك بن دينار،الحديث:٢٨٧٧،ج٢،ص٤٣٤.

2 .....احياء علوم الدين،كتاب الفقر والزهد،بيان فضيلة الزهد،ج٤،ص٢٧٦.

3 .....احياء علوم الدين،كتاب ذم الدنيا،بيان ذم الدنيا،ج٣،ص٢٥٩.

www.dawateislami.net

दीन बचता है न दुन्या :

एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيهِ رَحمَةُ اللهِ الاَكرَم मन्सूर के पास गए। तो उस ने आप رَحمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيه से दरयाफ़्त किया कि "ऐ इब्राहीम बिन अदहम (عَلَيهِ رَحمَةُ اللهِ الاَكرَم) ! आप (दुन्या के बारे में) क्या कहते हैं?" आप رَحمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيه ने उस के जवाब में येह शे'र पढ़ा :

نُرَقِّعُ دُنيَانَا بِتَمزِيقِ دِينِنَا　　　فَلا دِينُنَا يَبقٰى وَلَا مَا نُرَقِّعُ

तर्जमा : हम अपने दीन को टुकड़े टुकड़े कर के दुन्या बेहतर बनाते हैं तो हमारा दीन बचता है न दुन्या।[1]

❁❁❁❁❁❁❁

सय्यिदुना दावूद ताई رَحمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيه के अक़्वाल

आख़िरत के हुसूल की कोशिश कर :

﴾1﴿......एक शख़्स ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद ताई رَحمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيه से नसीह़त का त़ालिब हुवा तो आप رَحمَةُاللّٰهِ تعَالٰی عَلَيه ने फ़रमाया : "दुन्या की ने'मतें छोड़ कर आख़िरत के हुसूल की कोशिश कर और लोगों से इस त़रह़ भाग जिस त़रह़ शेर से भागता है।"[2]

---

1 ......احیاء علوم الدین، کتاب ذم الدنیا، بیان ذم الدنیا، ج۳، ص۲۵۶.

2 ......احیاء علوم الدین، کتاب آدب العزلہ، الباب الاول فی...... الخ، ج۲، ص۲۷۸.

www.dawateislami.net

अभी अभी क़ैद से आज़ाद हुवा हूं :

﴾2﴿......एक शख़्स ने हज़रते सय्यिदुना दावूद ताई رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه को ख़्वाब में दौड़ते हुवे देखा तो पूछा : "ऐ अबू सुलैमान ! क्या मुआ़मला है ?" आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : "अभी अभी क़ैद से आज़ाद हुवा हूं ।" जब वोह शख़्स बेदार हुवा तो किसी ने उसे बताया कि "ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद ताई رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه इन्तिक़ाल फ़रमा गए हैं ।"(1)

❁❁❁❁❁❁❁

सय्यिदुना फ़ुज़ैल رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के अक़्वाल

भलाई व बुराई की चाबी :

﴾1﴿......ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "सारे का सारा शर घर में होता है जिस की चाबी दुन्या में रग़बत रखना है और तमाम की तमाम भलाई भी घर में होती है जिस की चाबी दुन्या से बे रग़बती रखना है ।"(2)

दुन्या ठीकरी और आख़िरत सोना है :

﴾2﴿......ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इरशाद फ़रमाया : "अगर दुन्या सोने की होती फिर भी फ़ना हो जाती और अगर आख़िरत ठीकरी की होती तो भी बाक़ी रहती । इस लिये हमें चाहिये कि हम बाक़ी रहने वाली ठीकरी को ख़त्म हो जाने वाले सोने पर तरजीह़ दें, तो उस का क्या बनेगा जिस ने बाक़ी रहने वाले सोने (या'नी आख़िरत) के मुक़ाबले में फ़ना होने वाली ठीकरी (या'नी दुन्या) को इख़्तियार कर रखा है ।"(3)

---

1 ......الرسالة القشيرية،ابو سليمان،داؤد بن نصير الطائى،ص ٣٥ .

2 ......قوت القلوب،الفصل الثانى و الثلاثون،شرح مقامات اليقين،ج ١،ص ٤٢٩ .

3 ......احياء علوم الدين،كتاب ذم الدنيا،باب بيان ذم الدنيا،ج ٣،ص ٢٥٦ .

www.dawateislami.net

मैं फिर भी दुन्या से बचूंगा :

﴾3﴿......आप رَحْمَةُاللهِ تعالٰی عَلَیْه मजी़द फ़रमाते हैं : अगर मुझे दुन्या दी जाए और कहा जाए कि "इस में से ह़लाल ले लो इस का तुम से कोई हि़साब नहीं होगा।" तो मैं फिर भी इस से इस त़रह़ नफ़रत करूंगा जिस त़रह़ तुम में से कोई मुर्दार से नफ़रत करता है, जब उस के पास से गुज़रता है तो उस से अपने कपड़े बचाता है।(1)

इमाम शाफे़ई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِی फ़रमाते हैं :

हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफे़ई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِی फ़रमाते हैं : "अगर दुन्या बाज़ार में रखा हुवा सामान होता तो भी मैं इसे एक रोटी के इ़वज़ भी न ख़रीदता क्यूंकि मैं इस में मौजूद आफ़ात को देख चुका हूं।" फिर आप رَحْمَةُاللهِ تعالٰی عَلَیْه ने येह अश्आ़र पढ़े :

وَمَنْ يَجْهَلِ الدُّنْيَافَإِنِّي عَرَفْتُهَا   وَسِيْقَ اِلَيْنَاعَذْبُهَاوَعَذَابُهَا

فَلَمْ اَرَهَااِلَّاغُرُوْرًاوَّبَاطِلًا   كَمَالَاحَ فِيْ ظَهْرِالْفَلَاةِ سَرَابُهَا

وَمَاهِيَ اِلَّاجِيْفَةٌ مُّسْتَحِيْلَةٌ   عَلَيْهَاكِلَابٌ هَمُّهُنَّ اِجْتِذَابُهَا

فَاِنْ تَجْتَنِبْهَاعِشْتَ سِلْمًالِاَهْلِهَا   وَاِنْ تَجْتَذِبْهَاجَاذَبَتْكَ كِلَابُهَا

तर्जमा : (1)......कौन है जो दुन्या को नहीं जानता मैं तो इसे जान चुका हूं। इस की मिठास और इस की तकालीफ़ हमारी त़रफ़ बढ़ा दी गईं।

(2)......मैं ने इसे धोका और बाति़ल पाया जैसे वोह रेत जो दोपहर के वक़्त जंगल बयाबान में धूप की शिद्दत की वज्ह से पानी मा'लूम हो।

(3)......येह एक सड़े हुवे मुर्दार की त़रह़ है जिस पर कुत्तों को छोड़ दिया गया हो जिन का काम उसे नोचना और फाड़ खाना है।

(4)......अगर तू इस से बचेगा तो सलामती वाली ज़िन्दगी गुज़ारेगा और अगर इसे लेने की कोशिश करेगा तो इस के कुत्ते तुझे नोच डालेंगे।

---

(1)......الرسالة القشيرية،ابوعلی الفضيل بن عياض،ص ٢٥ .

www.dawateislami.net

जो दुन्या मांगता है :

हज़रते सय्यिदुना बिशर बिन हारिस हाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى फ़रमाते हैं : "जो शख़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुन्या मांगता है वोह इस के सामने ज़ियादा देर ठहरने का सुवाल करता है।"(1)

हज़रते सय्यिदुना बिशर हाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى येह अश्आर पढ़ा करते थे :

اَقْسَمُ بِاللّٰهِ لَرَضْخُ النَوٰى ۔۔۔ وَشَرْبُ مَاءِ الْقُلْبِ الْمَالِحَه

اَحْسَنُ لِلْمُؤْمِنِ مِنْ حِرْصِهٖ ۔۔۔ وَمِنْ سُوَالِ الْاَوْجِهِ الْكَالِحَه

فَاسْتَغْنِ بِاللّٰهِ تَكُنْ ذَاغِنٰى ۔۔۔ مُغْتَبِطًابِالصَّفْقَةِ الرَابِحَه

اَلْيَاسُ عِزٌّوَالتُّقٰى سُؤْدَدٌ ۔۔۔ وَرَغْبَةُ النَّفْسِ لَهَافَاضِحَه

مَنْ كَانَتِ الدُّنْيَابِهٖ بَرَّةً ۔۔۔ فَاِنَّهَايَوْمًالَهُ ذَابِحَه

तर्जमा : (1)......अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मोमिन के लिये खजूर की गुठली सदक़ा करना और खारा गदला पानी पीना।

(2)......इस की हि़र्स और बेजा सुवाल करने से बेहतर है।

(3)......अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से ग़िना त़लब कर के नफ़्अ़ बख़्श तिजारत की वज्ह से आसूदा और ख़ुशहा़ल हो जाओ।

(4)......और दुन्या से ना उम्मीदी बाइ़से इ़ज़्ज़त और तक़्वा व परहेज़गारी बाइ़से सरदारी है जब कि नफ़्स का इस में रग़बत रखना रुस्वाई का सबब है।

(5)......दुन्या जिस पर मेहरबान होती है उसे एक दिन नुक़्सान भी ज़रूर पहुंचाती है।(2)

---

1 ....حلیۃالاولیاء،الرقم٤٣٧،بشربن حارث حافی،الحدیث:١٢٥٦٧،ج٨،ص٣٧٩.

2 ....حلیۃالاولیاء،الرقم٤٣٧،بشربن حارث حافی،الحدیث:١٢٦١٠،ج٨،ص٣٨٧.

www.dawateislami.net

बा'ज़ अस्लाफ़ رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی येह अश्आ़र पढ़ा करते थे :

مُكَرِّمُ الدُّ نْيَامُهَانٌ مُسْتَذَلٌ فِي الْقِيَامَة

وَالَّذِىْ هَانَتْ عَلَيْهِ فَلَهُ ثَمَّ كَرَامَة

तर्जमा : (1)......दुन्या को मुअ़ज़्ज़ज़ व मोह़तरम समझने वाला बरोज़े क़ियामत ह़क़ीर व ज़लील होगा।

(2)......और जो इसे ज़लील व ह़क़ीर समझेगा उसे वहां इ़ज़्ज़त व बुज़ुर्गी ह़ासिल होगी।

दुन्या को तीन त़लाक़ें :

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़र्रार बिन ज़ुमरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم के औसाफ़ बयान करते हुवे फ़रमाया कि आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ दुन्या और इस की ज़ीनत से घबराते थे, रात और इस के अन्धेरे से सुकून पाते थे। मैं गवाही देता हूं कि मैं ने बा'ज़ दफ़्आ़ इन्हें देखा कि जब रात की तारीकी शिद्दत इख़्तियार कर जाती, सितारे चमकने लगते तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ सांप के डसे हुवे की त़रह़ बे क़रार हो जाते और ग़मज़दा की त़रह़ रोने लगते और अपनी दाढ़ी मुबारक पकड़ कर इरशाद फ़रमाते : "ऐ **दुन्या** ! तू मुझे धोका देना चाहती है, मेरी त़रफ़ बन संवर कर आई है, जा ! किसी और को धोका दे मैं तो तुझे तीन त़लाक़ें दे चुका हूं। क्यूंकि तेरी उ़म्र क़लील, तेरी मजलिस ह़क़ीर और तू बड़ी ख़त़रनाक है, हाए ! हाए ! ज़ादे राह क़लील, सफ़र त़वील और रास्ता पुर ख़त़र है।"(1)

---

1 ......حلية الاولياء،على بن ابى طالب رضى الله عنه،الحديث:٢٦١،ج١،ص١٢٦ .

www.dawateislami.net

ह़लाल का हिसाब और ह़राम पर अ़ज़ाब है :

एक बुज़ुर्ग رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : "आदमी मिस्कीन है ऐसे घर (या'नी दुन्या) पर राज़ी हो गया जिस के ह़लाल का हिसाब और ह़राम पर अ़ज़ाब है कि अगर इस की कोई ह़लाल ने'मत लेगा तो उस का हिसाब लिया जाएगा और अगर ह़राम लेगा तो उस पर अ़ज़ाब दिया जाएगा।"(1)

दोस्त नुमा दुश्मन :

ख़लीफ़ा मामूनुर्रशीद ने कहा : किसी शाइ़र ने दुन्या की ह़क़ीक़त को ह़सन बिन हानी से ज़ियादा अच्छे त़रीक़े से बयान नहीं किया। ह़सन बिन हानी ने कहा :

اِذَاامۡتَحَنَ الدُّنۡیَا لَبِیۡبٌ تَکَشَّفَتۡ لَهٗ عَنۡ عَدُوٍّ فِیۡ ثِیَابِ صَدِیۡق

وَمَاالنَّاسُ اِلَّاهَالِکٌ وَابۡنُ هَالِکٍ وَذُوۡنَسَبٍ فِی الۡهَالِکِیۡنَ عَرِیۡق

तर्जमा : (1).....जब कोई अ़क़्लमन्द दुन्या को ग़ौर से मुलाह़ज़ा करता है तो उसे दोस्त के लिबास में दुश्मन नज़र आता है।

(2).....लोग तबाह हो जाएंगे, उन की ह़क़ीर औलाद और क़रीबी रिश्तेदार भी बरबाद हो जाएंगे।

❁❁❁❁❁❁❁

सय्यिदुना यह्या बिन मुआ़ज़ رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ के अक़्वाल

दुन्या को इ़ब्रत की निगाह से देखो :

﴿1﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना यह्या बिन मुआ़ज़ رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : "दुन्या को इ़ब्रत की निगाह से देखो और इस से बे रग़बती इख़्तियार कर लो और ब वक़्ते ज़रूरत ही इस में से कुछ लो।"

---

1 .....احیاء علوم الدین، کتاب ذم الدنیا، بیان ذم الدنیا، ج۳، ص۲۵۸.

www.dawateislami.net

﴾2﴿......आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "मैं ने दुन्या को इस लिये छोड़ दिया कि इस की कुल्फ़त बहुत और फ़ाएदा कम है, जल्दी ख़त्म हो जाती है और इस के त़लबगारों में ह़सद बहुत ज़ियादा पाया जाता है।"

शैत़ान की दुकान :

﴾3﴿......आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تعالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "दुन्या शैत़ान की दुकान है जो इस से कुछ ले लेता है येह उस का पीछा करता है यहां तक कि उसे पकड़ लेता है।"[1]

सारी की सारी दुन्या भी इस क़ाबिल नहीं कि इस पर एक लम्ह़े के लिये भी कुछ रंजो ग़म किया जाए फिर इस में से अपना क़लील ह़िस्सा पाने के लिये तुम्हारा उ़म्र भर फ़िक्रमन्द रहना कैसा है ?

बा'ज़ सालिह़ीन رَحِمَھُمُ اللّٰہُ الْمُبِیْن फ़रमाते हैं :

وَمَنْ یَحْمَدُالدُّنْیَالِعَیْشٍ یَسُرُّہٗ　　فَسَوْفَ لِعُمْرِیْ عَنْ قَرِیْبٍ یَلُوْمُھَا
اِذَااَدْبَرَتْ کَانَتْ عَلَی الْمَرْءِ حَسْرَۃً　　وَاِنْ اَقْبَلَتْ کَانَتْ کَثِیْرًاھُمُوْمُھَا

तर्जमा : (1)......मुझे मेरी उ़म्र की क़सम ! जो दुन्या की ता'रीफ़ उस ऐ़श की वज्ह से करता है जो उसे ख़ुश करता है तो अ़न क़रीब वोह उसे मलामत भी करेगा।

(2)......जब दुन्या किसी से पीठ फेरती है तो उस पर ह़सरत त़ारी हो जाती है और सामने आती है तो उस के ग़मों में इज़ाफ़ा हो जाता है।[2]

---

1 .....احیاء علوم الدین، کتاب ذم الدنیا، بیان ذم الدنیا، ج۳، ص۲۵۶.

2 .....احیاء علوم الدین، کتاب ذم الدنیا، بیان ذم الدنیا، ج۳، ص۲۵۵.

www.dawateislami.net

दुन्या की क़ीमत :

एक दफ़्आ़ ख़लीफ़ा हारूनुर्रशीद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَجِيْد ने पानी मांगा तो पानी पेश किया गया, उस वक़्त दरबार में ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने सम्माक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْرَّزَّاق भी मौजूद थे, उन्हों ने फ़रमाया : "(ऐ ख़लीफ़ा) अगर आप को पानी न मिले तो क्या आप उसे अपनी सारी बादशाहत के इ़वज़ ख़रीदने पर तय्यार हो जाएंगे ?" ख़लीफ़ा ने कहा : "जी हां !" ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने सम्माक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْرَّزَّاق ने फ़रमाया : "तुफ़ है ऐसी दुन्या पर जिस की क़ीमत एक गिलास पानी हो ।"(1)

दो दरवाज़ों वाला मकान :

मन्क़ूल है, एक लम्बी उ़म्र पाने वाले शख़्स से कहा गया कि "हमारे सामने दुन्या के औसाफ़ बयान करो !" उस ने कहा : "दुन्या एक ऐसा मकान है जिस के दो दरवाज़े हैं, मैं एक दरवाज़े से अन्दर दाख़िल हुवा और दूसरे से बाहर निकल आया । मैं ने तंगदस्ती के साल भी देखे और फ़राख़ी के भी । पैदा होने वाले पैदा हुवे और मरने वाले मरे । और अगर पैदा होने वाले पैदा ही न होते तो मख़्लूक़ न होती और अगर मरने वाले न मरते तो दुन्या में कोई गुंजाइश न रहती ।"(2)

वीरान और आबाद दिल :

एक दाना का क़ौल है कि "दुन्या वीरान और ख़राब घर है और इस से ज़ियादा ख़राब वोह दिल है जो इस की ता'मीर करता है और आख़िरत आबाद घर है और इस से भी ज़ियादा आबाद वोह दिल है जो इसे त़लब करता है ।"(3)

---

1 ....تاریخ الخلفاء،الرشیدھارون بن مھدی بن منصور،ص۲۹۳.

2 ....احیاء علوم الدین،کتاب ذم الدنیا،بیان ذم الدنیا،ج۳،ص۲۵۸،مفھومًا.

3 ....احیاء علوم الدین،کتاب ذم الدنیا،بیان ذم الدنیا،ج۳،ص۲۵۹.

www.dawateislami.net

दुन्या और आख़िरत किस के लिये है :

एक दाना शख़्स से पूछा गया कि "दुन्या किस के लिये है ?" उन्हों ने फ़रमाया : "जो इसे छोड़ दे।" पूछा गया : "आख़िरत किस के लिये है ?" उन्हों ने फ़रमाया : "जो इसे त़लब करे।"(1)

दुन्यादारों का ह़ाल :

किसी ज़ाहिद से पूछा गया कि "आप ने दुन्या को कैसा पाया ?" फ़रमाया : "जिस्म बोसीदा हो जाते और उम्मीदें ताज़ा हो जाती हैं, मौत क़रीब आ जाती है लेकिन ख़्वाहिशात दूर चली जाती हैं।" पूछा गया : "दुन्यादारों का क्या ह़ाल है ?" फ़रमाया : "जो इसे पा लेता है वोह थक जाता है और जो नहीं पाता वोह परेशान हो जाता है।"(2)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ाइल का भला करे इस ने क्या ख़ूब कहा :

اَرَى الدُّنْيَالِمَنْ هِيَ فِيْ يَدَيْهِ عَذَابًا كُلَّمَا كَثُرَتْ عَلَيْهِ

تُهِيْنُ الْمُكْرِمِيْنَ لَهَابِصُغْرٍ وَتُكْرِمُ كُلَّ مَنْ هَانَتْ عَلَيْهِ

اِذَااِسْتَغْنَيْتَ عَنْ شَيْءٍ فَدَعْهُ وَخُذْمَااَنْتَ مُحْتَاجٌ اِلَيْهِ

तर्जमा : (1).....मैं ने दुन्या को देखा कि जब भी किसी के हाथों में ज़ियादा आई तो उस के लिये अ़ज़ाब बन गई।

(2).....जो शख़्स किसी मा'मूली चीज़ के लिये दुन्या की इ़ज़्ज़त करता है येह उसे ज़लीलो रुस्वा कर देती है और जो इसे ज़लील करता है येह उस की इ़ज़्ज़त करती है।

---

1 .....احیاء علوم الدین، کتاب ذم الدنیا، بیان ذم الدنیا، ج۳، ص۲۵۹.

2 .....احیاء علوم الدین، کتاب ذم الدنیا، بیان ذم الدنیا، ج۳، ص۲۵۵.

www.dawateislami.net

(3).....जिस चीज़ की तुझे ज़रूरत न हो उसे छोड़ दे और जिस की ज़रूरत पड़े उसे ले ले।[1]

दुन्या दुश्मन है :

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی "**एह़याउल उ़लूम**" में फ़रमाते हैं : बेशक दुन्या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की, उस के दोस्तों की और उस के दुश्मनों की भी दुश्मन है ।

दुन्या की दुश्मनी का मत़लब :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुन्या की दुश्मनी इन मा'नों में है कि येह उस के बन्दों को उस के रास्ते पर चलने नहीं देती । इसी वज्ह से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जब से इसे तख़्लीक़ फ़रमाया है अब तक इस की त़रफ़ नज़र नहीं फ़रमाई । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दोस्तों की दुश्मन इस त़रह़ है कि उन के सामने सज धज के आती और अपना बनाव सिंगार उन पर ज़ाहिर करती है जिस की वज्ह से उन्हें इस को छोड़ने के लिये सब्र का कड़वा घूंट पीना पड़ता है । और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दुश्मनों की दुश्मन इन मा'नों में है कि उन्हें अपने मक्रो फ़रेब और चाल बाज़ियों से अपने जाल में जकड़ लेती है यहां तक कि वोह इस पर भरोसा और ए'तिमाद कर बैठते हैं । फिर उन्हें पहले से ज़ियादा अपना मोह़ताज बना डालती है तो वोह दुन्या पर ह़सरत करते हैं, उन के जिगर पाश पाश हो जाते हैं फिर हमेशा के लिये सआ़दत मन्दी से मह़रूम हो जाते हैं वोह दुन्या की फ़रेबकारियों और ख़राबियों से बचने के लिये मदद त़लब करते हैं लेकिन उन की मदद नहीं की जाती बल्कि उन से कहा जाता है :

---

1 .....احیاء علوم الدین، کتاب الامر بالمعروف.....الخ، الباب الثانی فی ارکان الامر .....الخ، ج۲، ص ۳۹۰

www.dawateislami.net

﴿1﴾ قَالَ اخْسَـُٔوْا فِيْهَا وَلَا تُكَلِّمُوْنِ ﴿۱۰۸﴾ (پ۱۸، المؤمنون:۱۰۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *रब फ़रमाएगा धुत्कारे (ख़ाइबो ख़ासिर) पड़े रहो इस में और मुझ से बात न करो।*

﴿2﴾ اُولٰٓىِٕكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا بِالْاٰخِرَةِ ۪ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿۸۶﴾ (پ۱، البقرة:۸۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *येह हैं वोह लोग जिन्हों ने आख़िरत के बदले दुन्या की ज़िन्दगी मोल ली तो न इन पर से अ़ज़ाब हल्का हो और न इन की मदद की जाए।* (1)

ह़ासिले कलाम :

दुन्या की मज़म्मत में आयात, अह़ादीस और अक़्वाल बे शुमार हैं ता हम जिन की त़रफ़ हम ने इशारा कर दिया है वोह इस में काफ़ी साबित होंगे। इन में इ़ब्रत ह़ासिल करने वालों के लिये इ़ब्रत और नसीह़त मानने वालों के लिये नसीह़त है।

وَمَا يَتَذَكَّرُ اِلَّا مَنْ يُّنِيْبُ ﴿۱۳﴾ (پ۲۴، المؤمن:۱۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और नसीह़त नहीं मानता मगर जो रुजूअ़ लाए।*

❁❁❁❁❁❁❁

1 .....احیاء علوم الدین، کتاب ذم الدنیا، ج۳، ص۲۴۸.

www.dawateislami.net

फ़रामीने सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام

हम इस ख़ातिमे के आख़िर में दुन्या की मज़म्मत और इस की ह़क़ीक़त के बारे में ज़ाहिदों के सरदार और उन पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की हुज्जत ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के फ़रामीन बयान कर के इसे मुकम्मल करते हैं। चुनान्चे,

दुन्या एक पुल है :

﴿1﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : "दुन्या एक पुल है, इसे उ़बूर करो। इस की आबाद कारी में न लगो [1]।"[2]

सब से बड़ी नेकी :

﴿2﴾.....आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام फ़रमाते हैं : "ऐ दुन्या के त़लबगार ! तू दुन्या इस लिये ह़ासिल करता है कि इस के ज़रीए नेकी करेगा तो (सुन !) तेरा इसे छोड़ देना ही सब से **बड़ी नेकी** है।"[3]

1.....**ह़ुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى इस के तह़्त फ़रमाते हैं : "येह एक वाज़ेह़ मिसाल है क्यूंकि दुन्या आख़िरत तक पहुंचाने वाला एक रास्ता है। पिंघोड़ा वोह पहला निशान है जो पुल के शुरूअ़ में होता है और क़ब्र इस का आख़िरी निशान है और इन दोनों के दरमियान मह़दूद मसाफ़त है। बा'ज़ लोग निस्फ़ पुल त़ै करते हैं कुछ लोग इस का तिहाई ह़िस्सा त़ै करते हैं और बा'ज़ लोग इस का दो तिहाई त़ै करते हैं और कुछ लोगों के लिये एक क़दम की मसाफ़त बाक़ी रह गई लेकिन वोह इस बात से ग़ाफ़िल नहीं और क्या ह़ालत होगी ह़ालांकि उ़बूर करना ज़रूरी है और जब तुम ने पुल को उ़बूर करना है तो फिर इस पर मकान बनाना और इसे ज़ीनत देना इन्तिहाई दरजे की जहालत और रुस्वाई है।" (احیاء علوم الدین، ج۳، ص۲٦٦)

2.....احیاء علوم الدین، کتاب ذم الدنیا، بیان صفة الدنیا بالامثلة، ج۳، ص۲٦٦.

3.....احیاء علوم الدین، بیان ذم الدنیا، ج۳، ص۲۵۵.

www.dawateislami.net

आग और पानी :

﴾3﴿.....आप عَلَيْهِ السَّلَام फ़रमाते हैं : "जैसे आग और पानी एक बरतन में जम्अ़ नहीं हो सकते ऐसे ही किसी मोमिन के दिल में दुन्या व आख़िरत की महब्बत जम्अ़ नहीं हो सकती ।"(1)

एक सच्चा वा'दा :

﴾4﴿.....आप عَلَيْهِ السَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : "दुन्या मौजूदा सामान है जिस से नेको बद सब खाते हैं और आख़िरत सच्चा वा'दा है जिस में क़ुदरत वाला बादशाह फ़ैसला फ़रमाएगा (सच को सच और झूट को झूट कर दिखाएगा) ।"

दुन्या को आक़ा न बनाओ :

﴾5﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : "दुन्या को आक़ा न बनाओ वरना येह तुम्हें अपना ग़ुलाम बना लेगी । अपना ख़ज़ाना उस के पास जम्अ़ कराओ जो इसे ज़ाएअ़ न करे क्यूंकि जिस के पास दुन्या का ख़ज़ाना हो उसे आफ़त का ख़ौफ़ होता है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ख़ज़ाने वाले को आफ़त का डर नहीं होता ।"(2)

मुझ से बढ़ कर कोई मालदार नहीं :

﴾6﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام इरशाद फ़रमाया करते थे कि "मेरा सालन भूक, मेरा शिआ़र ख़ौफ़,, मेरा लिबास ऊन, सर्दियों में मेरी अंगेठी सूरज की धूप, मेरा चराग़ चांद है, मेरी सुवारी मेरे पाउं हैं, मेरा खाना और फल वोह है जिसे ज़मीन

---

1 .....احیاء علوم الدین،بیان ذم الدنیا،ج۳،ص۲۵۲.

2 .....احیاء علوم الدین،بیان ذم الدنیا،ج۳،ص۲۵۰.

www.dawateislami.net

उगाती है। मैं रात सोता हूं तो पास कुछ नहीं होता, सुब्ह़ उठता हूं तो भी पास कुछ नहीं होता और रूए ज़मीन पर मुझ से बढ़ कर कोई मालदार भी नहीं।"(1)

तअ़ज्जुब है उस शख़्स पर :

﴾7﴿......ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : "तअ़ज्जुब है उस शख़्स पर जो मौत से ग़ाफ़िल है जब कि मौत उस से ग़ाफ़िल नहीं। तअ़ज्जुब है दुन्या के उस उम्मीदवार पर मौत जिस की तलाश में है और तअ़ज्जुब है उस मकान बनाने वाले पर जिस का मस्कन क़ब्र है।"(2)

ख़शिय्यते इलाही और जन्नत की मह़ब्बत :

﴾8﴿......आप عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام फ़रमाते हैं : "बेशक ख़शिय्यते इलाही और जन्नत की मह़ब्बत बन्दे को दुन्या की रंगीनियों से दूर कर के उस में मशक़्क़त पर सब्र करने का ह़ौसला पैदा करते हैं और बेशक जव खाना और कूड़े के ढेर पर कुत्तों के साथ सो जाना भी जन्नत की त़लब में कम है।"(3)

दुन्या को मुंह के बल गिरा दिया :

﴾9﴿......ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام अपने ह़वारियों (या'नी सह़ाबा) से फ़रमाया करते थे : "ऐ ह़वारियो ! मैं ने

---

(1) ....احیاء علوم الدین،باب بیان المواعظ......الخ،ج۳،ص۲۶۲.

(2) ....فتوح الشام،ذکرفتوح قلعةرأس العین،الجزء الثانی،ص۱۳۹،دون قوله ولبانی الخ.

(3) ....حلیة الاولیاء،الرقم۲۰۰مالك بن دینار،الحدیث:۲۸۰۳ـ۲۸۰۴،ج۲،ص۴۱۸ـ۴۱۹.

www.dawateislami.net

तुम्हारे लिये दुन्या को मुंह के बल गिरा दिया है, लिहाज़ा मेरे बा'द इसे न उठाना।"(1)

पानी पर चलने की वज्ह :

﴾10﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के ह़वारियों ने आप عَلَیْہِ السَّلَام से अ़र्ज़ की, कि "आप عَلَیْہِ السَّلَام किस त़रह़ पानी पर चल लेते हैं ह़ालांकि हम तो नहीं चल पाते ?" इरशाद फ़रमाया : "तुम्हारे नज़दीक दिरहमो दीनार का क्या मक़ाम है ?" ह़वारियों ने अ़र्ज़ की : "अच्छा और बहुत बुलन्द।" आप عَلَیْہِ السَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : "लेकिन मेरे नज़दीक तो येह पथ्थर और मिट्टी के ढेले की त़रह़ हैं।"(2)

इब्लीस को पथ्थर मारा :

﴾11﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام एक पथ्थर से टेक लगाए बैठे थे कि इब्लीस आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के पास आया और कहा : "ऐ ईसा ! तुम भी दुन्या की त़रफ़ माइल हो गए।" आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने पथ्थर उठा कर उसे मारा और फ़रमाया : "मेरे पास दुन्या में से सिर्फ़ येही है।"(3)

हज़ार ह़ूरों से निकाह़ :

﴾12﴿.....एक दिन शदीद बारिश, गरज और बिजली के मोसिम में आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने एक ख़ैमे में दाख़िल होने का इरादा

1 .....احیاء علوم الدین، کتاب ذم الدنیا، بیان ذم الدنیا، ج۳، ص ۲۵۰.

2 .....احیاء علوم الدین، کتاب ذم البخل...الخ، بیان ذم المال...الخ، ج۳، ص۲۸۷.

3 .....احیاء علوم الدین، کتاب الفقر والزهد، بیان درجات الزهد...الخ، ج٤، ص۲۸۲، مفهومًا.

www.dawateislami.net

फ़रमाया लेकिन उस में एक औ़रत थी जिस की वज्ह से दाख़िल न हुवे । फिर एक ग़ार की त़रफ़ आए तो उस में कुछ दरिन्दे पनाह लिये हुवे थे येह देख कर बारगाहे ख़ुदावन्दी में अ़र्ज़ की : "ऐ मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ ! तू ने सब के लिये ठिकाना बनाया लेकिन मेरे लिये कोई ठिकाना नहीं बनाया ।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप عَلَيْهِ السَّلَام की त़रफ़ वह्य फ़रमाई कि "तेरा ठिकाना मेरी रह़मत के साए में है । मैं एक हज़ार बड़ी आंखों वाली हूरों से तेरा निकाह़ फ़रमाऊंगा और अह्ले जन्नत को एक हज़ार साल तक तेरे वलीमे की दा'वत खिलाऊंगा ।"[1]

सारी दुन्या भी किफ़ायत न करे :

﴿13﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ आदमी ! अगर तू ब क़दरे ज़रूरत त़लब करे तो थोड़ी दुन्या तुझे किफ़ायत करेगी और अगर ज़रूरत से ज़ाइद जम्अ़ करना चाहे तो फिर सारी दुन्या भी तुझे किफ़ायत नहीं करेगी । इस लिये तुम त़लबे दुन्या की वज्ह से ख़ुद को हलाक न करो और जो कुछ दुन्या में है उसे छोड़ कर इस पर ग़ालिब आ जाओ । तुम दुन्या में बरहना आए थे और बरहना ही जाओगे । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से एक एक दिन का रिज़्क़ मांगा करो और याद रखो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने दुन्या को क़लील पैदा फ़रमाया है और अब जो इस का ह़िस्सा रह गया है वोह बहुत ही कम है । इस का साफ़ पानी पिया जा चुका है और गदला बाक़ी है ।"

---

1 .....احیاء علوم الدین، کتاب ذم الدنیا، بیان ذم الدنیا، ج۳، ص۲۵۳.

www.dawateislami.net

तंगी और धोके का घर :

﴾14﴿......हज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : "जान लो ! येह दुन्या तंगी और धोके का घर है। इस में उस शख़्स की त़रह़ रहो जो अपने ज़ख़्म का इलाज करता और दवा की सख़्ती बरदाश्त करता है क्यूंकि उसे मरज़ से शिफ़ा व आ़फ़िय्यत की उम्मीद है। दुन्या का सामने होना और आख़िरत का ग़ाइब होना तुम्हें धोके में न डाले।"

अ़मल ही काम आएगा :

﴾15﴿......हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : "तअ़ज्जुब है तुम दुन्या के लिये कोशिश करते हो ह़ालांकि दुन्या में बिग़ैर कोशिश के भी रिज़्क़ मिल जाता है और आख़िरत के लिये अ़मल नहीं करते जहां बिग़ैर अ़मल के तुम्हें कुछ नहीं मिलेगा।"(1)

दुन्या के शोहर :

﴾16﴿......एक मरतबा दुन्या औ़रत की शक्ल में हज़रते सय्यिदुना ईसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के सामने ज़ाहिर हुई जो हर त़रह़ की ज़ेबो ज़ीनत से आरास्ता थी। आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उस से पूछा : "क्या तेरा कोई शोहर है ?" उस ने कहा : "मेरे बहुत शोहर हैं।" फिर पूछा : "क्या उन सब ने तुझे त़लाक़ दे दी है या वोह मर गए हैं या तूने उन्हें हलाक कर डाला है ?" कहा : "मैं ने सब को हलाक कर डाला।" इरशाद फ़रमाया : "क्या तुझे उन में से किसी का ग़म नहीं है ?" बोली : "वोह मेरी वज्ह से ग़म करते थे, मुझे उन का कोई ग़म नहीं है। वोह मुझ पर रोते थे मैं उन पर नहीं रोती।" हज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : "तेरे बाक़ी शोहरों पर तअ़ज्जुब है कि वोह तेरे गुज़रे हुवे शोहरों से इ़ब्रत ह़ासिल नहीं करते।"

1 ...شعب الایمان للبیهقی،باب فی نشر العلم،الحدیث:۱۹۱۷،ج۲،ص۳۱٤.

www.dawateislami.net

दुन्या से किनारा कशी अफ़्ज़ल इबादत है :

《17》......ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام कुछ लोगों के पास से गुज़रे जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत कर रहे थे, जब कि एक शख़्स सो रहा था। आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उस से फ़रमाया : "ऐ शख़्स ! उठ और अपने दोस्तों के साथ मिल कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत कर।" उस ने अ़र्ज़ की : "मैं इन से अफ़्ज़ल इबादत, दुन्या से किनारा कशी कर चुका हूं।" इरशाद फ़रमाया : "बहुत ख़ूब ! सो जा ! तू इन इबादत करने वालों पर फ़ौक़िय्यत ले गया है ! ! !"[1]

औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का मुख़्तसर तआ़रुफ़ :

《18》......किसी शख़्स ने ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के औलिया के बारे में पूछा, जिन पर न कुछ ख़ौफ़ है और न कुछ ग़म। तो आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : "येह वोह लोग हैं जिन्हों ने दुन्या के बात़िन की त़रफ़ निगाह की। जब दूसरे लोगों ने इस का ज़ाहिर देखा और दुन्या के अन्जाम को मद्दे नज़र रखा जब दूसरे लोग उस की रंगीनियों में खो गए। उन्हें जिस चीज़ से हलाकत का ख़ौफ़ हुवा उसे मात दी और जिस चीज़ के बारे में मह़सूस हुवा कि वोह उन्हें छोड़ देगी उन्हों ने ख़ुद ही उसे छोड़ दिया। दुन्या की जो चीज़ भी उन के सामने आई उसे ठुकरा दिया। दुन्या की रिफ़अ़त से धोका नहीं खाया बल्कि उसे अपनी नज़रों से गिरा

---

1 .....الجامع لاحکام القرآن للقرطبی،پ۱۲،سورۂ ھود،تحت الآیۃ:۷،ج۵،ص۸.

www.dawateislami.net

दिया। दुन्या उन के लिये पुरानी हो गई तो उन्हों ने उसे नया नहीं किया। वीरान हो गई तो आबाद नहीं किया। उन के सीनों में मर गई तो ज़िन्दा नहीं किया बल्कि दुन्या की इमारत ढा कर उस के इ़वज़ अपनी आख़िरत बनाते हैं। उसे फ़रोख़्त कर के उस के बदले वोह ख़रीदते हैं जो उन के लिये बाक़ी रहे और उन्हों ने दुन्यादारों को गिरा पड़ा देखा कि उन पर कई ज़माने गुज़र गए, पस जिस शै की वोह उम्मीद रखते हैं इस के इ़लावा की आरज़ू नहीं करते और जिन चीज़ों से वोह परहेज़ करते हैं इन के सिवा कोई और ख़ौफ़ नहीं रखते।"[1]

❁❁❁❁❁❁❁

इख़्तितामी कलिमात

इन्हीं कलिमात पर "رِسَالَةُ الْمُذَاكَرَةِ مَعَ الْاِخْوَانِ وَالْمُحِبِّيْنَ مِنْ اَهْلِ الْخَيْرِ وَالدِّيْن" मुकम्मल हुवा और मैं ने इस का येह नाम इस लिये रखा है कि येह मुसलमान भाइयों और अहले मह़ब्बत के साथ मुज़ाकरा (या'नी बात चीत) के त़रीक़े पर तरतीब दिया गया है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे और तमाम मुसलमानों को हिदायत पर साबित क़दमी अ़त़ा फ़रमाए और हमें हमारे नफ़्स के शर से बचाए। (आमीन)

मैं ने इस रिसाले में जो अह़ादीस और अक़्वाल बयान किये हैं वोह मो'तबर और मो'तमद कुतुब से लिये हैं और इख़्तिसार के पेशे नज़र ख़ातिमे की इब्तिदा में अह़ादीस के दरमियान फ़र्क़ बयान नहीं किया बल्कि उन्हें इस अन्दाज़ से बयान किया है कि वोह 4 या 5 अह़ादीस मा'लूम होती हैं ह़ालांकि वोह तक़रीबन 20 अह़ादीस हैं।

---

1 ....الموسوعة لابن ابی الدنیا، کتاب الاولیاء، الحدیث:۱۸، ج۲، ص۳۹۱.

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ وَلَهُ الْحَمْدُ فِی الْاٰخِرَةِؕ وَهُوَ الْحَكِیْمُ الْخَبِیْرُ ۝۱ یَعْلَمُ مَا یَلِجُ فِی الْاَرْضِ وَ مَا یَخْرُجُ مِنْهَا وَ مَا یَنْزِلُ مِنَ السَّمَآءِ وَ مَا یَعْرُجُ فِیْهَاؕ وَهُوَ الرَّحِیْمُ الْغَفُوْرُ ۝۲

(پ۲۲، سبا: ۱، ۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : सब ख़ूबियां *अल्लाह* को कि उसी का माल है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में और आख़िरत में उसी की ता'रीफ़ है और वोही है हिक्मत वाला ख़बरदार। जानता है जो कुछ ज़मीन में जाता है और जो ज़मीन से निकलता है और जो आस्मान से उतरता है और जो उस में चढ़ता है और वोही है मेहरबान बख़्शिश वाला।

وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلَّمَ اِلٰى يَوْمِ الْبَعْثِ وَالنُّشُوْرِ، وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ

इस रिसाले की इम्ला से बरोज़ हफ़्ता नमाज़े ज़ोहर से कुछ देर क़ब्ल यकुम जुमादिल ऊला 1069 **हिजरी** को फ़राग़त हुई। وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

❁❁❁❁❁❁❁

﴿.....ता'रीफ़ और सआ़दत.....﴾

हज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर बैज़ावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی *(मुतवफ़्फ़ा 685 हि.) इरशाद फ़रमाते हैं कि : "जो शख़्स* **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ *और उस के रसूल* صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم *की फ़रमां बरदारी करता है दुन्या में उस की ता'रीफ़ें होती हैं और आख़िरत में सआ़दत मन्दी से सरफ़राज़ होगा।"* (تفسیر البیضاوی، پ۲۲، الاحزاب، تحت الآیۃ: ۷۱، ج۴، ص۳۸۸)

www.dawateislami.net

مآخذ و مراجع

کتاب	مصنف/مؤلف	مطبوعہ
قرآن مجید	کلام باری تعالٰی	مکتبۃ المدینۃ ۱۴۳۰ھ
ترجمۂ قرآن کنزالایمان	اعلیٰحضرت امام احمد رضا خان رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینۃ ۱۴۳۰ھ
التفسیرالکبیر	امام فخر الدین ابوعبداللّٰہ محمدبن عمر رازی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۶۰۶ھ	دار احیاء التراث ۱۴۲۰ھ
تفسیرقرطبی	امام محمد بن احمد قرطبی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۶۷۱ھ	دارالفکر بیروت ۱۴۲۰ھ
تفسیر کشاف	امام جاراللّٰہ محمودبن عمرزمخشری متوفّٰی ۵۳۸ھ	مکتبۃ الاعلام الاسلامی ۱۴۱۴ھ
تفسیر روح البیان	امام اسماعیل حقی بروسوی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۱۱۳۷ھ	کوئٹہ پاکستان
تفسیرالدرالمنثور	امام جلال الدین سیوطی شافعی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۹۱۱ھ	دارالفکربیروت ۱۴۰۳ھ
تفسیر ابن کثیر	امام الحافظ عمادالدین ابن کثیر متوفّٰی ۷۷۴ھ	دارالکتب العلمیہ ۱۴۱۹ھ
تفسیر مظہری (مترجم)	علامہ قاضی محمد ثناء اللّٰہ پانی پتی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۱۲۲۵ھ	ضیاء القرآن ۱۳۲۳ھ
تفسیرخزائن العرفان	صدرالافاضل مفتی نعیم الدین مرادآبادی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینۃ ۱۴۳۰ھ
تفسیرنور العرفان	مولانامفتی احمد یارخان نعیمی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۱۳۹۱ھ	پیر بھائی کمپنی
صحیح البخاری	امام محمد بن اسماعیل بخاری رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۲۵۶ھ	دار السلام ریاض ۱۴۲۱ھ
صحیح مسلم	امام مسلم بن حجاج نیشاپوری رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۲۶۱ھ	دار السلام ریاض ۱۴۲۱ھ
جامع الترمذی	امام محمد بن عیسٰی ترمذی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۲۷۹ھ	دار السلام ریاض ۱۴۲۱ھ
سنن أبي داود	امام ابوداؤدسلیمان بن اشعث سجستانی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفی ۲۷۵ھ	دار السلام ریاض ۱۴۲۱ھ
سنن النسائی	امام احمد بن شعیب نسائی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۳۰۳ھ	دار السلام ریاض ۱۴۲۱ھ
سنن ابن ماجہ	امام محمد بن یزید قزوینی ابن ماجہ رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۲۷۳ھ	دار السلام ریاض ۱۴۲۱ھ
المسند	امام احمد بن حنبل رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۲۴۱ھ	دارالفکربیروت ۱۴۱۴ھ
الزھد	امام احمد بن حنبل رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۲۴۱ھ	دار الغد الجدید ۱۴۲۶ھ
المعجم الکبیر	حافظ سلیمان بن احمد طبرانی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۳۶۰ھ	دار احیاء التراث ۱۴۲۲ھ
المعجم الاوسط	حافظ سلیمان بن احمد طبرانی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۳۶۰ھ	دارا لکتب العلمیۃ ۱۴۲۰ھ
موسوعۃ لابن ابی الدنیا	حافظ ابی بکرعبداللّٰہ بن محمدابن ابی دنیا رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۲۸۱ھ	دارالکتب العلمیہ ۱۴۲۳ھ
حلیۃ الاولیاء	امام حافظ ابو نعیم اصفہانی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۴۳۰ھ	دارالکتب العلمیہ ۱۴۱۸ھ
الجامع الصغیر	امام جلال الدین سیوطی شافعی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۹۱۱ھ	دارالکتب العلمیہ ۱۴۲۵ھ
جامع بیان العلم وفضلہ	امام حافظ ابن عبدالبرقرطبی متوفّٰی ۴۶۳ھ	دارالکتب العلمیہ ۱۴۲۸ھ
نزھۃ المجالس	عبد الرحمن بن عبد السلام صفوری متوفّٰی ۸۹۴ھ	دارالکتب العلمیہ ۱۴۱۹ھ
الزھدالکبیرللبیہقی	امام ابوبکر احمد بن حسین بیہقی، متوفّٰی ۴۵۸ھ	موسوعۃ الکتب الثقافیۃ ۱۴۱۷ھ
شعب الایمان للبیہقی	امام ابوبکر احمد بن حسین بیہقی، متوفّٰی ۴۵۸ھ	دارالکتب العلمیہ ۱۴۲۱ھ
المستدرک	امام محمد بن عبد اللّٰہ حاکم رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۴۰۵ھ	دارالمعرفۃ ۱۴۱۸ھ
بدایۃ الھدایۃ	امام محمد بن احمدغزالی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۵۰۵ھ	الشاملہ
احیاء علوم الدین	امام محمد بن احمدغزالی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۵۰۵ھ	دار صادربیروت 2000ء

www.dawateislami.net

منہاج العابدین	امام محمد بن احمدغزالی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۵۰۵ھ	دارالکتب العلمیۃ
المقصد الاسنی	امام محمد بن احمدغزالی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۵۰۵ھ	الشاملہ
اتحاف السادۃ المتقین	علامۃ مرتضیٰ زبیدی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۱۲۰۵ھ	دارالکتب العلمیۃ
مشکوۃ المصابیح	علامہ ولی الدین تبریزی، متوفی ۷۴۲ھ	دارالفکربیروت ۱۴۲۱ھ
مرقاۃ المفاتیح	علامہ ملا علی قاری رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۱۰۱۴ھ	دارالفکربیروت ۱۴۱۴ھ
قوت القلوب	ابو طالب محمدبن علی حارثی مکی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۸۶ھ	مرکز اہلسنت برکات رضا ۱۴۲۳ھ
الفتوحات المکیہ	شیخ محی الدین ابن عربی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۶۳۸ھ	دار الفکربیروت ۱۴۱۴ھ
المستطرف	شہاب الدین محمد بن ابی احمد رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۸۵۰ھ	دار الفکربیروت ۱۴۱۹ھ
شرح دیوان المتنبی	أبو الحسن علی بن أحمد بن محمدواحدی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۴۶۸ھ	الشاملہ
تاریخ الخلفاء	امام جلال الدین سیوطی شافعی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۹۱۱ھ	باب المدینہ کراچی
فتوح الشام	ابو عبداللہ محمد بن عمرو واقدی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۰۷ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱۴۲۶ھ
فردوس الاخبار بماثور الخطاب	أبو شجاع شیرویہ بن شہردار بن شیرویہ دیلمی ہمذانی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۵۰۹ھ	الشاملہ
المدخل للعبدری	أبو عبد اللہ محمد بن محمد بن محمد عبدری متوفّٰی ۷۳۷ھ	دارالکتب العلمیہ ۱۴۱۵ھ
النصیحۃ الکافیہ	ابو العباس شہاب الدین بزروق متوفّٰی ۸۹۹ھ	الشاملہ
الترغیب و الترہیب	امام زکی الدین منذری رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۶۵۶ھ	دار الفکربیروت ۱۴۱۷ھ
شرح السنہ	امام أبو محمدحسین بن مسعودبغوی،متوفی ۵۱۶ھ	دارالکتب العلمیہ ۱۴۲۴ھ
ایقاظ الہمم شرح متن الحکم	ابوالعباس احمد بن محمد بن مہدی بن عجیبۃ حسنی متوفّٰی ۱۲۲۴ھ	الشاملہ
الرسالۃ القشیریۃ	امام ابو القاسم عبدالکریم ہوازن قشیری رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۴۶۵ھ	دارالکتب العلمیہ ۱۴۱۸ھ
بریقۃ محمودیۃ فی شرح طریقۃ محمدیہ	ابو سعید محمد بن محمد خادمی متوفّٰی ۱۱۷۶ھ	الشاملہ
تاریخ دمشق	امام ابن عساکر رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۵۷۱ھ	دارالفکربیروت ۱۴۱۵ھ
ادب الدنیاوالدین	ابوالحسن ماوردی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۴۵۰ھ	الشاملہ
صفۃ الصفوۃ	امام ابو الفرج ابن جوزی رحمۃ اللّٰہ علیہ متوفّٰی ۵۹۷ھ	دارالکتب العلمیہ ۱۴۲۳ھ
الزواجرعن اقتراف الکبائر	شہاب الدین أحمد بن محمد ابن حجرہیتمی متوفّٰی ۹۷۴ھ	دارالفکربیروت ۱۴۱۹ھ
کنزالعمال	علامہ علی متقی بن حسام الدین ہندی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۹۷۵ھ	دارالکتب العلمیہ ۱۴۱۹ھ
بہارشریعت	صدرالشریعہ مفتی امجد علی اعظمی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۱۳۷۶ھ	مکتبۃ المدینہ
نزہۃ القاری	فقیہ اعظم ہند مفتی محمد شریف الحق امجدی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۱۴۲۱ھ	فرید بک سٹال ۱۴۲۱ھ
مرآۃ المناجیح	مولانامفتی احمد یارخان نعیمی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۱۳۹۱ھ	ضیاء القرآن
غیبت کی تباہ کاریاں	امیر اہلِسنت حضرت علّامہ مولانا محمد الیاس عطّار قادری مد ظلہ العالی	مکتبۃ المدینۃ ۱۴۳۰ھ
کفریہ کلمات کے بارے میں سوال جواب	امیر اہلِسنت حضرت علّامہ مولانا محمد الیاس عطّار قادری مد ظلہ العالی	مکتبۃ المدینۃ ۱۴۳۰ھ

www.dawateislami.net

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या की त़रफ़ से पेश कर्दा कुतुबो रसाइल शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत उर्दू कुतुब

01....राहे ख़ुदा में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल (زَادُ الْقَحْطِ وَالْوَبَاءِ بِدَعْوَةِ الْجِيْرَانِ وَمُوَاسَاةِ الْفُقَرَاءِ) (कुल सफ़ह़ात : 40)

02....करन्सी नोट के शरई अह़कामात (كِفْلُ الْفَقِيْهِ الْفَاهِمِ فِيْ اَحْكَامِ قِرْطَاسِ الدَّرَاهِمِ) (कुल सफ़ह़ात : 199)

03....फ़ज़ाइले दुआ़ (اَحْسَنُ الْوِعَاءِ لِآدَابِ الدُّعَاءِ مَعَهٗ ذَيْلُ الْمُدَّعَاءِ لِاَحْسَنِ الْوِعَاءِ) (कुल सफ़ह़ात : 326)

04....ईदैन में गले मिलना कैसा ? (وِشَاحُ الْجِيْدِفِيْ تَحْلِيْلِ مُعَانَقَةِ الْعِيْدِ) (कुल सफ़ह़ात : 55)

05....वालिदैन, ज़ौजैन और असातिज़ा के हुक़ूक़ (اَلْحُقُوق لِطَرْحِ الْعُقُوْق) (कुल सफ़ह़ात : 125)

06....अल मल्फ़ूज़ अल मा'रूफ़ ब मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत (मुकम्मल चार ह़िस्से) (कुल सफ़ह़ात : 561)

07....शरीअ़त व त़रीक़त (مَقَالُ الْعُرَفَاءِ بِاِغْرَازِ شَرْعٍ وَّعُلَمَاء) (कुल सफ़ह़ात : 57)

08....विलायत का आसान रास्ता (तसव्वुरे शैख़) (اَلْيَاقُوْتَةُ الْوَاسِطَة) (कुल सफ़ह़ात : 60)

09....मआ़शी तरक़्क़ी का राज़ (ह़ाशिया व तशरीह़ तदबीरे फ़लाह़ व नजात व इस्लाह़) (कुल सफ़ह़ात : 41)

10....आ'ला ह़ज़रत से सुवाल जवाब (اِظْهَارُ الْحَقِّ الْجَلِي) (कुल सफ़ह़ात : 100)

11....हुक़ूक़ुल इ़बाद कैसे मुआ़फ़ हों (اَعْجَبُ الْاِمْدَاد) (कुल सफ़ह़ात : 47)

12....सुबूते हिलाल के त़रीक़े (طُرُقُ اِثْبَاتِ هِلَال) (कुल सफ़ह़ात : 63)

13....अवलाद के हुक़ूक़ (مَشْعَلَةُ الْاِرْشَاد) (कुल सफ़ह़ात : 31)

14....ईमान की पहचान (ह़ाशिया तम्हीदुल ईमान) (कुल सफ़ह़ात : 74)

15....अल वज़ीफ़तुल करीमा (कुल सफ़ह़ात : 46)

16....कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान (कुल सफ़ह़ात : 1185)

17....ह़दाइक़े बख़्शिश (कुल सफ़ह़ात : 446)

18....बयाज़े पाक हुज्जतुल इस्लाम (कुल सफ़ह़ात : 37)

19....तफ़्सीरे सिरातुल जिनान (जिल्द अव्वल) (कुल सफ़ह़ात : 524)

20....तफ़्सीरे सिरातुल जिनान (जिल्द दुवुम) (कुल सफ़ह़ात : 495)

अ़रबी कुतुब

21.....جَدُّ الْمُمْتَارعَلٰى رَدِّالْمُحْتَار (सात जिल्दें) (कुल सफ़ह़ात : 4000)

22.... اَلتَّعْلِيْقُ الرَّضَوِى عَلٰى صَحِيْحِ الْبُخَارِى (कुल सफ़ह़ात : 458)

23.... كِفْلُ الْفَقِيْهِ الْفَاهِم (कुल सफ़ह़ात : 74)

24..... اَلْاِجَازَاتُ الْمَتِيْنَة (कुल सफ़ह़ात : 62)

www.dawateislami.net

25.... اَلزَّمْزَمَةُ الْقَمَرِيَّة (कुल सफ़ह़ात : 93)

26..... اَلْفَضْلُ الْمَوْهَبِي (कुल सफ़ह़ात : 46)

27..... تَمْهِيْدُ الْاِيْمَان (कुल सफ़ह़ात : 77)

28..... اَجْلَى الْاِعْلَام (कुल सफ़ह़ात : 70)

29..... اِقَامَةُ الْقِيَامَة (कुल सफ़ह़ात : 60)

शो'बए तराजिमे कुतुब ﴾अ़रबी से उर्दू तराजुम﴿

01.....अल्लाह वालों की बातें (حِلْيَةُ الْاَوْلِيَاء وَطَبَقَاتُ الْاَصْفِيَاء) पहली जिल्द (कुल सफ़ह़ात : 896)

02.....अल्लाह वालों की बातें (حِلْيَةُ الْاَوْلِيَاء وَطَبَقَاتُ الْاَصْفِيَاء) दूसरी जिल्द (कुल सफ़ह़ात : 625)

03.....मदनी आक़ा के रोशन फ़ैसले (اَلْبَاهِر فِی حُكْمِ النَّبِیِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم بِالْبَاطِنِ وَالظَّاه) (कुल सफ़ह़ात : 112)

04.....सायए अ़र्श किस किस को मिलेगा....? (تَمْهِيْدُ الْفَرْش فِی الْخِصَالِ الْمُوْجِبَةِ لِظِلِّ الْعَرْش) (कुल सफ़ह़ात : 28)

05.....नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं (قُرَّةُ الْعُيُوْن وَمُفَرِّحُ الْقَلْبِ الْمَحْزُوْن) (कुल सफ़ह़ात : 142)

06.....नसीह़तों के मदनी फूल ब वसीलए अह़ादीसे रसूल (اَلْمَوَاعِظ فِی الْاَحَادِيْثِ الْقُدْسِيَّة) (कुल सफ़ह़ात : 54)

07.....जन्नत में ले जाने वाले आ'माल (اَلْمَتْجَرُ الرَّابِح فِی ثَوَابِ الْعَمَلِ الصَّالِح) (कुल सफ़ह़ात : 743)

08.....इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم की वसिय्यतें (وَصَايَا اِمَام اَعْظَم عَلَيْهِ الرَّحْمَة) (कुल सफ़ह़ात : 46)

09.....जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल (जिल्द अव्वल) (اَلزَّوَاجِر عَنْ اِقْتِرَافِ الْكَبَائِر) (कुल सफ़ह़ात : 853)

10....नेकी की दा'वत के फ़ज़ाइल (اَلْاَمْرُ بِالْمَعْرُوْف وَالنَّهْیُ عَنِ الْمُنْكَر) (कुल सफ़ह़ात : 98)

11.....फ़ैज़ाने मज़ाराते औलिया (كَشْفُ النُّوْر عَنْ اَصْحَابِ الْقُبُوْر) (कुल सफ़ह़ात : 144)

12.....दुन्या से बे रग़बती और उम्मीदों की कमी (اَلزُّهْد وَقَصْرُ الْاَمَل) (कुल सफ़ह़ात : 85)

13.....राहे इ़ल्म (تَعْلِيْمُ الْمُتَعَلِّم طَرِيْقَ التَّعَلُّم) (कुल सफ़ह़ात : 102)

14....ह़िकायतें और नसीह़तें (اَلرَّوْضُ الْفَائِق) (कुल सफ़ह़ात : 649)

15.....इह़याउल उ़लूम का ख़ुलासा (لُبَابُ الْاِحْيَاء) (कुल सफ़ह़ात : 641)

16....अच्छे बुरे अ़मल (رِسَالَةُ الْمُذَاكَرَة) (कुल सफ़ह़ात : 122)

17....शुक्र के फ़ज़ाइल (اَلشُّكْرُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ) (कुल सफ़ह़ात : 122)

18....ह़ुस्ने अख़्लाक़ (مَكَارِمُ الْاَخْلَاق) (कुल सफ़ह़ात : 102)

19....आंसूओं का दरया (بَحْرُ الدُّمُوْع) (कुल सफ़ह़ात : 300)

20....आदाबे दीन (اَلْاَدَبُ فِی الدِّيْن) (कुल सफ़ह़ात : 63)

21....शाहराए औलिया (مِنْهَاجُ الْعَارِفِيْن) (कुल सफ़ह़ात : 36)

22....बेटे को नसीह़त (اَيُّهَا الْوَلَد) (कुल सफ़ह़ात : 64)

www.dawateislami.net

23.....इस्लाहे आ'माल जिल्द अव्वल (اَلْحَدِيْقَةُ النَّدِيَّة شَرْحُ طَرِيْقَةِ الْمُحَمَّدِيَّة) (कुल सफ़हात : 866)

24.....जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल (जिल्द दुवुम) (اَلزَّوَاجِرُ عَنْ اِقْتِرَافِ الْكَبَائِر) (कुल सफ़हात : 1012)

25....आ़शिक़ाने ह़दीस की ह़िकायात (اَلرِّحْلَة فِي طَلَبِ الْحَدِيْث) (कुल सफ़हात : 105)

26....इह़याउल उ़लूम जिल्द (अव्वल) (احياء علوم الدين) (कुल सफ़हात : 1124)

27....इह़याउल उ़लूम जिल्द (दुवुम) (احياء علوم الدين) (कुल सफ़हात : 1400)

28....इह़याउल उ़लूम जिल्द (सिवुम) (احياء علوم الدين) (कुल सफ़हात : 1286)

28....इह़याउल उ़लूम जिल्द (चहारुम) (احياء علوم الدين) (कुल सफ़हात : 912)

28....इह़याउल उ़लूम जिल्द (पंजुम) (احياء علوم الدين) (कुल सफ़हात : 818)

29.....उ़यूनुल ह़िकायात (मुतर्जम ह़िस्सए अव्वल) (कुल सफ़हात : 412)

30.....उ़यूनुल ह़िकायात (मुतर्जम, ह़िस्सए दुवुम) (कुल सफ़हात : 413)

31....اَلدَّعْوَة اِلَى الْفِكْر (कुल सफ़हात : 148)

32..... क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू) (कुल सफ़हात : 826)

शो'बए दर्सी क़ुतुब

01....مراح الارواح مع حاشية ضياء الاصباح (कुल सफ़हात : 241)

02....الاربعين النووية فى الأحاديث النبوية (कुल सफ़हात : 155)

03....اتقان الفراسة شرح ديوان الحماسه (कुल सफ़हात : 325)

04....اصول الشاشى مع احسن الحواشى (कुल सफ़हात : 299)

05....نورالايضاح مع حاشية النورو الضياء (कुल सफ़हात : 392)

06....شرح العقائد مع حاشية جمع الفرائد (कुल सफ़हात : 384)

07....الفرح الكامل على شرح مئة عامل (कुल सफ़हात : 158)

08....عناية النحو فى شرح هداية النحو (कुल सफ़हात : 280)

09....صرف بهائى مع حاشية صرف بنائى (कुल सफ़हात : 55)

10....دروس البلاغة مع شموس البراعة (कुल सफ़हात : 241)

11....مقدمة الشيخ مع التحفة المرضية (कुल सफ़हात : 119)

12....نزهة النظر شرح نخبة الفكر (कुल सफ़हात : 175)

13....نحو مير مع حاشية نحو منير (कुल सफ़हात : 203)

14....تلخيص اصول الشاشى (कुल सफ़हात : 144)

www.dawateislami.net

15....نصاب النحو (कुल सफ़हात : 288)
16....نصاب اصولِ حدیث (कुल सफ़हात : 95)
17....نصاب التجوید (कुल सफ़हात : 79)
18....المحادثة العربية (कुल सफ़हात : 101)
19....تعریفاتِ نحویة (कुल सफ़हात : 45)
20....خاصیات ابواب (कुल सफ़हात : 141)
21....شرح مئة عامل (कुल सफ़हात : 44)
22....نصاب الصرف (कुल सफ़हात : 343)
23....نصاب المنطق (कुल सफ़हात : 168)
24....انوار الحدیث (कुल सफ़हात : 466)
25....نصاب الادب (कुल सफ़हात : 184)
26....ख़ुलफ़ाए राशिदीन (कुल सफ़हात : 341)
27....قصیده برده مع شرح خرپوتی (कुल सफ़हात : 317)
28.... کافیه مع شرح ناجیه (कुल सफ़हात : 252)
29....अल हक़्क़ुल मुबीन (कुल सफ़हात : 128)
30....تفسیر الجلالین مع حاشیةانوار الحرمین (कुल सफ़हात : 364)
31.... فیض الادب (कुल सफ़हात : 228)
32.... منتخب الابواب من احیاء علوم الدین (अ़रबी) (कुल सफ़हात : 173)

शो'बए तख़रीज

01....सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن का इ़श्क़े रसूल (कुल सफ़हात : 274)
02....बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल (ह़िस्सा : 1 ता 6) (कुल सफ़हात : 1360)
03....बहारे शरीअ़त, जिल्द दुवुम (ह़िस्सा : 7 ता 13) (कुल सफ़हात : 1304)
04....बहारे शरीअ़त जिल्द सिवुम (ह़िस्सा : 14 ता 20) (कुल सफ़हात : 1332)
05....बहारे शरीअ़त जिल्द (सोलहवां ह़िस्सा) (कुल सफ़हात : 312)
06....उम्महातुल मोअमिनीन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ (कुल सफ़हात : 59)
07....अ़जाइबुल क़ुरआन मअ़ ग़राइबुल क़ुरआन (कुल सफ़हात : 422)
08....जन्नत के त़लबगारों के लिये मदनी गुलदस्ता (कुल सफ़हात : 470)
09....फ़ैज़ाने यासीन शरीफ़ मअ़ दुआए निस्फ़ शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म (कुल सफ़हात : 20)

www.dawateislami.net

10....अच्छे माहोल की बरकतें (कुल सफ़हात : 56)
11....गुलदस्तए अ़क़ाइदो आ'माल (कुल सफ़हात : 244)
12....तह़क़ीक़ात (कुल सफ़हात : 142)
13....जन्नती ज़ेवर (कुल सफ़हात : 679)
14....इल्मुल क़ुरआन (कुल सफ़हात : 244)
15....सवानह़े करबला (कुल सफ़हात : 192)
16....अरबईने ह़नफ़िय्या (कुल सफ़हात : 112)
17....किताबुल अ़क़ाइद (कुल सफ़हात : 64)
18....मुन्तख़ब ह़दीसें (कुल सफ़हात : 246)
19....इस्लामी ज़िन्दगी (कुल सफ़हात : 170)
20....आईनए क़ियामत (कुल सफ़हात : 108)
21 ता 27....फ़तावा अह्ले सुन्नत (सात ह़िस्से)
28.... ह़क़ व बात़िल का फ़र्क़ (कुल सफ़हात : 50)
29....बिहिश्त की कुन्जियां (कुल सफ़हात : 249)
30....जहन्नम के ख़त़रात (कुल सफ़हात : 207)
31....करामाते सह़ाबा (कुल सफ़हात : 346)
32....अख़्लाक़ुस्सालिह़ीन (कुल सफ़हात : 78)
33....सीरते मुस्त़फ़ा (कुल सफ़हात : 875)
34....आईनए इ़ब्रत (कुल सफ़हात : 133)
35....फ़ैज़ाने नमाज़ (कुल सफ़हात : 49)
36....19 दुरूदो सलाम (कुल सफ़हात : 16)

﴾शो'बए फ़ैज़ाने सह़ाबा﴿

01....ह़ज़रते त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (कुल सफ़हात : 56)
02....ह़ज़रते ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (कुल सफ़हात : 72)
03....ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (कुल सफ़हात : 89)
04....ह़ज़रते अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (कुल सफ़हात : 60)
05....ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (कुल सफ़हात : 132)
06....फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (कुल सफ़हात : 720)

www.dawateislami.net

07....फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जिल्द अव्वल (कुल सफ़ह़ात : 864)

08....फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जिल्द दुवुम (कुल सफ़ह़ात : 855)

﴾शो'बए फ़ै ज़ाने सह़ाबिय्यात﴿

01....शाने ख़ातूने जन्नत (कुल सफ़ह़ात : 501)

02....फ़ैज़ाने आ़इशा सिद्दीक़ा (कुल सफ़ह़ात : 608)

﴾शो'बए इस्लाही कुतुब﴿

01....ग़ौसे पाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ह़ालात (कुल सफ़ह़ात : 106)

02....तकब्बुर (कुल सफ़ह़ात : 97)

03....फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم (कुल सफ़ह़ात : 87)

04....बद गुमानी (कुल सफ़ह़ात : 57)

05....क़ब्र में आने वाला दोस्त (कुल सफ़ह़ात : 115)

06....नूर का खिलोना (कुल सफ़ह़ात : 32)

07....आ'ला ह़ज़रत की इनफ़िरादी कोशिश (कुल सफ़ह़ात : 49)

08.... फ़िक्रे मदीना (कुल सफ़ह़ात : 164)

09....इम्तिह़ान की तय्यारी कैसे करें ? (कुल सफ़ह़ात : 32)

10....रियाकारी (कुल सफ़ह़ात : 170)

11....क़ौमे जिन्नात और अमीरे अह्ले सुन्नत (कुल सफ़ह़ात : 262)

12....उ़श्र के अह़काम (कुल सफ़ह़ात : 48)

13....तौबा की रिवायात व ह़िकायात (कुल सफ़ह़ात : 124)

14....फ़ैज़ाने ज़कात (कुल सफ़ह़ात : 150)

15....अह़ादीसे मुबारका के अन्वार (कुल सफ़ह़ात : 66)

16....तर्बिय्यते अवलाद (कुल सफ़ह़ात : 187)

17....कामयाब त़ालिबे इ़ल्म कौन ? (कुल सफ़ह़ात : 63)

18....टी वी और मूवी (कुल सफ़ह़ात : 32)

19....त़लाक़ के आसान मसाइल (कुल सफ़ह़ात : 30)

20....मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी (कुल सफ़ह़ात : 96)

21....फ़ैज़ाने चहल अह़ादीस (कुल सफ़ह़ात : 120)

22....शर्हे शजरए क़ादिरिय्या (कुल सफ़ह़ात : 215)

www.dawateislami.net

23....नमाज़ में लुक़्मा देने के मसाइल (कुल सफ़ह़ात : 39)
24....ख़ौफ़े ख़ुदा (कुल सफ़ह़ात : 160)
25....तआ़रुफ़े अमीरे अह्ले सुन्नत (कुल सफ़ह़ात : 100)
26....इनफ़िरादी कोशिश(कुल सफ़ह़ात : 200)
27....आयाते क़ुरआनी के अन्वार (कुल सफ़ह़ात : 62)
28....नेक बनने और बनाने के त़रीक़े (कुल सफ़ह़ात : 696)
29....फ़ैज़ाने इह़याउल उ़लूम (कुल सफ़ह़ात : 325)
30....ज़ियाए सदक़ात (कुल सफ़ह़ात : 408)
31....जन्नत की दो चाबियां (कुल सफ़ह़ात : 152)
32....कामयाब उस्ताज़ कौन ? (कुल सफ़ह़ात : 43)
33....तंगदस्ती के अस्बाब (कुल सफ़ह़ात : 33)
34....ह़ज व उ़मरह का मुख़्तसर त़रीक़ा (कुल सफ़ह़ात : 48)
35....जल्दबाज़ी के नुक़्सानात (कुल सफ़ह़ात : 168)
36....क़सीदा बुर्दा से रूह़ानी इ़लाज (कुल सफ़ह़ात : 22)
37....तज़किरए सदरुल अफ़ाज़िल (कुल सफ़ह़ात : 25)
38....सुन्नतें और आदाब (कुल सफ़ह़ात : 125)
39....बुग़्ज़ो कीना (कुल सफ़ह़ात : 83)
40....मज़ाराते औलिया की ह़िकायात (कुल सफ़ह़ात : 48)
41....फैज़ाने इस्लाम कोर्स ह़िस्सए अव्वल (कुल सफ़ह़ात : 79)
42....फैज़ाने इस्लाम कोर्स ह़िस्सए दुवुम (कुल सफ़ह़ात : 102)
43....महबूबे अ़त्तार की 122 ह़िकायात (कुल सफ़ह़ात : 208)
44....बद शुगूनी (कुल सफ़ह़ात : 128)
45....फैज़ाने दाता गंज बख़्श (कुल सफ़ह़ात : 20)
46....फैज़ाने पीर महर अ़ली शाह (कुल सफ़ह़ात : 33)
47....ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ की 425 ह़िकायात (कुल सफ़ह़ात : 590)
48....इस्लाम की बुन्यादी बातें ह़िस्सा. 1 (साबेक़ा नाम : मदनी निसाब बराए मदनी क़ाइदा) (कुल सफ़ह़ात : 60)
49....इस्लाम की बुन्यादी बातें ह़िस्सा. 2 (साबेक़ा नाम : मदनी निसाब बराए नाज़िरा) (कुल सफ़ह़ात : 104)
50....इस्लाम की बुन्यादी बातें ह़िस्सा. 3 (कुल सफ़ह़ात : 352)

www.dawateislami.net

याद दाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी ।

उ़नवान	सफ़ह़ा	उ़नवान	सफ़ह़ा

www.dawateislami.net

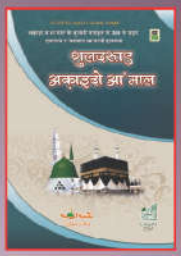

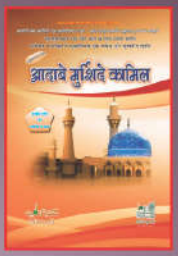

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माह़ोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आ़शिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की ह़िफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये **"म-दनी इन्आ़मात"** पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये **"म-दनी क़ाफ़िलों"** में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मक्तबतुल मदीना की शाख़ें

देहली : उर्दू मार्केट, मटया महल, जामेअ़ मस्जिद, देहली-6 फ़ोन (011) 23284560

मुम्बई : 19, 20, मुह़म्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621

अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़लाहे दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385

ह़ैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, ह़ैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786

मक्तबतुल मदीना

सिलेक्टेड हाऊस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा,
अह़मदाबाद-1 , गुजरात, अल हिन्द MO. 9374031409

مکتبۃ المدینہ (دعوتِ اسلامی)

Web : www.dawateislami.net / E-mail:maktabaahmedabad@gmail.com